फोनः-4103333, 2362400 फैक्सः-0141-2373513 वर्षः 75 संख्याः 157 प्रभात जयपुर, मंगलवार 7 जनवरी, 2025 डाक पं.सं. जयपुर सिटी/001/2021-23 पृष्ठ 8 मूल्य 2.75 रु.

जयपुर • कोटा • बीकानेर • उदयपुर • अजमेर • जालोर • हिण्डौनसिटी • चूरू

राष्ट्रदूत

Metro

Rashtradoot

epaper.rashtradoot.com

ARBiT

SWAMIJI, SCIENTISTS AND PERFORMING ARTISTES

Vivekananda requested Tata to establish a science research institute. Maharaja of Mysore, Krishna Raja Deva Wodeyar, pitched in with a grant of land and donation. In 1909, Indian Institute of Science was established.

Use social media to propel your career forward

एलन मस्क अब केवल अमेरिका के आंतरिक मामलों के ''विशेषज्ञ'' ही नहीं रहे

वे अब अन्य देशों, उदाहरण के लिये इंगलैण्ड व जर्मनी, के राष्ट्राध्यक्षों की भी ''क्लास'' लेने लगे हैं

-अंजन रॉय-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 6 जनवरी। अमेरिकी राष्ट्रपति चुनाव के बाद एलन मस्क अमेरिका में न केवल ''एक्स्ट्रा कॉन्स्टिट्यूश्नल पावर,'' परा संवैधानिक शक्ति केन्द्र के रुप में उभर रहे हैं, बल्कि एक कूटनीतिक ''क्रशिंग बॉल'' भी बन रहे हैं। (क्रशिंग बॉल वह उपकरण है जो इमारतों को तोड़ने के काम आता है)।

हाल ही में इन्होंने ब्रिटिश सरकार को निशाना बनाया। उन्होंने ब्रिटिश प्रधानमंत्री और ब्रिटिश सरकार की कड़ी आलोचना की, जो एक तरह से ब्रिटेन और अमेरिका की एतिहासिक दोस्ती पर भारी प्रहार था।

इससे पहले एलन मस्क ने जर्मनी की सरकार और चांसलर ओलाफ शोल्त्ज़ की आलोचना की थी, क्योंकि वे अपराधियों पर कार्यवाही करने में असफल रहे हैं। मस्क ने जर्मनी की दक्षिणपंथी पार्टी ए.एफ.डी. को शोलत्ज़ सरकार का बेहतर विकल्प बताया था। जर्मनी में जल्दी ही नए चुनाव होने वाले हैं और नई सरकार बनने की संभावना है।

- मजे की बात है, ट्रम्प के अमेरिका के राष्ट्रपति का चुनाव जीतने के बाद, इन सार्वभौम देशों के प्र.मंत्री/चाँसलर आदि भी ट्रम्प को ''खुश'' रखने की दृष्टि से मस्क की इन तीखी टिप्पणियों को अपने देश के आंतरिक मामलों में दखलदांजी नहीं मान रहे, बल्कि, मस्क की टिप्पणियों का झूठा-सच्चा, विनय पूर्वक जवाब देने में लगे हैं।
- मस्क ने ब्रिटेन के वर्तमान प्र.मंत्री पर आरोप लगाया कि वर्षों ही नहीं, दशकों तक इंगलैण्ड में बच्चियों का बलात्कार व शोषण हो रहा था, कुछ पाकिस्तानी गिरोहों द्वारा, पर, ब्रिटेन की सरकार चुपचाप देखती रही, इन कृत्यों को ज्यादा प्रचारित करने व सख्त दण्डनीय कार्यवाही करने से कतराती रही, क्योंकि उसे डर था कि सख्ती करने से उन पर ''रेसिस्ट'' का ठप्पा लग सकता है, और वह अपने पर ''इस्लामी फोबिया'' होने की तोहमत भी नहीं लगवाना चाहती थी।

मस्क ने ब्रिटिश सरकार के आचरण व संस्थागत विफलताओं की इतनी कड़ी आलोचना की, कि प्रधानमंत्री सर कीर स्टारमर को अपने बचाव के लिए आगे आना पड़ा, पर मस्क का खुलासा इतना जबर्दस्त है कि इसका गंभीर परिणाम होगा।

मस्क ने ब्रिटिश प्रधानमंत्री को ''घटिया'' करार दिया और कहा कि जिसने भी बच्चों के यौन उत्पीड़न और दुष्कर्म के मामलों की नए सिरे से जांच की मांग की, उसे स्टारमर ने कट्टर दक्षिणपंथी करार दिया।

मस्क ने मौजूदा प्रधानमंत्री की ब्रिटिश सरकार के डायरैक्टर ऑफ पब्लिक प्रॉसिक्यूशन की भूमिका की भी कड़ी आलोचना की तथा उनके करीबी लोगों पर भी निशाना साधा।

मस्क का आरोप था कि सरकार और ब्रिटिश अधिकारियों के पूरे एक समूह ने पाकिस्तानी ''ग्रूमिंग गैंग्स'' द्वारा छोटी लड़कियों के यौन शोषण व दुष्कर्म के खिलाफ पीड़िताओं व उनके माता-पिता की अपीलों की अनदेखी की, क्योंकि उन्हें डर था कि उन पर रंगभेद व इस्लाम से डरने वाले का ठप्पा लग सकता है।

मस्क ने ऐसे समय में ब्रिटिश सरकार पर निशाना साधा है, जब समूची ब्रिटिश सरकार अमेरिका के नए राष्ट्रपति से अच्छे रिश्ते बनाने में जुटी है। ट्रम्प ने हाल ही में यूरोप के कई देशों की सरकारों व नेताओं की आलोचना की है, क्योंकि

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

डूंगरपुर में 2 माह के बच्चे में चीनी वायरस मिला

डूंगरपुर, 6 जनवरी (निसं)। चीन में फैले कोरोना जैसे वायरस एचएमपीवी की डूंगरपुर में दो महीने के बच्चे में पुष्टि हुई है। बच्चा 12 दिन से अहमदाबाद के एक अस्पताल में भर्ती है। बच्चा अभी स्वस्थ बताया जा रहा है। बच्चे को सर्दी और तेज बुखार था। परिवार के लोग बच्चे को गुजरात के मोडासा लेकर गए, जहां बच्चे को आराम नहीं मिलने पर, उसे अहमदाबाद के ऑरेंज हॉस्पिटल लेकर पहुंचे।

- अहमदाबाद के अस्पताल में 12 दिन से भर्ती बच्चा अब स्वस्थ बताया जा रहा है।
- अस्पताल के डॉक्टर के अनुसार, शुरु में 5 दिन बच्चे को वेंटिलेटर पर रखा गया था। इसके बाद की जाँचों में वायरस से संक्रमित होने की बात सामने आयी थी।

हॉस्पिटल के डॉ. नीरव पटेल ने बताया कि शुरुआत में उसे पांच दिनों तक वेंटिलेटर पर भी रखा गया था। इसके बाद हुई कई जांचों में बच्चे के वायरस से संक्रमित होने की बात सामने आई। प्रीमैच्योर डिलीवरी की वजह से बच्चे के फेफड़ों में इंजेक्शन भी लगाया

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

'कांग्रेस दिल्ली में जीती तो महिलाओं को हर माह 2500 रूपए देगी'

कांग्रेस ने दिल्ली में ''प्यारी दीदी'' योजना की घोषणा करते हुए वादा किया

-डॉ. सतीश मिश्रा-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 6 जनवरी। कांग्रेस ने आज ''प्यारी दीदी योजना'' की घोषणा की, जिसके तहत, पार्टी ने वचन दिया है कि दिल्ली विधानसभा चुनावों के बाद सत्ता में आने पर प्रत्येक महिला को 2,500 रूपए प्रति माह दिये जायेंगे।

इस योजना की घोषणा पार्टी की दिल्ली इकाई के कार्यालय में कर्नाटक के उपमुख्यमंत्री डी.के. शिवकुमार ने कांग्रेस के दिल्ली प्रभारी काजी निजामुद्दीन तथा पार्टी की दिल्ली इकाई के अध्यक्ष देवेन्द्र यादव के साथ मिलकर की।

मीडिया को संबोधित करते हुये, शिवकुमार जो कर्नाटक कांग्रेस के अध्यक्ष भी हैं, ने कहा, ''हम प्यारी दीदी योजना'' लाँच कर रहे हैं। मुझे विश्वास है कि दिल्ली में कांग्रेस सरकार आयेगी। हम मंत्रिमंडल की पहली मीटिंग वाले दिन इस योजना को लागू कर देंगे।''

उन्होंने कहा कि ''प्यारी दीदी योजना'' के तहत, कर्नाटक मॉडल के अनुरुप, दिल्ली की प्रत्येक महिला को 2,500 रूपए प्रति माह दिये जायेंगे।

- कर्नाटक के उपमुख्यमंत्री डी.के. शिवकुमार, कांग्रेस के दिल्ली प्रभारी काज़ी निज़ामुद्दीन और पार्टी की दिल्ली इकाई के अध्यक्ष देवेन्द्र यादव ने पार्टी कार्यालय में इस योजना की घोषणा की।
- डी.के. शिवकुमार ने इस दौरान पत्रकारों से वार्ता कर बताया कि कर्नाटक में कांग्रेस ने सरकार बनने के तीन माह बाद ही सभी गारंटियां लागू कर दी थीं और उन्हें यकीन है कि दिल्ली में भी कांग्रेस सरकार बनी तो यह योजना लागू होगी।
- दिल्ली प्रभारी काज़ी निज़ामुद्दीन ने कहा कि दिल्ली के लिए यह कांग्रेस की पहली गारंटी है।
- दिल्ली के प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष देवेन्द्र यादव ने कहा कि पार्टी ने कर्नाटक, हिमाचल और तेलंगाना, सभी जगह वादे निभाएं हैं। पार्टी समाज के हर वर्ग के उत्थान के लिए संकल्पबद्ध है।

शिवकुमार ने कहा कि कर्नाटक विधानसभा चुनावों से पहले कांग्रेस ने जिन गारंटियों का वादा किया था, राज्य में सत्ता में आने के तीन महीनों के अंदर, वे सभी गारंटियों को क्रियान्वित कर दिया गया था।

कर्नाटक में कांग्रेस के नेतृत्व वाली सरकार के कार्यों का जिक्र करते हुये, उन्होंने कहा, ''महिलाएं पूरे राज्य में बसों में फ्री यात्रा कर रही हैं, बेरोज़गार युवाओं को 3,000 रूपए दिये जा रहे

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

दिल्ली में भाजपा की मदद के लिए संघ ने 100 स्वयंसेवक उतारे

बताया जाता है कि संघ ने महाराष्ट्र व हरियाणा में भी यही नीति अपनाई थी जिससे भाजपा हारी हुई बाजी जीत गई

-जाल खंबाता-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 6 जनवरी। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने दिल्ली के आसन्न विधानसभा चुनावों से पूर्व जनसम्पर्क अभियान शुरु कर दिया है ताकि उसकी भारतीय जनता पार्टी के प्रचार को बल मिल सके।

विस्तृत जानकारी रखने वाले लोगों का कहना है कि आर.एस.एस. का यह सम्पर्क अभियान महाराष्ट्र और हरियाणा में किये गये उसके प्रयासों की ओर भी इंगित कर रहा है, जहाँ दोनों राज्यों में भाजपा के विरूद्ध सत्ता-विरोधी माहौल और प्रशासनिक कमियों को लेकर प्रतिकूल जमीनी स्थिति को मात देकर सत्ता हासिल कर ली थी।

हरियाणा में भाजपा ने अपने लगातार तीसरे कार्यकाल के लिये 90 में से 48 सीटें जीती थीं तथा महाराष्ट्र में भाजपा, शिव सेना (शिंदे गुट) तथा एन.सी.पी. (अजित पवार) से मिल कर बने महायुति गठबंधन ने 288 में से 228 सीटों पर विजय प्राप्त की थी।

- जानकार सूत्रों ने बताया कि गत कुछ सप्ताह से वरिष्ठ संघ नेताओं और भाजपा नेताओं के बीच मीटिंग हो रही है, जिसमें चुनाव की सैंट्रल थीम सैट की गई है।
- सूत्रों ने बताया कि संघ दिल्ली में बाँग्लादेशियों व रोहिंग्या की घुसपैठ से चिंतित है, इसलिए वह दिल्ली में भाजपा को सत्ता में लाना चाहता है।
- संघ के ये 100 स्वयंसेवक अगले कुछ सप्ताहों में समाज के विभिन्न वर्गों के साथ मेल-मुलाकात करेंगे और भाजपा के पक्ष में माहौल बनाएंगे।
- इसी नीति की बदौलत भाजपा ने हरियाणा व महाराष्ट्र में ''एन्टी इन्कम्बैंसी'' लहर को उलट कर हरियाणा में 90 में से 48 और महाराष्ट्र में 288 में से 228 सीटें जीती थीं।

पार्टी नेताओं ने इन दोनों राज्यों में भाजपा की जीत का श्रेय आर.एस.एस. के प्रचार-अभियान को ही दिया था, जिसने पार्टी के पक्ष में माहौल बनाने में मदद की थी।

दिल्ली में, आर.एस.एस. के करीब 100 स्वयंसेवक अगले सप्ताहों में सोशल ग्रुपों तथा प्रोफेशनल्स के साथ

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

अजमेर दरगाह में आज पेश होगी मुख्यमंत्री की चादर

जयपुर, 6 जनवरी। मुख्यमंत्री भजन लाल शर्मा की ओर से अजमेर ख्वाजा साहब के उर्स के मुबारक मौके पर मंगलवार को चादर पेश की जाएगी। भाजपा अल्पसंख्यक मोर्चा प्रदेश अध्यक्ष हमीद खान मेवाती मजार शरीफ पर मुख्यमंत्री की ओर से दी गई चादर पेश करेंगे। हमीद खान मेवाती मंगलवार दोपहर 12 बजे जयपुर भाजपा प्रदेश कार्यालय से रवाना होकर 3 बजे अजमेर पहुंचेगे। चादर पेश करने के बाद, वे बुलंद दरवाजे से मुख्यमंत्री भजन लाल शर्मा का संदेश पढ़ेंगे।

- भाजपा अल्पसंख्यक मोर्चा अध्यक्ष हमीद खान मेवाती दिन में 12 बजे प्रदेश कार्यालय से चादर लेकर रवाना होंगे।

रोहिणी (दिल्ली) की आमसभा में मोदी जी का ''टैलिप्रॉम्पटर'' फेल हुआ

''टैलिप्रॉम्पटर'' की सेवाएं अवरूद्ध होने के कारण मोदी जी के ''स्पीच लैस'' हो जाने, पर, सोशल मीडिया में एक बाढ़ सी आ गई, व्यंग और उपहासपूर्ण टिप्पणियों की

-डॉ. सतीश मिश्रा-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 6 जनवरी। रविवार को दिल्ली के रोहिणी इलाके में एक रैली के दौरान ''टैलिप्रॉम्पटर'' की गड़बड़ी ने कथित रूप से प्रधानमंत्री को चुप करा दिया। जनवरी 2022 में वर्ल्ड इकॉनॉमिक फोरम समिट के दौरान भी उन्हें ऐसी ही स्थिति का सामना करना पड़ा था।

रविवार की घटना को लेकर सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म्स पर प्रधानमंत्री को लक्ष्य करते हुए उपहास और तानों की झड़ी लग गई।

एक सोशल मीडिया यूज़र ने फोटो पोस्ट की और लिखा, ''नेहरू जी ने टैलिप्रॉम्पटर की बिजली काट दी।'' ज्ञातव्य है कि भाजपा भारत की हर समस्या के लिए पंडित नेहरू को जिम्मेदार ठहराती रही है।

इतने सालों तक भाजपा अपने राजनीतिक प्रतिद्वंदियों का मज़ाक बनाने के लिए बड़ी सफलता से सोशल मीडिया का इस्तेमाल करती आई है।

- ऐसी ही दुर्घटना जनवरी 2022 में वर्ल्ड इकोनॉमिक फोरम को ''वर्चुअली'' संबोधित करते हुए भी हुई थी।
- पर, उस दुर्घटना पर मीडिया का ज्यादा ''फोकस'' नहीं हुआ था। पर, इस बार एक आमसभा को संबोधित करते हुए यह हादसा हुआ, तो सरकार विरोधी सोशल मीडिया एक्टिविस्ट को मौका मिल गया। मोदी कार्यशैली, वाक्चातुर्य आदि पर तंज कसने का और इस मौके का भरपूर उपयोग हुआ।

सोशल मीडिया विश्लेषक राधिका सचान का कहना है कि इस मामले में पार्टी के सबसे बड़े नेता को उन्हीं की भाषा में जवाब दिया जा रहा है।

एक अन्य सोशल मीडिया यूज़र ने पोस्ट किया, ''टैलिप्रॉम्पटर उनके झूठ के आगे फेल हो गया। वो भी जनता को झूठ नहीं बताना चाहता था।''

एक और यूज़र ने अपनी पोस्ट में कहा, ''बेचारे प्रधानमंत्री, टैलिप्रॉम्पटर ने बीच में ही काम करना बंद कर दिया। उसके बिना वो एक शब्द भी नहीं बोल सकते। लोग सोचते हैं, मोदी सबको कंट्रोल करते हैं, जबकि वो खुद टैलिप्रॉम्पटर ऑपरेटर और भाषण लिखने वाले के कंट्रोल में हैं।''

एक और प्रतिक्रिया आई, ''इलाज में फिर कमी? जब टैलिप्रॉम्पटर फेल होता है तो संघ परिवार के ''महानतम वक्ता'' भी फेल हो जाते हैं।''

एक व्यक्ति ने कहा, ''महानतम वक्ता टैलिप्रॉम्पटर के बिना लड़खड़ा जाते हैं और उसे ''कवर अप'' करने के लिए कैमरा दर्शकों की तरफ घूम जाता हे। क्या यह केवल बुढ़ापा है, या फिर स्क्रिप्ट भी गायब हो गई है?''

एक और यूज़र ने कहा, ''मोदी टैलिप्रॉम्पटर प्रोमैक्स। फेलियर परमानैंट (स्थाई) है, सफलता टैम्परेरी (क्षणिक) है। वे टैलिप्रॉम्पटर के बिना एक शब्द भी नहीं बोल सकते।''

दूसरे ने लिखा, ''आपको पता नहीं, बोलना क्या है? टैलिप्रॉम्पटर एरर!''

आप नेता अरविंद केजरीवाल को दोषी बताते हुए एक यूज़र ने कहा, ''टैलिप्रॉम्पटर फेल हो गया। लगता है केजरीवाल ने तार काट दिया।''

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

उच्चाधिकार समिति व किसानों की वार्ता पर सुप्रीम कोर्ट ने उम्मीद जताई

नयी दिल्ली, 06 जनवरी। उच्चतम न्यायालय ने एक महीने से अधिक समय से अनशन पर बैठे किसान नेता जगजीत सिंह डल्लेवाल को मेडिकल सहायता देने के मामले में पंजाब सरकार की विफलता पर दायर अवमानना याचिका पर सुनवाई सोमवार से दस जनवरी तक के लिए टाल दी क्योंकि सुप्रीम कोर्ट द्वारा गठित उच्चाधिकार समिति के सदस्यों ने डल्लेवाल एवं अन्य किसान नेताओं से वार्ता की है।

- कोर्ट ने 10 जनवरी को सुनवाई से पहले वार्ता के परिणाम बताने को कहा।

न्यायमूर्ति सूर्य कांत और एन के सिंह की पीठ ने पंजाब सरकार की ओर से पेश वरिष्ठ अधिवक्ता कपिल सिब्बल

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

द्रमुक सरकार को एक के बाद एक भावनात्मक मुद्दे थमा रहे हैं राज्यपाल आर.एन. रवि

इन मुद्दों से द्रमुक सरकार असली मुद्दों से जनता का ध्यान भटकाने में कामयाब हो रही है

-लक्ष्मण वैंकट कुची-
-राष्ट्रदूत दिल्ली ब्यूरो-

नई दिल्ली, 6 जनवरी। गैर भाजपा शासित राज्यों में राज्यपाल राज्य सरकारों को हद से ज्यादा परेशान कर चुके हैं, पर अगर तमिलनाडु की बात करें तो राज्यपाल आर.एन. रवि द्रमुक और राज्य सरकार को खुद इतना मसाला दे रहे हैं कि वह आसानी से उनका सामना कर रही है। वे द्रमुक को ऐसे -ऐसे भावनात्मक मुद्दे थमा रहे हैं कि उनका इस्तेमाल कर द्रमुक ना केवल असली मुद्दों से लोगों का ध्यान हटा रही है, बल्कि अपना केन्द्र सरकार विरोधी कथानक भी जनता के सामने पेश कर रही है। राजनैतिक पर्यवेक्षक हैरान हैं कि क्या वे ''सैल्फ गोल'' कर रहे हैं।

नवीनतम मामला सोमवार को हुआ, जब राज्यपाल ने राष्ट्रीय गीत और संविधान के कथित अनादर के मुद्दे पर सदन से वॉकआउट कर दिया। असल में राज्य विधानसभा में राष्ट्रीय गीत से पहले ''स्टेट एंथम'' (राज्य गीत) बजाया गया तो वे शीतकालीन सत्र को संबोधित करने की परम्परा निभाए बिना ही सदन से वॉक आउट कर गए और राष्ट्र गीत तथा संविधान का अपमान करने का आरोप लगाया।

- सोमवार को राज्यपाल आर.एन. रवि ने राज्य विधानसभा में ''स्टेट एंथम'' बजाने पर विरोध जताया और राष्ट्रगीत व संविधान के अपमान का आरोप लगा कर अभिभाषण दिए बिना ही सदन से वॉकआउट कर गए।
- द्रमुक सरकार ने राज्यपाल की इस हरकत को उनके तमिलनाडू विरोध की संज्ञा दी और तमिल संस्कृति का मुद्दा उठाया।
- पर, इस विवाद में अन्ना युनिवर्सिटी में हुआ ''दुष्कर्म'' कांड उपेक्षित रह गया। जब इस मुद्दे पर सदन में सत्ता पक्ष और विपक्ष नारेबाजी कर रहा था तभी राज्यपाल ने राष्ट्र गीत का मुद्दा उठा कर दुष्कर्म कांड पर बहस की संभावनाएं खत्म कर दीं।
- अब राष्ट्र गीत बनाम राज्य गीत के सम्मान पर विवाद छिड़ गया है। द्रमुक कोई कसर नहीं छोड़ रही है, असली मुद्दों को दरकिनार कर रही है।

राज्य में यही परम्परा है कि विधानसभा में पहले राज्य गीत बजता है, फिर राष्ट्र गीत। ऐसा लगता है कि राज्यपाल बार-बार ऐसी ही हरकतें करने पर आमादा हैं। अभी वे राज्य गीत के कारण विधानसभा से वॉक आउट कर गए तो पहले मुख्यमंत्री के किसी बयान पर या सरकार द्वारा तैयार भाषण से कुछ भाग हटाने पर।

राज्यपाल की इस हरकत पर मुख्यमंत्री एम.के. स्टालिन और उनकी पार्टी ने राज्यपाल की तमिलनाडु -विरोधी भावनाओं को मुद्दा बनाया और कहा कि राज्यपाल यहां भाजपा व केन्द्र सरकार के पक्षकार बनकर खड़े हैं।

राज्यपाल के पारम्परिक संबोधन के बिना ही सदन से चले जाने के बाद, राजभवन ने सोशल मीडिया एक्स पर लिखा कि मुख्यमंत्री स्टालिन और विधानसभा स्पीकर एम. अपावू ने बार-बार कहने के बाद भी बात नहीं सुनी। राज्यपाल

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

भारतीय संविधान का ऑन लाइन पाठ्यक्रम

नयी दिल्ली, 06 जनवरी। केन्द्रीय विधि एवं न्याय मंत्रालय ने वर्ष 2024 में ही भारतीय संविधान पर ऑनलाइन हिंदी पाठ्यक्रम शुरू किया। मंत्रालय के अनुसार, 26 नवंबर 2024 को विधिक मामलों के विभाग ने संविधान दिवस और भारत के संविधान को अंगीकार किए जाने की 75वीं वर्षगांठ मनाई। संविधान दिवस पर विधि एवं न्याय मंत्रालय के विधिक मामलों के विभाग ने देश की सर्वोच्च नैक रैंकिंग वाले राष्ट्रीय

- विधि एवं न्याय मंत्रालय के विधिक मामलों के विभाग ने नालसार युनिवर्सिटी ऑफ लॉ हैदराबाद के साथ मिलकर हिन्दी में यह पाठ्यक्रम शुरु किया है।

(शेष अंतिम पृष्ठ पर)

विचार बिन्दु

चरित्र वृक्ष है और प्रतिष्ठा उसकी छाया। –अब्राहम लिंकन

ऐसा हो 2025 का भारत

2024 बीत गया है और हम ने 2025 में प्रवेश कर लिया है। वर्ष 2024 में भारत ने लोकसभा और कुछ विधानसभाओं के चुनाव देखे, जिनमें अनेक बार भाषा की मर्यादाएं तार-तार हुईं और राजनीति का स्तर निम्न से निम्नतर होता गया। सत्ता पक्ष और विपक्ष, दोनों की ओर से संविधान की रक्षा की बात की गई और दोनों ने इसकी भावना के विपरीत काम किया।

इस संदर्भ में 2025 के भारत की कल्पना हम करें, तो मेरे मन में जिस प्रकार की तस्वीर उभरती है, उसका उल्लेख इस लेख में किया गया है।

सबसे पहली कामना तो यही है कि सार्वजनिक जीवन में शुचिता और मर्यादा पुनर्स्थापित हो। अयोध्या में क्योंकि मर्यादा पुरुषोत्तम राम का भव्य मंदिर बन चुका है, अतः राजनीतिज्ञ मर्यादित व्यवहार करें। संसद में नियमित उच्च कोटि की बहस हो। विचारों की असहमति व्यक्त करने हेतु कड़े शब्दों का प्रयोग हो, किंतु उनमें ओछापन न हो। आम जन के मुद्दों जैसे–बेरोजगारी, महंगाई सुरक्षा, शिक्षा, स्वास्थ्य आदि पर ही सर्वाधिक चर्चा हो। जन और प्रतिनिधि के बीच में दूरी कम हो और उनका सारा काम केवल जन हित में ही हो। कानून ऐसे हों जो देशवासियों को अपनी असीमित क्षमता का प्रदर्शन करने का पूर्ण अवसर प्रदान करें। राजनीतिज्ञ, दूसरे दलों के नेताओं के प्रति सम्मान रखें और मर्यादा पूर्ण भाषा का प्रयोग करें। धर्म को राजनीति का हथियार न बनाएं, ऐसी कामना इस वर्ष के लिए की जा सकती है। ऐसा करने में योगदान किसी एक दल का नहीं, अपितु सभी राजनीतिक दलों का हो।

2025 में देश में असमानता कम हो। गत कुछ वर्षों में गरीब और अमीर की खाई बहुत बढ़ी है और संपत्ति का केंद्रीकरण कुछ लोगों के हाथ में हुआ है। यह वर्ष ऐसा हो, जिसमें वंचित वर्ग के लोगों को भी अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन करने का और अपनी क्षमता के अनुसार आगे बढ़ने का पर्याप्त अवसर प्राप्त हो। प्रतिभा किसी विशेष वर्ग की बपौती नहीं है एवं समाज के प्रत्येक वर्ग और प्रत्येक स्तर में प्रतिभा भरपूर छिपी हुई है। इस वर्ष में उनकी प्रतिभा को निखरने का पूरा अवसर मिले। यह अपेक्षा है कि गुणवत्ता पूर्ण पढ़ाई के अवसरों में समानता हो। निर्धनतम परिवार का बच्चा भी अच्छी गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्राप्त करने का अधिकारी हो। जब शिक्षा का अवसर समान होगा, तब अपनी प्रतिभा के अनुसार आगे बढ़ने का स्वतः ही अवसर प्राप्त हो जाएगा। इस वर्ष में सरकार, शिक्षा की पूरी जिम्मेदारी स्वयं अपने ऊपर ले। इसके लिए धन के अभाव का बहाना न बनाया जाए। कम से कम, स्कूली शिक्षा तक तो ऐसा हो ही। शिक्षा संस्थान, व्यवसाय के साधन बन कर न रह जाएं अपितु बच्चों के भविष्य का निर्माण करने का माध्यम बनें। सरकार, संविधान में उल्लेखित कर्तव्य को निभाते हुए सभी बालक-बालिकाओं को एक समान उच्च स्तर की शिक्षा प्राप्त करने के अवसर प्रदान करे।

कार्यपालिका से यह अपेक्षा है कि वह ईमानदारी, कर्तव्य निष्ठा और संवेदनशीलता के साथ कानून का राज स्थापित करे। वे संविधान एवं आमजन के प्रति अपनी प्रतिबद्धता को दर्शाते हुए काम करें ताकि वे लोगों की दुआएं ले सकें। सरकार के पास धन की कोई कमी नहीं होती है। कार्यपालिका में काम करने वाले सभी लोग, स्वयं को उस धन का ट्रस्टी समझते हुए, उसका अधिकाधिक लाभ सर्वाधिक वंचित वर्ग तक पहुंचाने का काम करें, यह आशा हम 2025 में कर सकते हैं। सरकारी कार्यालय में नागरिकों को बार-बार चक्कर न लगाने पड़ें। सारे नियम और प्रक्रियाएं बहुत सहज, सरल, स्पष्ट भाषा में उपलब्ध हों। कार्यपालिका का एक ही ध्येय हो "आमजन के साथ अच्छा व्यवहार तथा उसका तत्पर काम"।

देश में स्वार्थ का भाव समाप्त हो। सभी नागरिक एक दूसरे के साथ सहयोगी की तरह, कंधे से कंधा मिलाकर देश को आगे बढ़ाने के काम में जुट जाएं। नागरिकों को भी इस नव वर्ष में संकल्प लेना होगा कि वह बिना सोचे-समझे सोशल मीडिया पर ऐसा कोई संदेश आगे नहीं भेजेंगे जिससे समाज में परस्पर कटुता, हिंसा और नफरत का वातावरण उत्पन्न होता हो। अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता पूर्ण रूप से हो, किंतु यह संयम सभी बरतें कि वे ऐसी कोई बात न कहें, न करें जिससे समाज में अलगाव और असहिष्णुता की स्थिति उत्पन्न हो।

सभी संवैधानिक संस्थाएं पूर्ण रूप से स्वतंत्र एवं निष्पक्षता के साथ अपना काम करें, ऐसा वातावरण हो। सरकार को संयम बरतना होगा कि वह विभिन्न संवैधानिक संस्थाओं जैसे चुनाव आयोग, न्यायपालिका, सीबीआई, ई डी आदि का दुरूपयोग अपने राजनीतिक हितों की पूर्ति के लिए न करे।

वर्ष 2025 में देशभक्ति की एक नई परिभाषा गढ़ी जाए जिसका सीधा, सरल अर्थ यह हो कि जो जिस काम में संलग्न है, उसे पूरी ईमानदारी और कर्तव्य निष्ठा के साथ संपन्न करे। यह बात लोकतंत्र के चारों स्तंभों पर लागू होती है।

> **2025 में मीडिया, सकारात्मक खबरों को बिना किसी लाग लपेट के लोगों तक पहुंचाए। देश के विभिन्न भागों में अनेक व्यक्ति बहुत उत्कृष्ट श्रेणी का कार्य, जनहित में कर रहे हैं। ऐसे कार्यों को देश के अन्य लोगों तक फैलाने का काम मीडिया करे। वे केवल राजनीति पर पूरा ध्यान केंद्रित करने के बजाय सामाजिक सद्भाव और सौहार्द्र को बढ़ाने वाले तथा देश को प्रगति के पद पर तेजी से बढ़ाने वाले कामों की ओर जनता का ध्यान आकर्षित करें।**

2025 में मीडिया, सकारात्मक खबरों को बिना किसी लाग लपेट के लोगों तक पहुंचाए। देश के विभिन्न भागों में अनेक व्यक्ति बहुत उत्कृष्ट श्रेणी का कार्य, जनहित में कर रहे हैं। ऐसे कार्यों को देश के अन्य लोगों तक फैलाने का काम मीडिया करे। वे केवल राजनीति पर पूरा ध्यान केंद्रित करने के बजाय सामाजिक सद्भाव और सौहार्द्र को बढ़ाने वाले तथा देश को प्रगति के पद पर तेजी से बढ़ाने वाले कामों की ओर जनता का ध्यान आकर्षित करें।

2025 में नवाचार और सृजनशीलता को प्रोत्साहन मिले, वैज्ञानिक सोच विकसित हो और अंधविश्वास का उन्मूलन हो। अंधविश्वास के नाम पर महिलाओं का उत्पीड़न रुके और देश में बाल मजदूरी समाप्त हो। कहीं किसी ढाबे, ईंट भट्टे, किसी के घर में काम करते हुए या सड़क पर कचरा बिनते हुए बच्चे नहीं दिखाई दें।

भारत आर्थिक शक्ति बने और संपन्न हो, यह सभी की कामना है किंतु उस प्रगति का लाभ सभी वर्गों तक पहुंचे, यह अधिक आवश्यक है। ऐसी अपेक्षा 2025 में की जा सकती है कि देश के सभी नागरिक देश की संपन्नता में हिस्सेदार बनें।

सभी व्यापारी, बिना कर चोरी के, अपना व्यवसाय करें। वह संपन्न बनें, किंतु विधि सम्मत तरीके से। यदि कोई कानून और प्रक्रिया किसी भी प्रकार के व्यवसाय करने में बाधा उत्पन्न करती है तो उन बाधाओं को भी दूर किया जाए ताकि मजबूरन किसी भी व्यवसाई को गैर कानूनी रास्ता न अपनाना पड़े।

न्यायपालिका से अपेक्षा है कि वह त्वरित गति से हर व्यक्ति को न्याय प्रदान करे। हालांकि सुप्रीम कोर्ट में न्याय की देवी की आंखों पर से पट्टी हटा ली गई है, किंतु इसका अर्थ यह न हो जाए कि कानून, व्यक्ति की हैसियत देखकर निर्णय करे। सभी वर्ग और सभी व्यक्तियों के लिए कानून का समान रूप से प्रयोग हो, यह सुनिश्चित करना ही होगा। विलंबित न्याय, अन्याय के समान है। न्यायपालिका को यह बात अच्छी तरह समझनी होगी कि दशकों तक प्रकरण लंबित रहे तो न्याय न मिलने के बराबर है। यह सुनिश्चित करने के लिए जो भी प्रक्रियागत परिवर्तन आवश्यक हों, वे इस वर्ष हों, ऐसी आशा है। अंग्रेजों के जमाने के बहुत सारे कानून हैं जो देश के नागरिकों की स्वतंत्रता को बाधित करते हैं और उन्हें मूल अधिकार से वंचित करते हैं। उनके बारे में विचार कर उन्हें जनोन्मुखी बनाने की आवश्यकता है।

2025 में हम ऐसा भारत चाहते हैं जहां कोई भी बालिका या महिला निश्चिंत होकर, किसी भी समय किसी भी स्थान पर अकेली जा सके।

जनता को 2025 में देश में अधिक स्वच्छ और प्रदूषण रहित पर्यावरण मिले, मिलावट रहित खाद्य सामग्री मिले, यह कामना है। इसके लिए जहां नागरिकों को अपने कर्तव्य का निर्वहन करना होगा, वहीं सरकारों को पहल करनी होगी। गुणवत्ता पूर्ण स्वास्थ्य सेवा न केवल उपलब्ध हो अपितु सबकी पहुंच में हो।

वर्ष 2025 में सरकार प्रमुख रूप से पूरा ध्यान शिक्षा और स्वास्थ्य से संबंधित विषयों पर ही केंद्रित करे। अन्य क्षेत्रों के लिए केवल एक अच्छे नियामक की भूमिका निभाए ताकि निजी क्षेत्र भी स्वस्थ प्रतिस्पर्धा के साथ आगे बढ़ सके।

प्रधानमंत्रीजी 'न्यू इंडिया' की बात करते हैं। मैं 'नव भारत' की बात करूंगा। मेरी दृष्टि में 2025 का 'नव भारत' ऐसा होना चाहिए जहां सब भारतीय प्रसन्न हों, संतुष्ट हों, देशभक्त हों और सब अपनी क्षमता और प्रतिभा के अनुसार स्वयं का और देश का विकास करने में संलग्न हों, सरकार अपनी प्राथमिकता को पुनः परिभाषित करते हुए आम लोगों के लिए काम करे, भारत आर्थिक शक्ति बने तो प्रत्येक भारतीय भी आर्थिक रूप से संपन्न हो ताकि अपनी मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति कर सके, भारत न केवल चांद पर पहुंचे एवं अंतरिक्ष विज्ञान में अपना झंडा फहराए, अपितु प्रत्येक भारतीय बालक-बालिका को उच्च स्तरीय स्कूली शिक्षा मिले, भारत न केवल दवाई का निर्यात करने वाला प्रमुख देश बने, कोई भी भारतीय दवाओं के अभाव में न मरे, भारत न केवल विभिन्न खाद्यान्नों एवं फलों का निर्यातक बने, कोई भी भारतीय कुपोषित न रहे, भारत बाल मजदूरी, बाल विवाह, बलात्कार और महिला असुरक्षा की राजधानी के रूप में कुख्यात न हो अपितु स्वस्थ बच्चों और सुरक्षित महिलाओं के देश के रूप में जाना जाए, भारत आपसी कटुता, धर्मांधता एवं अंधविश्वास के लिए न जाना जाए अपितु परस्पर सौहार्द्र, प्रेम, भाईचारे और वैज्ञानिक सोच के लिए जाना जाय। जब ऐसा भारत होगा, तभी हम विश्व गुरु कहलाने के वास्तविक अधिकारी होंगे।

कई पाठकों को उपरोक्त बातें बड़ी काल्पनिक लग सकती हैं, किंतु मैं एक घोर आशावादी व्यक्ति हूं और मुझे भारतीयों की क्षमता और प्रतिभा में पूरा विश्वास है। 2025 का वर्ष, सबको अवसर देने का वर्ष बने, यही कामना है। यदि हम ऐसा कर सके तो यह सपना नहीं, सच्चाई होगी।

सभी पाठकों को नव वर्ष की अनेकानेक शुभकामनाएं।

–अतिथि सम्पादक,
राजेन्द्र भाणावत
(पूर्व आई.ए.एस. अधिकारी)

"वन नेशन, वन एजुकेशन" सिलबस

सुनील दत्त गोयल

राज्य और केंद्र सरकारों की शिक्षा नीति "वन इंडिया, वन एजुकेशन" होनी चाहिए। जिस तरह केंद्रीय विद्यालयों में पूरे भारत में एक ही यूनिफॉर्म/ड्रेस कोड और सिलेबस है, छुट्टियों से लेकर पढ़ाई के समय तक एक समान हैं, उसी मॉडल को पूरे देश के प्राइवेट स्कूलों में भी लागू करना चाहिए। यह पहल न केवल शिक्षा प्रणाली में समानता लाएगी, बल्कि छात्रों के लिए बेहतर अवसरों का द्वार भी खोलेगी।

शिक्षा के उद्देश्य और संसाधनों का बेहतर उपयोग : सरकार को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि जिन स्कूलों को रियायती दरों पर जमीन उपलब्ध कराई गई है, वे उन संसाधनों का उपयोग शिक्षा के उद्देश्यों के लिए कर रहे हैं। हमारा सभी शिक्षण संस्थानों से यह निवेदन है कि वे भूमि और भवन का गैर-शिक्षण कार्यों में उपयोग करने से बचें और उनका अधिकतम उपयोग बच्चों को शिक्षा प्रदान करने के लिए ही करें। ऐसा करने से सरकार के साथ उनका बेहतर सामंजस्य बना रहेगा। उदाहरण के लिए, कई स्कूलों ने सरकार से मिली जमीन का उपयोग आधुनिक प्रयोगशालाओं, पुस्तकालयों और खेल सुविधाओं के निर्माण में किया है, जो छात्रों के सर्वांगीण विकास में सहायक साबित हुए हैं। हालांकि, ऐसा करने वाले शैक्षिणक संस्थानों की संख्या बहुत कम है। उम्मीद की जाती है कि अन्य शिक्षण संस्थान भी जमीन का उपयोग सरकार से किए गए वायदे के मुताबिक ही करें, जिससे छात्रों के जीवन में सुधार हो और राष्ट्र निर्माण में उनकी भागीदारी सुनिश्चित हो। यदि कुछ जमीन वर्तमान में खाली है, तो उसे बेहतर योजनाओं के तहत उपयोग में लाने के सुझाव दिए जा सकते हैं। इन जमीनों पर वंचित बच्चों के लिए विशेष शैक्षिणक केंद्र या कौशल विकास कार्यक्रम चलाए जा सकते हैं। यह न केवल शिक्षा प्रणाली को सुदृढ़ करेगा, बल्कि समाज में समावेशी विकास को भी बढ़ावा देगा। स्कूल प्रबंधन और सरकार के बीच सहयोग से यह सुनिश्चित किया जा सकता है कि उपलब्ध संसाधन अधिक छात्रों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा देने के लिए उपयोग हों। यह न केवल शिक्षा क्षेत्र को मजबूत करेगा, बल्कि स्कूलों की सकारात्मक छवि भी बनाएगा।

निजी स्कूलों की भूमिका : निजी स्कूल शिक्षा के क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। वे छात्रों को उच्च गुणवत्ता की शिक्षा और आधुनिक सुविधाएं प्रदान करते हैं। उदाहरण के लिए, कुछ निजी स्कूल डिजिटल क्लासरूम, ई-लर्निंग प्लेटफॉर्म और विदेशी भाषाओं के अध्ययन के लिए विशेष कार्यक्रम चलाते हैं। ये पहल छात्रों को वैश्विक स्तर पर प्रतिस्पर्धा करने के लिए तैयार करती हैं। हालांकि, यह सुनिश्चित करना भी आवश्यक है कि शिक्षा के साथ-साथ अन्य गतिविधियों में भी पारदर्शिता हो। स्कूल प्रबंधन को सरकार के साथ मिलकर एक पारदर्शी रूपरेखा तैयार करनी चाहिए, जिससे वे अपने शिक्षा से संबंधित उद्देश्यों को प्रभावी ढंग से पूरा कर सकें। इससे छात्रों और अभिभावकों का विश्वास भी बढ़ेगा।

फीस और पाठ्यपुस्तकों में समानता : फीस और पाठ्य पुस्तकों की कीमतों में संतुलन बनाए रखने के लिए सरकार और स्कूल प्रबंधन को एक पारदर्शी प्रणाली लागू करनी चाहिए। केंद्रीय विद्यालय की तरह, निजी स्कूलों में भी एक ही सिलेबस और पूरे भारत में एक समान शुल्क लागू किया जाना चाहिए। इसके अतिरिक्त, जरूरतमंद छात्रों को किताबें और अन्य शैक्षिणक सामठी कम या बिना शुल्क के उपलब्ध कराने के लिए सरकार और निजी स्कूल मिलकर एक तंत्र विकसित कर सकते हैं। यह कदम शिक्षा के अधिकार को सशक्त करेगा।

व्यापार एवं उद्योग जगत और विद्यार्थियों को लाभ : "वन नेशन, वन एजुकेशन" नीति का सबसे बड़ा फायदा यह होगा कि विद्यार्थी पूरे देश में समान स्तर की शिक्षा प्राप्त करेंगे। इससे व्यापार और उद्योग जगत को भी फायदा होगा, क्योंकि नौकरी के लिए आवेदन करने वाले सभी छात्रों का शैक्षिणक स्तर समान होगा। रोजगार उपलब्ध करवाने वाले व्यापार एवं उद्योग जगत के मानव संसाधन विभाग को यह विश्वास होगा कि सभी राज्यों के छात्र "वन इंडिया, वन एजुकेशन" नीति के तहत समान शैक्षिक मानकों का पालन कर रहे हैं। इससे रोजगार के अवसरों में भी समानता सुनिश्चित होगी और छात्रों को एक समान स्तर पर आंका जाएगा।

सुझाव : सरकार को "वन नेशन, वन एजुकेशन सिलेबस" नीति को लागू करना चाहिए। सभी स्कूलों में एक समान सिलेबस और यूनिफॉर्म लागू होने से शिक्षा प्रणाली अधिक संगठित और समान हो जाएगी। केंद्रीय विद्यालयों की सफलता इस बात का प्रमाण है कि यह मॉडल पूरे देश में लागू किया जा सकता है। इसके अलावा, स्कूल प्रबंधन और सरकार को साथ मिलकर काम करना चाहिए, ताकि शिक्षा का स्तर ऊंचा उठ सके और अधिक छात्रों को लाभ मिल सके। एक समर्पित कमेटी का गठन कर सभी स्कूलों की गतिविधियों की समीक्षा और संसाधनों के उपयोग की निगरानी की जा सकती है।

आज पूरे भारत देश में एक आम धारणा जनता में बन चुकी है कि निजी स्कूल केवल ड्रेस और किताब बेचने का कारोबार में ज्यादा ध्यान देते हैं। इस प्रकार की नकारात्मक छवि से बचने के लिए स्कूलों को भी अपने कार्यप्रणाली में परिवर्तन करने की जरूरत है, जिससे उनकी प्रतिष्ठा में वृद्धि हो और विद्यार्थियों के परिजन भी उनको और सम्मान की दृष्टि से देखें। ऐसा करने से दोनों ओर से परस्पर सामंजस्य स्थापित होगा और एक दूसरे के प्रति विश्वास और सम्मान भी बढ़ेगा। हमारा अनुरोध है कि निजी स्कूल राष्ट्र निर्माण के लिए अपना योगदान दें। सरकार द्वारा रियायती दरों पर जमीन उपलब्ध कराए जाने के बाद यह उनकी जिम्मेदारी बनती है कि वे छात्रों को उच्चतम स्तर की शिक्षा प्रदान करें और उन्हें वास्तविक जीवन के लिए तैयार करें। इस दृष्टिकोण से, स्कूल प्रबंधन और सरकार के बीच सहयोग मजबूत होगा, शिक्षा का उद्देश्य प्रभावी ढंग से पूरा होगा, और समाज के सभी वर्गों के छात्रों को समान अवसर प्रदान किए जा सकेंगे। यह कदम एक उज्जवल और समावेशी भारत की दिशा में एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर साबित होगा।

धन्यवाद,

सुनील दत्त गोयल
महानिदेशक, इम्पीरियल चैंबर ऑफ़ कॉमर्स एंड इंडस्ट्री
जयपुर, राजस्थान।

सूफी संत ख्वाजा का 813वां उर्स : अंतिम शाही महफिल व गुस्ल की रस्म अदा

छोटे कुल की रस्म आज, बंद होगा जन्नती दरवाजा, केवड़े व गुलाब जल से दरगाह को धोया

अजमेर, (कासं)। सूफी संत ख्वाजा मोइनुद्दीन हसन चिश्ती के 813वें सालाना उर्स के मौके पर दरगाह में आस्था का सैलाब उमड़ पड़ा। लाखों की संख्या में जायरीन ने दरगाह जियारत की, जिसके चलते दरगाह परिसर सहित परिधि क्षेत्र में जायरीन की भीड़ देखने को मिली। एक दिन पहले ही सोमवार को जायरीन ने गुलाब जल व केवड़े से दरगाह को धोया। मंगलवार को कुल की रस्म होगी, इसके साथ ही छह दिन से आम जायरीन के लिए खोला गया जन्नती दरवाजा बंद कर दिया जाएगा। दरगाह की खिदमत का समय भी बदल जाएगा।

उर्स में शरीक होने आए जायरीन ने सोमवार देर शाम से ही केवड़े और गुलाब जल से दरगाह को धोना शुरू कर दिया है, जबकि दरगाह में छठी पर मंगलवार को कुल की रस्म होगी। दरगाह की दीवारों पर केवड़े और गुलाब जल का छिड़काव करने के बाद जायरीन दीवारों से टपकते पानी को बोतलों में भरकर साथ ले गए। उर्स के मौके पर जायरीन कई साधनों से अजमेर आते हैं। इनमें बड़ी संख्या में ट्रेन से सफर कर आने वाले होते हैं। ऐसे में उन जायरीन को वापस भी लौटना होता है जो छठी को छोटे कुल की रस्म तक नहीं रुक पाते हैं। वह एक दिन पहले ही दरगाह को केवड़ी और गुलाब जल से धोना शुरू कर देते हैं।

महफिलखाना में दरगाह दीवान सैयद जैनुल आबेदीन की सदारत उर्स की छठी शाही महफिल और ख्वाजा साहब की मजार को छठा गुस्ल अदा किया गया। मंगलवार दोपहर को कुल की रस्म के साथ छह दिनों से खुला जन्नती दरवाजा बंद कर दिया जाएगा और उर्स का झंडा चढ़ने के साथ खिदमत का समय भी बदल जाएगा। उर्स के दौरान 10 जनवरी को जुमे की नमाज होगी। दरगाह की शाहजहांनी, अकबरी, संदली मस्जिद सहित आसपास के इलाकों में जायरीन नमाज अदा करेंगे।

मेवाड़ में स्ट्रॉबेरी की हो रही खेती, दूर-दूर से देखने आ रहे हैं लोग

बैंकिंग क्षेत्र के नारायण सिंह और आरएनटी में प्रोफेसर मेडिसिन डॉ. महेश दवे ने मिलकर स्ट्रॉबेरी की खेती का सपना साकार किया

राजसमंद, (निसं)। जिले के घोड़च ग्राम पंचायत के गांव कुंडा में डॉ. महेश दवे और नारायण सिंह ने एक ऐसा काम कर दिखाया है जो कभी असंभव माना जाता था। इन्होंने मेवाड़ की धरा पर स्ट्रॉबेरी की खेती करके न केवल अपना सपना पूरा किया है, बल्कि मेवाड़ के किसानों के लिए एक प्रेरणा भी बन गए हैं।

बैंकिंग क्षेत्र में काम करने वाले नारायण सिंह ने खेती के नए आयाम तलाशने का निर्णय लिया। उन्होंने स्ट्रॉबेरी की खेती का विचार किया और इसके लिए रिसर्च शुरू की। उन्हें पता चला कि स्ट्रॉबेरी की खेती के लिए 15-20 डिग्री सेल्सियस तापमान और खास वातावरण चाहिए। उन्होंने महाबलेश्वर, हिमाचल और अन्य जगहों का दौरा किया और समझा कि यह एक संवेदनशील फसल है, लेकिन मेहनत से इसे सफल बनाया जा सकता है। अपने शोध के दौरान, नारायण सिंह की मुलाकात आरएनटी मेडिकल कॉलेज, उदयपुर में प्रोफेसर मेडिसिन डॉ. महेश दवे से हुई। डॉ. दवे की भी खेती में गहरी रुचि थी। जिले के कुंडा गांव में उनके पास खाली जमीन और फार्महाउस था।

उन्होंने साथ मिलकर वहां 65 हजार वर्ग फीट क्षेत्र में स्ट्रॉबेरी की खेती शुरू करने का निर्णय लिया। नारायण सिंह ने डॉ. महेश दवे के सहयोग से स्ट्रॉबेरी की बुवाई अक्टूबर में की। इसके लिए ऑर्गेनिक खाद, नीम की खली, और छाया के लिए मल्च का उपयोग किया गया। मधुमक्खियों की मदद से पौधों का परागण (पोलिनेशन) कराया गया, जिससे फसल की गुणवत्ता और उत्पादन में वृद्धि हुई। दो महीने बाद दिसंबर में ही खेतों में भरपूर स्ट्रॉबेरी तैयार हो गई। अब फसल की इतनी मांग है कि ऑर्डर पूरे करना मुश्किल हो रहा है। बड़े सुपर मार्केट, वरिष्ठ अधिकारी और उद्योगपति इनकी स्ट्रॉबेरी खरीदने के लिए पहुंच रहे हैं। मंडी में भी एक दिन छोड़कर एक दिन उत्पादन भेज रहे हैं।

कुंडा ग्राम में स्ट्रॉबेरी के खेत में कृषक और अन्य लोग।

अब तक इस परियोजना में 8 लाख की लागत आई है और 2 लाख रुपए की कमाई हो चुकी है। फसल पूरी होने तक अनुमान है कि कुल 16 लाख रुपए की कमाई होगी, जिससे एक ही फसल में 8 लाख रुपए का शुद्ध लाभ होगा। डॉ. महेश दवे और नारायण सिंह न केवल खुद सफल हो रहे हैं, बल्कि अन्य किसानों को भी नई फसलें उगाने और अपनी आय बढ़ाने के लिए प्रेरित कर रहे हैं। उनकी यह यात्रा साबित करती है कि अगर ठान लिया जाए तो कुछ भी असंभव नहीं।

नारायण सिंह मूलतः मावली के आसलियों की मादड़ी के निवासी है जो यहां से 45 किमी दूर है। जुनून ऐसा है कि वे लगभग हर रोज इतना सफर तय कर यहां खेत पर पहुंचते है। वे कहते हैं कि अब यही उनकी नई दुनिया है। स्ट्रॉबेरी की खेती कोई आसान काम नहीं है, बल्कि यह निरंतर ध्यान और मेहनत की मांग करती है। इसका छोटे बच्चे की भांति ध्यान रखना पड़ता है। नारायण सिंह और डॉ. महेश दवे बताते हैं कि इस फसल के रखरखाव के लिए चार व्यक्तियों की एक टीम हर समय तैनात रहती है। सुबह 4 बजे से ही सिंचाई और पौधों की देखभाल शुरू हो जाती है। स्ट्रॉबेरी की संवेदनशील

- **65 हजार वर्ग फीट में हुई फसल, दो माह में ही उग आई स्ट्रॉबेरी, एक फसल से आठ लाख के लाभ का अनुमान**

प्रकृति के कारण पौधों की नमी, पोषण और तापमान पर निरंतर ध्यान देना पड़ता है। इसके अलावा, फसल की गुणवत्तापूर्ण पैदावार सुनिश्चित करने के लिए जैविक खाद, छाया जाल, और मधुमक्खियों द्वारा पोलिनेशन जैसे विशेष उपाय किए जाते हैं। कुल चार व्यक्तियों की टीम रोज यहां काम करती है।

स्ट्रॉबेरी की उच्च कीमत और संवेदनशीलता इसे विशेष ध्यान देने योग्य बनाती है। शाम को खरीदारों की आमद के बाद भी, रात भर फसल की रखवाली करनी पड़ती है। यह काम जानवरों और पक्षियों से फसल की सुरक्षा के लिए बेहद जरूरी है। किसानों को अतिरिक्त सतर्कता बरतनी पड़ती है ताकि फसल को किसी भी प्रकार का नुकसान न हो। नारायण सिंह और डॉ. महेश दवे की यह मेहनत और समर्पण इस बात का प्रतीक है कि नई और चुनौतीपूर्ण फसलें उगाने के लिए प्रतिबद्धता और टीमवर्क कितने आवश्यक हैं। भारत में "चैंडलर", "कैमारोसा", और "साबरगम" जैसी किस्में अधिक लोकप्रिय हैं।

राशिफल

पंडित अनिल शर्मा

मंगलवार 7 जनवरी, 2025

पौष मास, शुक्ल पक्ष, अष्टमी तिथि, मंगलवार, विक्रम संवत 2081, रेवती नक्षत्र सायं 5:50 तक, शिव योग रात्रि 11:15 तक, बव करण सायं 4:27 तक, चन्द्रमा सायं 5:50 से मेष राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थितिः सूर्य-धनु, चन्द्रमा-मीन, मंगल-कर्क, बुध-धनु, गुरू-वृष, शुक्र-कुम्भ, शनि-कुम्भ, राहु-मीन, केतु-कन्या राशि में।

आज सर्वार्थ सिद्धि और अमृत सिद्धि योग सायं 5:50 से सूर्योदय तक है। रवियोग सायं 5:50 से आरम्भ होगा। आज दुर्गाष्टमी है। पंचक सायं 5:50 तक रहेंगे।

श्रेष्ठ चौघड़ियाः चर 9:57 से 11:15 तक, लाभ-अमृत 11:15 से 1:51 तक, शुभ 3:04 से 4:27 तक।

राहूकालः 3:00 से 4:30 तक। सूर्योदय 7:21, सूर्यास्त 5:45

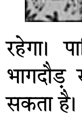

मेष
घर-गृहस्थी के खर्चों में नियंत्रण रखना ठीक रहेगा। पारिवारिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। मन में असंतोष बढ़ सकता है।

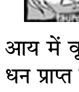

वृष
आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। संभावित स्त्रोत से धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता बनी रहेगी।

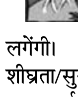

मिथुन
व्यावसायिक कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। महत्वपूर्ण कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

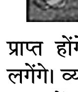

कर्क
नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। व्यावसायिक कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

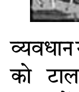

सिंह
चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। शुभ कार्यों में व्यवधान सामने आ सकते हैं। नवीन कार्यों को टालना ठीक रहेगा। नौकरीपेशा व्यक्तियों को उच्चाधिकारियों की नाराजगी का सामना करना पड़ सकता है।

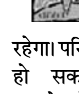

कन्या
परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। परिवार में महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। धार्मिक-सामाजिक समारोह में भाग ले सकते हैं।

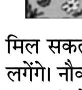

तुला
व्यावसायिक कार्यों से संबंधित विवादों से राहत मिल सकती है। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। नौकरीपेशा व्यक्तियों को तनाव से राहत मिलेगी। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

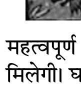

वृश्चिक
परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। महत्वपूर्ण कार्यों में उचित सफलता मिलेगी। घर-परिवार में अतिथियों का आगमन रहेगा। व्यावसायिक कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा।

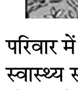

धनु
घर-परिवार के कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। परिवार में आपसी अनबन हो सकती है। स्वास्थ्य संबंधित मामलों में लापरवाही ठीक नहीं रहेगी।

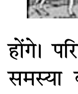

मकर
परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। परिजनों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

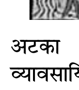

कुंभ
आर्थिक कारणों से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। परिवार में सुख-शांति बनी रहेगी।

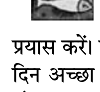

मीन
व्यावसायिक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। व्यावसायिक वार्ता के लिए दिन अच्छा रहेगा। आर्थिक मामलों में संतुलन बनाए रखना ठीक रहेगा।

एस.आई. भर्ती को लेकर स्थिति स्पष्ट करे राज्य सरकार : हाईकोर्ट

- अदालत ने कहा है कि गत 18 नवंबर को भर्ती पर दिए यथास्थिति के आदेश की पालना होनी चाहिए
- 'यदि ट्रेनी एसआई को फील्ड पोस्टिंग दी गई तो वह अवमानना की श्रेणी में माना जाएगा'

जयपुर। राजस्थान हाईकोर्ट ने एसआई भर्ती-2021 पेपर लीक से जुड़े मामले में राज्य सरकार को जवाब पेश करने के लिए दो दिन का समय देते हुए भर्ती को लेकर अपनी स्थिति स्पष्ट करने को कहा है। अदालत ने कहा है कि गत 18 नवंबर को भर्ती पर दिए यथास्थिति के आदेश की पालना होनी चाहिए और यदि ट्रेनी एसआई को फील्ड पोस्टिंग दी गई तो वह अवमानना की श्रेणी में माना जाएगा। अदालत ने राज्य सरकार को हिदायत दी है कि वह यथास्थिति आदेश को बरकरार रखे और भर्ती को लेकर कुछ भी नहीं करें, वरना अदालत इसे गंभीरता से लेगी। जस्टिस समीर जैन ने यह आदेश कैलाश चन्द्र शर्मा व अन्य की ओर से दायर याचिका व डीजीपी की ओर से गत 31 दिसंबर को आदेश जारी कर ट्रेनी एसआई को प्रैक्टिकल ट्रेनिंग के लिए जिले आवंटित करने के आदेश के खिलाफ पेश प्रार्थना पत्र पर सुनवाई करते हुए दिए।

सुनवाई के दौरान अदालत ने महाधिवक्ता राजेन्द्र प्रसाद से कहा कि जब 18 नवंबर को भर्ती पर यथास्थिति दी गई तो फिर ट्रेनी एसआई को फील्ड पोस्टिंग कैसे दी जा सकती है। इस पर महाधिवक्ता ने कहा कि भर्ती प्रक्रिया पूर्व में ही पूरी हो चुकी है और अब ट्रेनी एसआई को आरपीए ट्रेनिंग के बाद फील्ड ट्रेनिंग के लिए भेजा जा रहा है। यह भी मूल ट्रेनिंग का ही हिस्सा है। एजी ने कहा कि करीब 800 ट्रेनी हैं, इसमें से कुछ गलत हो सकते हैं, लेकिन इस आधार पर सभी को ट्रेनिंग से नहीं रोक सकते। इस पर अदालत ने कहा कि 22 नवंबर को उन्हें भर्ती के संबंध में निर्णय लेने के लिए दो सप्ताह का समय दिया था, लेकिन अब छह सप्ताह बाद भी राज्य सरकार का जवाब नहीं आया है। इसके जवाब में महाधिवक्ता ने कहा कि भर्ती को लेकर बडे स्तर पर विचार विमर्श चल रहा है, और जवाब के लिए समय दिया जाए। अदालत ने राज्य सरकार को दो दिन का समय देते हुए सुनवाई 9 जनवरी को तय की है। सुनवाई के दौरान अदालत ने यह भी कहा कि महाधिवक्ता जब भर्ती को रद्द करने की राय दे चुके हैं तो मामले में पैरवी कैसे कर सकते हैं। वहीं प्रार्थियों के अधिवक्ता हरेन्द्र नील ने कहा कि पुलिस विभाग ने भर्ती पर यथास्थिति आदेश के बाद भी 31 दिसंबर को आदेश जारी कर ट्रेनी एसआई को प्रैक्टिकल ट्रेनिंग के लिए जिला आवंटित करने के लिए कहा है। यह आदेश अदालती अवमानना है। मूल याचिका में पूरी भर्ती को ही रद्द करने का आग्रह किया है। सरकार ने अदालत के समय देने के बाद भी भर्ती को लेकर अपनी स्थिति नहीं बताई और ट्रेनी एसआई को फील्ड पोस्टिंग में भेज रहे हैं जो गलत है।

मौसम विभाग ने सोमवार को जयपुर सहित प्रदेश के कई जिलों में कोहरे का ऑरेंज अलर्ट जारी किया था जिसका जयपुर में भारी असर दिखाई दिया। कोहरे के कारण वाहनों की लाइट जलाने के बाद भी विजिबिलिटी बहुत कम होने से वाहन रेंग-रेंग कर चलते नज़र आये। फ़ोटो : दिनेश भारद्वाज

ज्ञान का सम्वर्धन करती है मथुरा लीला : मृदुल कृष्ण

मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने सोमवार को विद्याधर नगर में सपत्नीक सुप्रसिद्ध कथा वाचक मृदुल कृष्ण महाराज की भागवत कथा का श्रवण किया।

जयपुर। गिर्राज संघ परिवार विश्वकर्मा जयपुर के 26 वें वार्षिकोत्सव पर तक विद्याधर नगर सेक्टर-7 स्थित अग्रसेन हॉस्पीटल के पीछे स्थित प्रांगण में चल रही 108 विशाल श्रीमद भागवत ज्ञानयज्ञ के छठवें दिन सोमवार को व्यासपीठ से आचार्य गोस्वामी मृदुल कृष्ण महाराज ने कहा कि प्रभु श्री कृष्ण की मथुरा लीला जीव के हृदयान्धकार को नष्ट कर ज्ञान का विकास करती है यानि यह कहा जाए कि मथुरा लीला ज्ञान का संवर्धन करती है।

जिस ज्ञान के माध्यम से जीव पूर्ण ब्रम्हा श्रीकृष्ण से साक्षात्कार करता है। मथुरा लीला प्रसंग का वर्णन करते हुए उन्होंने कहा कि परमात्मा श्रीकृष्ण ने अपनी मथुरा लीला में अज्ञान रूपी कंस का उद्धार कर ज्ञान का सम्बर्धन किया। यहाँ तक कि साक्षात् बृहस्पति के शिष्य उद्धव जी के ज्ञान को प्रभु ने गोपियों के द्वारा भक्ति का चादर उड़ाकर परिपूर्ण किया। स्वयं परमात्मा श्रीकृष्ण ने अपनी मथुरा लीला में ही गुरू सान्दीपनि के सान्निध्य में चैसठ दिनों तक रहकर ज्ञान प्राप्त किया। अत: प्रभु की मथुरा लीला श्रवण करने मात्र से भक्त के हृदय में ज्ञान का उदय होता है। उन्होंने बताया कि यदि बिद्यार्थी अपने अध्ययन काल में यदि प्रभु की मथुरा लीला को श्रवण करता है तो निश्चित रूप से विद्या के क्षेत्र में उसे अभूतपूर्व सफलता प्राप्त होती है। विशेष महोत्सव के रूप में श्री रूक्मिणी विवाह महोत्सव बहुत ही धूम-धाम से मनाया गया। इस प्रसंग पर विस्तार से व्याख्यान देते हुए आचार्य श्री ने कहा कि श्री रूक्मिणी जी ने अपने जीवन में किएहुए सत्कार का फल केवल प्रभु को ही माँगा। जिसको कि प्रभु श्री द्वारिकाधीश ने स्वयं रूक्मिणी के कुणिनपुर जाकर रूक्मिणी को प्रधान पटरानी बनाकर पूर्ण किया। यह पवित्र प्रसंग हम सबको शिक्षा प्रदान करता है हमें जीवन में किये हुए सत्कार के फल के रूप में प्रभु की ही आचना करनी चाहिए। इस अवसर पर श्री गोविन्द देवजी मंदिर के महंत अंजन कुमार गोस्वामी ने भी कथा का श्रवण किया और सम्मान स्वरूप आचार्य गोस्वामी मृदुल कृष्ण महाराज को ़चित्र भेंट किया। मुख्य यजमान मदन मोहन सोमानी व वरुण सोमानी ने बताया कि महोत्सव के तहत मंगलवार को महोत्सव के अंतिम दिन सुदामा चरित्र व नवयोगेष्वर संवाद के बाद पुष्प होली महोत्सव मनाया जाएगा।

कानूनों का प्रदेश में हो रहा प्रभावी क्रियान्वयन : भजनलाल शर्मा

- 'नए आपराधिक कानून शीघ्र एवं सुलभ न्याय प्रदान करने में निभा रहे महत्वपूर्ण भूमिका'

जयपुर। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने कहा कि देश में लागू तीन नवीन कानूनों में सजा की तुलना में न्याय पर अधिक जोर दिया गया है। नए कानून भारतीय न्याय संहिता, भारतीय नागरिक सुरक्षा संहिता तथा भारतीय साक्ष्य अधिनियम हमारे संविधान की मूल भावना के अनुसार बनाए गए हैं। ये कानून आमजन को शीघ्र एवं सुलभ न्याय प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं। मुख्यमंत्री के कहा कि नवीन आपराधिक विधि में आपराधिक मामले के महत्वपूर्ण चरणों के लिए समय-सीमा निर्धारित की गई है जिससे पीड़ित को त्वरित न्याय मिल रहा है। साथ ही पीड़ित को अपने साथ हुए अपराध की रिपोर्ट संबंधित क्षेत्र के थाने में दर्ज कराने की बाध्यता से मुक्ति मिली है।

शर्मा सोमवार को मुख्यमंत्री निवास पर नवीन आपराधिक कानूनों के राजस्थान में क्रियान्वयन तथा प्रचार-प्रसार के संबंध में गृह विभाग की उच्चस्तरीय बैठक को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा राज्य सरकार प्रदेश में अपराधों पर प्रभावी नियंत्रण करने तथा जनता को भयमुक्त माहौल उपलब्ध कराने के लिए प्रतिबद्ध है। कानून व्यवस्था को सुदृढ़ करने तथा नए कानूनों को लागू करने में आवश्यक संसाधनों की कोई कमी नहीं आने दी जाएगी। मुख्यमंत्री ने कहा कि नए कानूनों का प्रदेश में प्रभावी रूप से क्रियान्वयन किया जा रहा है और इनके प्रचार-प्रसार में राजस्थान देश का अग्रणी राज्य है। आमजन को इनकी जानकारी देने के लिए राज्य सरकार कई कदम उठा रही है। राज्य की 11 हजार से अधिक ग्राम पंचायतों में विशेष ग्राम सभाओं के माध्यम से नए कानूनों की जानकारी दी गई है। साथ ही, प्रदेश में महिला एवं बाल सुरक्षा संबंधी प्रावधानों के बारे में पुस्तकें तैयार करवाकर वितरित की गई है।

गंगापुर सिटी 'जिले' के दर्जे को खत्म करने के खिलाफ याचिका पेश

जयपुर। पूर्ववर्ती कांग्रेस सरकार की ओर से बनाए जिले गंगापुर सिटी के जिले का दर्जा रद्द करने के खिलाफ हाईकोर्ट में जनहित याचिका दायर की गई है। जिस पर हाईकोर्ट की खंडपीठ आगामी दिनों में सुनवाई करेगी। कांग्रेस के नेता रामकेश मीणा व अन्य की ओर से दायर इस जनहित याचिका में मुख्य सचिव सहित अन्य को पक्षकार बनाया गया है।

याचिका में कहा गया है कि गंगापुर सिटी को जिले का दर्जा निर्धारित मापदंड के तहत दिया गया था। प्रदेश में सरकार बदलने के बाद जिलों को लेकर राजनीति शुरु हुई और अब राजनीतिक द्वेषता के चलते ही कुछ जिलों का दर्जा समाप्त कर दिया गया है। गंगापुर सिटी से जिला का दर्जा समाप्त करने के पीछे भी सरकार की राजनीतिक द्वेषता ही है। याचिका में कहा गया कि सरकार ने करीब डेढ साल पहले गंगापुर सिटी को जिला बनाया था और उसके बाद यहां कई प्रशासनिक नियुक्तियां हो चुकी हैं। वहीं विभाग भी बतौर जिला स्तर पर काम कर रहे हैं। कमेटी ने लोगों से आपत्तियां मांगने के बाद इसे जिला घोषित किया था। ऐसे में अब महज राजनीतिक द्वेषता के चलते इसे जिला निरस्त करना गलत है। गौरतलब है कि पूर्ववर्ती कांग्रेस सरकार ने अगस्त, 2023 में 3 नए संभाग और 19 जिलों का गठन किया था।

जयपुर के राजापार्क गुरुद्वारे में गुरू गोबिन्द सिंह जयंती पर विशेष रूप से सजाया गया और विशेष पूजा की गई। वहीं सुबह से ही अटूट लंगर बरताया गया।

भाजपा जयपुर शहर जिले के 13 मंडल अध्यक्ष घोषित

जयपुर। भाजपा के संगठन पर्व के तहत आज जयपुर शहर जिला के विभिन्न विधानसभा क्षेत्रों के मंडल अध्यक्षों एव मंडल प्रतिनिधियों का निर्वाचन किया गया है। आमेर में मंडल अध्यक्षरामचंद्र सैनी, मंडल प्रतिनिधि रामजीलाल गुर्जर, जवाहर नगर में मंडल अध्यक्षओम हरजानी, मंडल प्रतिनिधि प्रमोद बंसल, सूरजपोल में मंडल अध्यक्ष विनय कुलवाल, मंडल प्रतिनिधि जितेंद्र सिंह राजावत, पोण्डरिक मंडल अध्यक्षप्रेमचंद सैनी, मंडल प्रतिनिधि राममणि तिवारी, जोहरी बाजार मंडल अध्यक्षदीपक शर्मा, मंडल प्रतिनिधि श्याम गोडीवाल, मालवीय नगर मंडल अध्यक्षहरिश खाडिया, मंडल प्रतिनिधि अमिता शर्मा, महेश नगर में मंडल अध्यक्षदीनदयाल सैनी, मंडल प्रतिनिधि रेखा तिवाडी, राजापार्क मंडल अध्यक्षमोहित मूलचंदानी, मंडल प्रतिनिधि पूनम कल्ला, शास्त्री नगर मंडल अध्यक्षगजानंद योगी, मंडल प्रतिनिधि हर्षवर्धन शर्मा, प्रताप नगर मंडल अध्यक्षअजय पारीक को बनाया।

सभी अंग्रेजी मीडियम स्कूल बंद नहीं होंगे : जोगाराम पटेल

जयपुर। संसदीय कार्यमंत्री जोगाराम पटेल ने कहा है कि कांग्रेस राज में खुले सभी अंग्रेजी मीडियम स्कूलों को बंद नहीं किया जाएगा। समीक्षा के बाद जो अंग्रेजी मीडियम स्कूल सही है। उनको बरकरार रखेंगे।

जोगाराम पटेल ने कहा कि अगर अंग्रेजी स्कूल जनहित के हैं, उनकी केवल समीक्षा होगी। कांग्रेस को चिंता नहीं करनी चाहिए। अंग्रेजी माध्यम का स्कूल सीरियसली अंग्रेजी माध्यम का हो। उसमें अंग्रेजी विषय के टीचर हों। ऐसी शिकायतें आई थी कि हिंदी मीडियम के स्कूल पर केवल अंग्रेजी माध्यम के स्कूल का बोर्ड लगा दिया। उन स्कूलों में न अंग्रेजी शिक्षकों की व्यवस्था की, न अंग्रेजी मीडियम से पढ़ाई हुई। अंग्रेजी स्कूलों की समीक्षा की जाएगी। जो जरूरी होगा उनको रखा जाएगा।

दिया कुमारी ने गुरु गोबिंद सिंह की ऐतिहासिक तलवार की पूजा-अर्चना की

जयपुर। सिक्खों के 10वें गुरु, गुरु गोबिंद सिंह जी के प्रकाश पर्व पर आज उप मुख्यमंत्री दिया कुमारी ने सिटी पैलेस के सर्वतोभद्र चौक में गुरु जी की तस्वीर पर पुष्पांजलि अर्पित की। इस अवसर पर उन्होंने जयपुर के सिटी पैलेस में विराजमान गुरु जी की ऐतिहासिक तलवार की भी पूजा-अर्चना की। उन्होंने कहा गुरु गोबिंद सिंह जी का त्याग, बलिदान और शौर्य की गाथा हम सबको सदैव प्रेरित करती रहेंगी। इसके बाद शबद कीर्तन का आयोजन किया गया।

गुरू गोबिंद सिंह जी के प्रकाश पर्व पर यह तलवार सिटी पैलेस के सर्वतोभद्र चौक में आगंतुकों, पर्यटकों और आमजन के दर्शन के लिए रखी गई है।

गौरतलब है कि गुरु गोबिंद सिंह ने कुछ समय नाहन (सिरमौर जिला, हिमाचल प्रदेश) में व्यतीत किया था। तब नाहन छोड़ते समय उन्होंने अपनी निजी तलवार तत्कालीन शासक को स्मृति चिन्ह के रूप में भेंट की थी। राजमाता पद्मिनी देवी, जो कि नाहन से हैं, कुछ वर्ष पहले तलवार को जयपुर लेकर आई थीं।

सिक्खों के 10वें गुरु, गुरु गोबिंद सिंह जी के प्रकाश पर्व पर आज उप मुख्यमंत्री दिया कुमारी ने सिटी पैलेस के सर्वतोभद्र चौक में गुरु जी की तस्वीर पर पुष्पांजलि अर्पित की।

4 करोड़ 89 लाख रुपये का गांजा बरामद, दो तस्कर गिरफ्तार

पुलिस ने 978 किलो 600 ग्राम गांजा बरामद कर कंटेनर को जब्त किया

भीलवाड़ा, (निसं)। जिले के हनुमान नगर थाना पुलिस ने अवैध मादक पदार्थ पर कार्रवाई करते हुए एक कंटेनर में अवैध गांजा ले जाते हुए दो आरोपियों को गिरफ्तार किया है।

पुलिस ने जानकारी देते हुए बताया कि जिला पुलिस अधीक्षक धर्मेन्द्र सिंह के निर्देशन में मादक पदार्थ तस्करों के खिलाफ कार्रवाई लगातार जारी है। इसी क्रम में जिले की हनुमानगर थाना पुलिस ने 4 करोड़ 89 लाख 30 हजार रुपये की अनुमानित कीमत का 978 किलो 600 ग्राम गांजा बरामद कर कंटेनर को जब्त कर दो तस्करों को गिरफ्तार किया है।

हनुमान नगर थाना प्रभारी शंकरसिंह ने जानकारी देते हुए बताया कि मुखबिर के द्वारा सूचना मिली कि कोटा की ओर से आने वाले एक कंटेनर में अवैध मादक पदार्थ गांजा भरा हुआ है। यह कंटेनर हाईवे से होते हुए आगे जायेगा। इस सूचना पर जिला पुलिस अधीक्षक धर्मेंद्र सिंह के निर्देशन, एएसपी शाहपुरा राजेश आर्य और डीएसपी जहाजपुर नरेन्द्र पारीक के सुपरविजन में थाना प्रभारी सिंह मय जाब्ता नेशनल हाइवे 52 स्थित बालाजी तिराहा पर पहुंचे और नाकाबंदी की। सूचना के मुताबिक आये कंटेनर को पुलिस ने रोका। तलाशी ली तो उसमें 978.6 किलोग्राम अवैध गांजा मिला, जिसे पुलिस ने जब्त कर दो तस्करों गुर्जरी का मोहल्ला नानणा थाना दूद जिला जयपुर ग्रामीण निवासी शाहरुख मोहम्मद (22) पुत्र मुनीर खां भाटी, सचिन गुर्जर (19) पुत्र रामजीवन गुर्जर को गिरफ्तार किया, साथ ही तस्करी में प्रयुक्त वाहन को भी जब्त कर किया गया।

हनुमान नगर थाना पुलिस ने करोड़ों का गांजा बरामद कर तस्करों को गिरफ्तार किया।

- कोटा की ओर से आ रहे कंटेनर में अवैध मादक पदार्थ गांजा बरामद किया

पुलिस ने जब्त गांजे की अंतर्राष्ट्रीय बाजार में अनुमानित कीमत 4 करोड़ 89 लाख 30 हजार रुपये बताई है। हनुमान नगर थाना पुलिस ने एनडीपीएस एक्ट के तहत केस दर्ज किया है। इस कार्रवाई में थाना प्रभारी के साथ एएसआई कैलाश चंद, दीवान रामराय कांस्टेबल राजेन्द्र (विशेष योगदान), भगवत सिंह, लालाराम, शंकरलाल, विक्रम सिंह, टिकम चंद चालक, जहाजपुर थाने के कांस्टेबल रामचंद्र व रीकम चालक (विशेष योगदान) शामिल थे।

पांच लाख रुपए से भरा ए.टी.एम. उखाड़ ले गए बदमाश

65 किलोमीटर दूर ट्रे बॉक्स को काटकर नगदी निकाली, मशीन को फेंककर बदमाश फरार हुये

सूरतगढ़, (निसं)। पांच लाख रुपए भरे पीएनबी बैंक एटीएम को उखाड़कर बदमाश पिकअप में डालकर ले गए। बदमाशों ने 65 किलोमीटर जाकर गैस कटर से मशीन के ट्रे बॉक्स पार्ट काटा। इसके बाद रुपए निकालकर मशीन को सुनसान जगह फेंक गए। वारदात के बाद सोमवार सुबह मशीन को बरामद कर लिया गया है। घटना सूरतगढ़ के गांव बीरमाना में रविवार रात 2 से 2:30 बजे के बीच हुई।

डीएसपी प्रतीक मील ने बताया कि पिकअप सवार करीब आधा दर्जन बदमाश गांव के पंजाब नेशनल बैंक के एटीएम के सामने आकर रुके और बैंक के बाहर लगे सभी सीसीटीवी कैमरों पर काले रंग से स्प्रे कर दिया, ताकि कैमरे का लेंस ढक जाए। इसके बाद, दो से तीन बदमाश लोहे की रॉड लेकर एटीएम कक्ष में घुसे और बाहर और अंदर लगे हूटर की तारें काट दीं, ताकि किसी प्रकार की आवाज न हो। बदमाशों ने लोहे की रॉड से एटीएम को उसके फाउंडेशन से हिला दिया। इसके बाद पिकअप से ही टोचन करके एटीएम मशीन को उखाड़ लिया और पिकअप में डालकर फरार हो गए।

- बैंक के बाहर लगे सभी सीसीटीवी पर काले रंग से स्प्रे कर दिया, ताकि कैमरे का लेंस ढक जाए
- पिकअप से ही टोचन करके एटीएम मशीन को उखाड़ा और पिकअप में डालकर फरार हो गए

बैंक अधिकारियों के अनुसार, घटना के वक्त एटीएम में करीब पांच लाख रुपए का कैश था, जिसे चोर मशीन के साथ ही ले भागे। घटना की सूचना मिलते ही एसपी गौरव यादव के निर्देशों पर डीएसपी प्रतीक मील ने रात में बीकानेर संभाग में नाकाबंदी करवाई और पुलिस टीमों ने हाईवे और लिंक सड़क मार्गों पर वाहनों की गहन तलाशी ली। वहीं बैंक अधिकारियों और राजियासर थाना पुलिस ने मौके पर पहुंचकर वारदात का मुआयना किया। बदमाशों का कोई सुराग नहीं लग पाया।

डीएसपी प्रतीक मील ने बताया कि घटना स्थल गांव बीरमाना से 65 किलोमीटर दूर क्षतिग्रस्त एटीएम सोमवार सुबह 11 बजे मिला। चोरों ने गैस कटर से मशीन के ट्रे बॉक्स पार्ट को काटकर 5 लाख रुपए की नकदी से भरी कैश ट्रे निकाल ली। इसके बाद मशीन को 465 हैड (सूरतगढ़) के सुनसान इलाके में छोड़कर फरार हो गए। पुलिस के मुताबिक, पूर्व में भी इसी बैंक के एटीएम से चोरी की दो बार कोशिश की जा चुकी है। दोनों बार एक ही तरीका अपनाया गया था। इस बार भी चोरों ने पूरी तरह से रैकी कर घटना को अंजाम दिया। घटना से पहले चोरों ने आसपास लगे सीसीटीवी कैमरों पर स्प्रे किया और उनकी वायर काट दी। हालांकि, एटीएम के अंदर लगे कुछ सीसीटीवी कैमरों पर कलर स्प्रे छिड़कने के बावजूद लेंस पूरी तरह से कवर नहीं हो पाए, जिससे कुछ फुटेज रिकार्ड हो गए। पुलिस ने बैंक प्रबंधन को पूर्व में हुई चोरी की कोशिश के बाद सुरक्षा उपाय करने के लिए कहा था, लेकिन बैंक प्रबंधन ने ना तो गार्ड लगाया और न ही कोई अन्य सुरक्षा इंतजाम किए, जिससे यह घटना घटित हुई।

उर्स स्पेशल रेलगाड़ियां चलाई

अजमेर, (कासं)। अजमेर में चल रहे 813 वें सालाना उर्स के अवसर पर देश के विभिन्न हिस्सों से जायरीन के अजमेर पहुंचने के लिये अब तक कुल 18 उर्स स्पेशल गाड़ियां चलाई जा रही हैं, जोकि ऑनलाइन रिजर्वेशन के लिए सिस्टम पर उपलब्ध है। इस वर्ष उर्स के लिए जिन स्पेशल गाड़ियों का संचालन किया जा रहा है उनमें अजमेर-बांद्रा, बांद्रा अजमेर, अजमेर-नांदेड़, नांदेड़-अजमेर, तिरुपति-मदार जंक्शन, मदार जंक्शन-तिरुपति, आजमगढ़- मदार जंक्शन, मदार जंक्शन आजमगढ़, अजमेर-काचीगुड़ा, काचीगुड़ा-अजमेर, अजमेर-हैदराबाद, हैदराबाद-अजमेर, अजमेर-तिरुपति, तिरुपति-अजमेर उर्स स्पेशल ट्रेनें शामिल हैं।

पांच किलो गांजा बरामद, एक गिरफ्तार

उदयपुर, (कासं)। अवैध रूप से गांजा परिवहन करते हुए पुलिस ने एक युवक को गिरफ्तार कर पांच किलो गांजा बरामद किया है।

गोगुन्दा थानाधिकारी शैतानसिंह ने बताया कि हैड कांस्टेबल योगेश्वर सिंह, कांस्टेबल शिवसिंह, प्रतापसिंह, योगेन्द्र के साथ लोकल व स्पेशल एक्ट व मादक पदार्थ की रोकथाम के लिए गोगुन्दा, चाटियाखेड़ी गश्त करता हुआ गोगुन्दा से नाल की तरफ जाने वाले रोड पर भाट सेनबोट घाटी पहुंच नाकाबंदी शुरू की। नाल की तरफ से एक व्यक्ति मोटरसाइकिल पर एक प्लास्टिक का कट्टा लेकर आता हुआ नजर आया। जिसे रूकवाया तो बाइक सवार व्यक्ति ने बाइक को पहले धीमा किया फिर तेज गति से भगाने की कोशिश की, जिस पर बाइक रूकवाकर उससे पूछताछ की तो अपना नाम वीरमा राम पुत्र होमा गमेती निवासी पुनावली फलां वंशकली माण्डवा होना बताया। वीरमाराम गमेती की बाइक पर प्लास्टिक के कट्टे की तलाशी ली तो कट्टे में पांच थैलियों में 5.490 किलो गांजा मिला।

आरोपी वीरमा राम गमेती ने वालू महाराज निवासी काडा ओगणा से गांजा खरीद कर लाना बताया। पुलिस ने आरोपी को गिरफ्तार कर लिया, जिससे पूछताछ की जा रही है।

शराब के साथ आरोपी गिरफ्तार

बौंली-बामनवास, (निसं)। क्षेत्र के गुडला नदी के आम रोड से बौंली पुलिस ने अवैध रूप से रखी गई देशी शराब के 55 पव्वों के साथ हेवराज गुर्जर निवासी गुडला नदी को गिरफ्तार किया है। बौंली पुलिस थाने के हैड कांस्टेबल धर्मेंद्र चौधरी ने बताया कि गठित टीम में शामिल कांस्टेबल गणपत एवं संदीप गश्त कर रहे थे। इसी दौरान बौंली से मुखबिर ने सूचना दी कि गुडला नदी सड़क मार्ग पर एक व्यक्ति अवैध देशी शराब के कार्टून के साथ कहीं ले जाने की फिराक में खड़ा है। गश्ती दल ने वाहन से मौके पर पहुंचकर गुडला नदी मार्ग पर हेवराज गुर्जर कार्टून के साथ अवैध 55 देशी पव्वों के साथ खड़ा नजर आया जिसे घेराबंदी कर पकड़ा।

दुकान से घर लौट रहे व्यापारी के साथ लाखों की लूट

8 किलो चांदी, 80 ग्राम सोने के जेवर तथा 1.80 लाख की नकदी लूटी

आसींद, (निसं)। ग्राम पंचायत रतनपुरा से लाछुड़ा के बीच चार-पांच बदमाशों ने ज्वेलर्स व्यवसायी के साथ लूट की वारदात की है।

लूटपाट की घटना में घायल ज्वेलर्स व्यवसायी भेरूलाल सोनी तथा उसके साथ आए परिजनों ने बताया कि वह रतनपुरा चौराहे पर ज्वेलर्स की दुकान करता है। दुकान बंद कर शाम को करीब 7:30 बजे अपने घर की ओर मोटरसाइकिल पर सवार होकर लौट रहा था। इस बीच लाछुड़ा सड़क मार्ग पर उसकी बाइक के सामने एक कार उसका रास्ता रोककर अचानक रूक गई। करीब चार पांच व्यक्ति जो कार में सवार थे, फटाफट नीचे उतरे और उसके साथ छीनाझपटी करने लगे। इस बीच उनके साथ हाथापाई हो गई। उसने बीच बचाव की कोशिश की तो लुटेरों ने उसके साथ मारपीट कर दी तथा उसे कार में उठाकर पटक दिया तथा वहां से एक सूने जंगल में ले गए।

जहां उसके साथ लूटपाट करने लगे तो उसने बचाव की कोशिश की, जिससे उसके सिर हाथ में गंभीर चोटें आई तथा उसे वहां अंधेरे में जंगल में पटक कर भाग निकले। ज्वेलर्स व्यवसायी ने होश संभालते हुए अंधेरे में पैदल चलकर सड़क मार्ग पर पहुंचे तो उनको पता चला कि यह लादुवास गांव का जंगल है। उसने राहगीरों को रोककर मदद मांगी, तो राहगीरों ने बातचीत कर ने इस घटना की पुलिस को जानकारी दी।

ज्वेलर्स व्यवसायी ने बताया कि इस लूटपाट की घटना में लुटेरे उससे करीब 8 किलो चांदी तथा 80 ग्राम सोने की जेवरात तथा एक लाख अस्सी हजार रूपये की नकदी तथा उसके गले में पहनी हुई सोने की चेन तथा सोने की अंगूठी लूट ले गए हैं।

पुलिस ने दो चेन स्नेचर को दबोचा

जुए की लत से कर्जदार बन गये थे दोनों युवक

पुलिस ने आरोपियों को गिरफ्तार किया।

अजमेर, (कासं)। जुए की लत से बने कर्जदार दो युवक अब शातिर अपराधी बन गए हैं। कर्ज उतराने के लिए एक के बाद एक वारदात को अंजाम देकर अपराध की दुनिया में कदम रख चुके युवक शातिर चेन स्नेचर बन गए। बीते दिनों क्लॉक टावर थाना क्षेत्र में राह चलती एक महिला के गले से झपट्टा मार सोने की चेन तोड़कर फरार हो गए थे।

पुलिस ने सीसीटीवी कैमरे और मुखबीर की सूचना पर दोनों को गिरफ्तार कर लिया। दोनों आरोपियों के कब्जे से सोने की चेन भी बरामद कर ली है। सीओ साउथ ओमप्रकाश ने बताया कि 3 जनवरी को लाल कोठी केसरगंज निवासी मंजू देवी पत्नी योगेंद्र कुमार जैन ने दर्ज रिपोर्ट में बताया कि वह इवनिंग वॉक के लिए घर से निकली थी। इसी बीच दो युवक पैदल-पैदल उसके पीछे चल रहे थे। इनमें से एक युवक ने गले में पहनी सोने की चेन पर झपट्टा मारकर छीन ली और रफूचक्कर हो गए।

पीड़िता की रिपोर्ट दर्ज करने के बाद पुलिस ने आरोपियों की तलाश शुरू कर दी। सीसीटीवी फुटेज और मुखबिर की सूचना पर शांतिनगर मलूसर निवासी उमेश और रोहित उर्फ गल्ला को गिरफ्तार कर लिया। प्रारंभिक पूछताछ में आरोपियों ने बताया कि जुए की लत की वजह से दोनों कर्जदार हो गए थे, कर्जा उतारने के लिए चोरी और चेन स्नेचिंग की वारदात करने लगे थे। आरोपियों के खिलाफ वर्ष 2016, 2019 और 2022 में भी चोरी और चेन स्नेचिंग की वारदातें दर्ज हैं। पकड़े गए आरोपियों का नेटवर्क खंगाला जा रहा है। पुलिस को कई और वारदातें खुलने की संभावना है। दोनों आरोपियों को कोर्ट में पेश कर रिमांड लिया जाएगा।

अवैध अफीम के साथ दो आरोपी गिरफ्तार

उदयपुर, (कासं)। हाइवे पर चैकिंग के दौरान पुलिस ने बाइक सवार दो युवकों को अवैध अफीम परिवहन करते हुए गिरफ्तार किया है।

थानाधिकारी चन्द्रशेखर किलानिया ने बताया कि हैड कांस्टेबल भूपेन्द्र सिंह, कांस्टेबल सुरेन्द्र कुमार, रतनलाल, राम सिंह के साथ गश्त करने निकले थे। बाठेड़ा सराय में लगे पुलिस जाब्ते को चैक करने व सर्कल में गश्त करते हुए भमरासिया घाटी पहुँचे, जहां प्रकरण में वांछित आरोपियों की तलाश की जा रही थी। उसी दौरान करीब दोपहर बारह बजे भमरासिया पुलिया के नीचे एक बाइक पर दो व्यक्ति सवार होकर भमरासिया पुलिया के नीचे चितौड़गढ़ से उदयपुर की तरफ वाले रास्ते पर सर्विस रोड पर तेज रफ्तार से निकले और पुलिस जाब्ते को देखकर आंखे चुराते हुए निकले। जिनकी गतिविधी संदिग्ध लगने पर इनका पीछा किया तो न्यू राडाजी रेस्टोरेण्ट भमरासिया पुलिया के आगे उनको रूकवाया। पूछताछ में इन दोनों ने अपना नाम सुरेश पुत्र शंकर गायरी और कालूलाल पुत्र दौला माली निवासी नान्दोली निकुंभ चित्तौड़गढ़ होना बताया। बाइक के बाएं तरफ गियर लीवर के उपर ढक्कन खोलकर प्लास्टिक के डब्बे को खोलकर देखा गया तो प्लास्टिक की दो थैलियां रखी हुई थी, जिसमें अफीम भरी थी। आरोपी सुरेश गायरी व कालूलाल माली ने अफीम को उदयपुर बेचने के लिए जाना बताया। आरोपियों के पास 682 ग्राम अफीम मिली। आरोपियों को गिरफ्तार किया।

अधेड़ की मौत

उदयपुर, (कासं)। पत्नी के साथ बाइक पर सामाजिक कार्यक्रम से निवृत होकर जाते समय ऑटो ने बाइक को टक्कर मार दी। जिससे अधेड़ की मौत हो गई। नारायणलाल (57) पुत्र फूलाराम मीणा निवासी बुधाखेड़ा कपासन पत्नी लाली बाई के साथ रविवार को छापरी गांव में सामाजिक कार्यक्रम में गया था, जहां से सिंगपुर लौट रहा था। रास्ते में सामने से तेज गति में आए ऑटो चालक ने टक्कर मार दी। दम्पती को स्थानीय चिकित्सालय लेकर गए, जहां से नारायणलाल की स्थिति गंभीर होने पर एमबी चिकित्सालय रैफर कर दिया। जहां उपचार के दौरान अधेड़ ने दम तोड़ दिया।

ऑनलाइन गेमिंग के बहाने ठगी करने वाला गिरोह पकड़ा

उदयपुर, (कासं)। शहर की स्पेशल टीम और हिरणमगरी थाना पुलिस ने एक ऐसे गिरोह का पर्दाफाश किया है जो भोले-भाले लोगों ऑनलाइन गेमिंग खिलाने और उनके दस्तावेज प्राप्त कर उनके नाम से खाते खुलवाकर ठगी के पैसों को उनके खातों में मंगवाकर ऐश करते हैं। इस गिरोह में एक महिला है, जो एक निजी बैंक में जॉब करती है और वह बैंक में रहकर लोगों के खातों की डिटेल व हस्ताक्षर के नमूने अन्य आरोपियों को देती है। साथ ही भोले-भाले लोगों के नाम से बैंक में खाते भी खुलवाती है।

- महिला बैंककर्मी भी गिरफ्तार

एसपी योगेश गोयल ने बताया कि पुलिस मुख्यालय ने साईबर अपराधों की रोकथाम के लिए एक विशेष अभियान ऑपरेशन साईबर शील्ड चलाया जा रहा है। इसमें गठित टीम को सूचना मिली कि एक महिला सहित तीन लोग भोले-भाले लोगों से दस्तावेज लेकर उनके नाम से बैंक में खाते खुलवाकर ठगी का पैसा इन लोगों के अकांउट में मंगवाकर धोखाधड़ी करते हैं। ये बदमाश कार लेकर भाग रहे हैं। इस पर पुलिस टीम ने नाकाबंदी कर एक कार सवार एक युवती सहित तीन आरोपियों को गिरफ्तार किया। पूछताछ में आरोपियों ने अपने नाम आयुष पुत्र गिरीराज, पूजा पुत्री प्रभुराम और राजेन्द्र कुमार पुत्र करताराम बताया है।

पूछताछ में सामने आया कि तीनों आरोपी भोले-भाले लोगों को लालच देकर अवैध रूप से संचालित गेमिंग वेबसाइट पर क्रिकेट तथा अन्य खेलों पर सट्टे का दाव लगवाने के लिए प्रेरित करने एवं दाव पर लगाए रूपयों को अन्य आम व्यक्तियों को धोखे में रख उनके नाम पर खुलवाए गए बैंक खातों में डलवा कर ठगी करते थे। गिरफ्तार आरोपियों के कब्जे से ऑनलाइन गेमिंग के माध्यम से साइबर ठगी करने में प्रयुक्त लेपटॉप, मोबाइल, सैकड़ों की तादाद में सिम व विभिन्न फर्मों की मोहरें, चैक बुकें, एटीएम कार्ड व फर्जी खाता धारकों की पासबुक इत्यादि सामग्री पाई गई।

जम्मू-कश्मीर के मुख्यमंत्री की ओर से अजमेर दरगाह में चादर पेश

देश एवं प्रदेश में अमन चैन एवं खुशहाली की दुआ मांगी

अजमेर, (कासं)। सूफी संत हजरत ख्वाजा मोइनुद्दीन हसन चिश्ती के 813वें सालाना उर्स के अवसर पर जम्मू-कश्मीर के मुख्यमंत्री उमर अब्दुल्ला एवं नेशनल कांफ्रेंस के सदर डॉ. फारूक अब्दुल्ला की तरफ से सोमवार को ख्वाजा साहब के आस्ताने शरीफ में मखमली चादर एवं अकीदत के फूल पेश कर देश एवं प्रदेश में अमन चैन एवं खुशहाली की दुआ की।

- खादिम सैयद फकरे मोइन चिश्ती एवं सैयद दानिश मोइन ने चादर पेश कराई

मुख्यमंत्री अब्दुल्ला की चादर नेशनल कांफ्रेंस जम्मू के सदर शौकत अहमद मीर एवं डॉ. उमर फारुकी की अगुवाई में प्रतिनिधि मंडल लेकर अजमेर पहुंचा। खादिम सैयद फकरे मोइन चिश्ती एवं सैयद दानिश मोइन ने दस्तारबंदी कर चादर पेश कराई। दरगाह में बुलंद दरवाजे पर जम्मू-कश्मीर के मुख्यमंत्री उमर अब्दुल्ला एवं नेशनल कांग्रेस के सदर डॉ. फारूक अब्दुल्ला की ओर से भेजा संदेश को पढ़कर सुनाया गया।

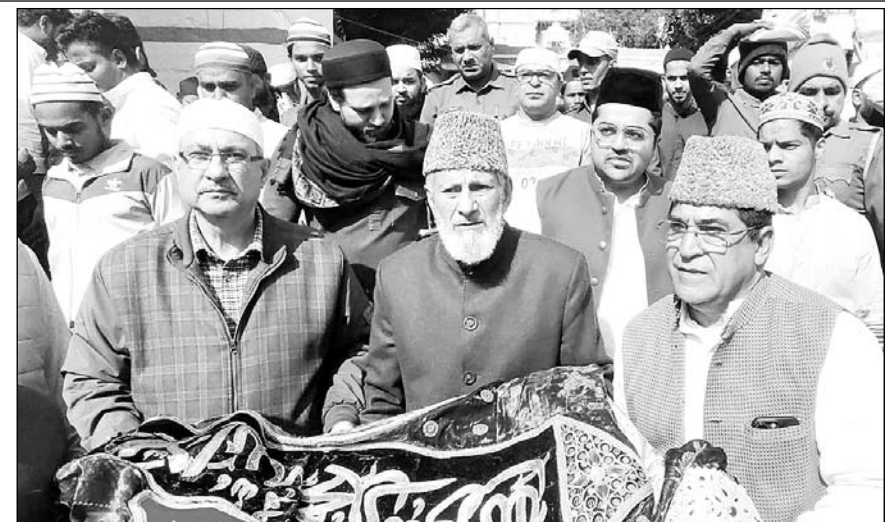
मुख्यमंत्री अब्दुल्ला की ओर से चादर नेशनल कांफ्रेंस जम्मू के सदर शौकत अहमद मीर एवं डॉ. उमर फारुकी की अगुवाई में प्रतिनिधि मंडल लेकर अजमेर पहुंचा।

संदेश में देशवासियों को ख्वाजा साहब के 813 उर्स की मुबारकबाद देते हुए कहा कि हमारे देश एवं प्रदेश में अमन-चैन खुशहाली भाईचारा बना रहे और ख्वाजा साहब के सूफीवाद के माध्यम से आपस में प्यार मोहब्बत से रहे। हम सबको उनके बताएं मार्ग चलने की जरूरत है, देश में अंदरुनी एवं बाहरी ताकतें नफरत फैलाने का प्रयास कर रही है उनके मंसूबे कतई कामयाब ना हों, जम्मू-कश्मीर में तरक्की करे और सूबे में खुशहाली हो।

शमशान घाट पर शव के अंतिम संस्कार को लेकर हंगामा

लोगों ने गेट पर ताला लगाया, शव को सड़क पर लेकर बैठे परिजन

पावटा, (निसं)। ग्राम भांकरी के बाबा गोपालदास स्थान के पास कई वर्षों पुराना शमशान घाट है, जहां शमशान घाट में जाने के लिए एकमात्र रास्ता है, जिसे लेकर सोमवार को शव के अंतिम संस्कार को लेकर विवाद खड़ा हो गया।

ग्राम भांकरी में एक अधेड़ की मौत के बाद परिजन शव का अंतिम संस्कार करने शमशान घाट पहुंचे, जहां पर मुख्य गेट पर ताला लगा था। इस पर शव रखकर परिजन व ग्रामीण तीन घंटे तक इंतजार करते रहे, लेकिन ताला नहीं खोला गया। इसकी सूचना मिलने पर प्रागपुरा थाना प्रभारी राजेश कुमार, गिरदावर मौके पर पहुंचे। लंबी जद्दोजहद के बाद घाट का ताला खुलवाया गया। इसके बाद शव का अंतिम संस्कार किया गया।

- प्रशासन ने दोनों पक्षों से समझाइश कर इस तरह की लापरवाही नहीं बरतने की नसीहत दी

जानकारी के अनुसार भांकरी निवासी भगवान सहाय का सोमवार को निधन हो गया था। सोमवार को परिजन शव का अंतिम संस्कार करने समाज के शमशान घाट गए। वहां देखा तो मुख्य गेट पर ताला लगा था। इस पर शव रखकर लोग काफी देर तक इंतजार करते रहे, लेकिन आधे घंटे बाद ताला नहीं खुलने पर पुलिस को सूचना दी गई। जिस पर प्रागपुरा थाना प्रभारी राजेश कुमार व गिरदावर शशिधर यादव मौके पर पहुंचे और समझाइश की गई। शमशान का ताला नहीं खुलने से नाराज हुए मृतक के पुत्र दाताराम, जगन, सुरेश, विक्रम व ग्रामीण मुखराम धनखड, सुल्तान टोकस, हेमंत धनकड़, कैलाश धनकड़, हरिसिंह वकील, बाबूलाल धनकड़, धर्मचंद, हवासिंह, कुलदीप, सांवलराम सहित समाज के लोग व ग्रामीण शव को सीसी रोड के बीच लेकर बैठ गए व आक्रोश जताया।

इस पर प्रागपुरा थाना प्रभारी राजेश कुमार व गिरदावर शशिधर यादव ने ताला खुलवाने का आश्वासन दिया। करीब तीन घंटे बाद प्रशासन की मौजूदगी में शमशान घाट का ताला खोला गया। इस दौरान प्रशासन ने दोनों पक्षों के लोगों से समझाइश करते हुए भविष्य में इस तरह की लापरवाही नहीं बरतने की नसीहत दी। शाम सात बजे शव का अंतिम संस्कार किया गया।

परंपरागत जलस्त्रोतों का जीर्णोद्धार कर अधिक से अधिक जल का संचय करें : दिलावर

जयपुर। पंचायती राज मंत्री मदन दिलवर ने कहा कि परंपरागत जल स्त्रोतों का जीर्णोद्धार कर अधिक से अधिक जल का संचय करें।

दिलावर आज सोमवार को शिक्षा संकुल में आयोजित जलग्रहण विकास एवं भू-संरक्षण विभाग की समीक्षा बैठक में अधिकारियों को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि परंपरा गत जल स्त्रोतों बावड़ी, तालाब, कुंड, खड़ीन, जोहड़ आदि का पुनः सर्वे कर चिन्हित करने के कार्य को अभियान के रुप में लें। साथ ही इनमें पानी की आवक के रास्ते बनाने, नियमित साफ सफाई करने जैसे कार्य इसी वित्तीय वर्ष में करने के निर्देश दिए।

विभाग के कार्यों के संचालन के लिए बनाई गई कमेटियों को क्रियाशील करने के भी निर्देश दिए।

उन्होंने डिग्गी-मालपुरा में तालाब की डीपीआर शीघ्र बनाने के निर्देश देते हुए कहा कि इसके अलावा भी बड़े गड्ढों को तालाब के रूप में परिवर्तित किया जाय ताकि जल का ज्यादा से ज्यादा संग्रहण किया जा सके।नदियों के किनारे भूमि कटाव को भी रोका जाय।

उन्होंने विभाग द्वारा बनाये गए 75 अमृत सरोवर, 863 एनीकट की विस्तार से जानकारी ली।उन्होंने वाटर हार्वेस्टिंग सिस्टम के जरिए कृषि उत्पादन बढ़ाने ,होर्टीकल्चर गतिविधियों के माध्यम से प्लांटेशन करने फलदार पौधे लगाने, घास उत्पादन बढ़ाने, ड्रिप सिस्टम लगाने एवं आमजन से सजीव सम्पर्क बनाये रखने के लिए अधिकारियों को समय-समय

■ **परंपरा गत जल स्त्रोतों बावड़ी, तालाब, कुंड, खड़ीन, जोहड़ आदि का पुनः सर्वे कर चिन्हित करने के कार्य को अभियान के रुप में लेने के निर्देश**

पर गांवों में रात्रि विश्राम करने के निर्देश दिए।

इस बैठक में विभाग के आयुक्त श्रीराम मीना एवं अधिकारी उपस्थित थे।

दिलावर ने विलायती बबूल के बढ़ते हुए फैलाव पर चिंता व्यक्त करते हुए कहा की इसको समूल नष्ट करने के लिए ग्राम पंचायत स्तर पर कार्ययोजना अतिशीघ्र तैयार करने के निर्देश दिए।

शिक्षा एवं पंचायती राज मंत्री मदन दिलावर ने बैठक में अधिकारियों को निर्देशित किया कि इसी वित्त वर्ष में लक्ष्य लेकर प्रदेश के 220 एनीकेट और 50 बावड़ियों का जीणोद्धार करवाया जाए। और 31 मार्च तक इस को पूर्ण किया जाए।

28 फरवरी तक बनेंगे वाटर हार्वेस्टिंग सिस्टम शिक्षा मंत्री श्री दिलावर ने कहा कि इस वित्तीय वर्ष में आपके प्रोजेक्ट में 1885 पंचायतें है। इन सभी पंचायतों के भवनों एवं इनके अंतर्गत आने वाले सभी उच्च माध्यमिक विद्यालयों में 28 फरवरी तक वाटर हार्वेस्टिंग सिस्टम रिचिंग सॉफ्ट के साथ बनाए जाए।

शिक्षा एवं पंचायती राज मंत्री मदन दिलावर ने आज यहां वाटरशेड के अधिकारियों की बैठक में नाराजगी जाहिर करते हुए कहा कि अधिकारी आवश्यक रूप से गांव में रात्रि विश्राम कर ग्रामीणों की समस्याओं से अवगत हो। दिलावर ने कहा कि पूर्व में भी इस बाबत निर्देश जारी कर दिए गए थे किंतु लगता है अभी तक अधिकारियों ने इसे गंभीरता से नहीं लिया है। मंत्री ने नाराजगी प्रकट करते हुए कहा कि आपके पास सरकारी वाहन है। सुविधाएं हैं, फिर भी आप ग्रामीण क्षेत्रों में फील्ड में प्रवास नहीं कर रहे हैं। तो फिर गाड़ी की क्या आवश्यकता है। क्यों ना आप से गाड़ी वापस ले ली जाए। मंत्री ने कहा कि अगली बैठक में जब हम मिले तो मुझे फील्ड की पूरी रिपोर्ट चाहिए।

राम कथा में हुआ राम-जानकी विवाह प्रसंग

अजमेर रोड पर नीलकंठ कॉलोनी स्थित श्री शुक संप्रदाय की आचार्य पीठ श्री बरसाना में शुक सम्प्रदाय पीठाधीश अलबेली माधुरी शरण महाराज ने श्रीराम कथा का वाचन किया।

जयपुर। श्री शुक सम्प्रदाय पीठाधीश छोटे दादा गुरुदेव श्री रसिक माधुरी शरण जी महाराज के 126 वें जयंती महोत्सव के उपलक्ष्य में श्री सरस परिकर की ओर से अजमेर रोड पर नीलकंठ कॉलोनी स्थित श्री शुक संप्रदाय की आचार्य पीठ श्री बरसाना में शुक सम्प्रदाय पीठाधीश अलबेली माधुरी शरण महाराज के सान्निध्य में हो रही नौ दिवसीय श्रीराम कथा में सोमवार को भगवान राम के राज्याभिषेक की तैयारी, वनवास, निषादराज और केवट से भेंट के प्रसंग हुए। इससे पूर्व व्यासपीठ से आचार्य राजेश्वर ने राम-जानकी विवाह की कथा का श्रवण कराया। राम-जानकी प्रसंग सुन पूरा पांडाल खुशी से झूठ उठा।

भगवान राम और सीताजी के चित्रपट का फूलों और चंदन से श्रृंगार किया गया। आचार्य राजेश्वर ने कहा कि सीता स्वयंवर में धनुष पर प्रत्यंचा चढ़ाना कोई सरल कार्य नहीं था। राम ने जनकपुर के स्वयंवर में अपनी अद्भुत वीरता दिखाई और जिस धनुष को राजा-महाराजा हिला नहीं सकें उस धनुष को उठाकर रामजी ने सीता से विवाह किया। सीता ने रामजी के गले में वर माला डालकर उन्हें पति के रूप में स्वीकार किया। राम कथा में राम सीता के विवाह का दृश्य भी दर्शाया गया। उन्होंने कहा कि जनकपुर से जब सीताजी की विदाई हुई तब उनके माता-पिता ने उन्हें ससुराल में कैसे रहना है इसकी सीख दी। प्रत्येक माता-पिता को अपनी पुत्री के विवाह के समय ऐसी ही

■ **श्रीराम कथा में भगवान राम के राज्याभिषेक की तैयारी, निषादराज और केवट से भेंट के प्रसंग हुए**

सीख देनी चाहिए। कन्या को ऐसा कोई कार्य नहीं करना चाहिए जिससे ससुराल और मायका दोनों कुल कलंकित हो। माता सीता ने पूरे जीवन अपने माता-पिता की सीख का पालन किया। राजा दशरथ के तीनों अन्य पुत्रों लक्ष्मण भरत, शत्रुघ्न के विवाह का भी श्रवण कराया। राजा दशरथ के चारों पुत्र संस्कारी थे। जो लोग कुल एवं संस्कारों में श्रेष्ठ होते है उनके विवाह में कोई बाधा नहीं आती है। पुत्री का सुख चाहने वाले माता-पिता स्वयं ऐसे कुल एवं संस्कारवान परिवारों का चयन करते है इसलिए जीवन में श्रेष्ठ आचरण करे।

श्री सरस परिकर के प्रवक्ता प्रवीण बड़े भैया ने बताया कि मंगलवार को दशरथ के देहांत, भरत का वन जाकर राम को वापस लाने का प्रयास, राम-भरत मिलन, राम का भारद्वाज सहित अन्य ऋषियों से मिलन की कथा होगी। रामगोपाल सराफ ने व्यासपीठ का पूजन किया। पंडित सुरेश मिश्रा, धीरेन्द्र माथुर, नरेश माथुर, गोपाल सिंह ने आरती उतारी । एडवोकेट प्रबल, सीए प्रशांत अग्रवाल सहित अन्य ने विभिन्न व्यवस्थाएं संभाली।

जयपुर फैशन एक्सपो 2025 का पोस्टर विमोचन

■ **जयपुर गारमेंट क्लब की ओर से चन्दन वन सीतापुरा में 10-11 जनवरी को जयपुर फैशन एक्सपो 2025 आयोजित किया जायेगा**

जयपुर। जयपुर गारमेंट क्लब की ओर से चन्दन वन सीतापूरा में 10-11 जनवरी को जयपुर फैशन एक्सपो 2025 इंटरनैक्शनल फैशन के कलर फुल ड्रेस के साथ आयोजित किया जायेगा। मीडिया प्रभारी मोहित टेलर ने बताया इस एक्सहिबिशन में ब्लैक एंड वाइट थीम और पेस्टल कलर चार्ट के साथ गोटा पत्ती और सिक्वेंस स्ट्रिप प्रिंट, व्राइबेंट् कलर , बगरू प्रिंट , सांगानेरी प्रिण्ट से बने परिधान रैंप शो केश किया !फैशन के मिश्रण के माध्यम से एथनिक और फ्यूजन वियर श्रेणी के तहत डिजाइनर अनारकली , कुर्तियों, प्लाजो सूट सेट, इण्डो वेस्ट्रन लहंगा, कुर्तीस ब्लाउज सेट आदि डिस्प्ले किये जायेगे।

पोस्टर विमोचन में गारमेंट क्लब के अध्यक्ष दीपक जैन , सेक्रेटरी अशोक गुप्ता ,भाजपा प्रदेश प्रभारी अशोक सैनी, शंकर जोशी ,सिद्धार्थ जैन,केशव शुक्ला,किशनचंद, आदि मौजूद रहे।

इस एग्जीबिशन में देश-भर के गारमेंट एजेंट्स भी शामिल है ,जयपुर के अनुभवी गारमेंट मैन्युफैक्चरर अपनी अपनी गारमेंट स्टॉल के माध्यम से अपना अपना कलेक्शन के माध्यम से बायर से ऑर्डर लिए जायेगे।

यहां इस ऐग्जीबिशन में नेपाल,यूएसए,लंदन,बंगलौर,हैदराबाद ,चेन्नई,अहमदाबाद,भोपाल,उड़ीसा, छत्तीसगढ़ ,दिल्ली, गोवा , रायपुर ,कोटा, भीलवाड़ा ,इन्दौर,आसाम , कलकत्ता आदि जगह से कस्टमर ने होलसेल में सभी मैन्युफैक्चर को ऑर्डर दिया जाएगा।

ये एक्ज़ीबिशन मैन्युफैक्चर टू होलसेलर के लिए रखा जाएगा। इस एक्ज़ीबिशन के माध्यम से सीतापुरा और मानसरोवर के टॉप 60 मैन्युफैक्चर को काफ़ी ऑर्डर मिलने की संभावना है। इस फेयर में अनुमानित 2000 होलसेलर कस्टमर आयेगे। इस एग्जीबिशन में कॉटन ,रेयोन, शिफ़ॉन,जोरजट,सिल्क से बने कुर्तिस, स्कर्ट, प्लाज़ो सेट, अनारकली, जम्पसूट्स इण्डियन एंड वेस्ट्रन परिधान डिस्प्ले किया जाएगा।

जयपुर के सभी विद्यालयों में कक्षा 8 तक 7 व 8 जनवरी का अवकाश

जयपुर। शीतलहर एवं बढ़ती हुई सर्दी को देखते हुए 7 जनवरी एवं 8 जनवरी तक जयपुर जिले में संचालित समस्त राजकीय एवं गैर राजकीय विद्यालयों में अध्ययनरत कक्षा 1 से 8वीं तक के विद्यार्थियों के लिए अवकाश घोषित किया गया है।

मुख्य जिला शिक्षा अधिकारी एवं पदेन जिला परियोजना समन्वयक समग्र शिक्षा मंजू शर्मा ने बताया कि मौसम विभाग द्वारा जारी पूर्वानुमान के आधार पर जिले में शीत लहर एवं बढ़ती हुई ठंड को देखते हुए जिला कलक्टर एवं जिला मजिस्ट्रेट जयपुर के निर्देशों की अनुपालना में फैसला लिया गया है। जिसके तहत जिले में संचालित कक्षा एक से 8 तक के समस्त सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यालयों में अध्ययनरत

■ **शीतलहर एवं बढ़ती हुई सर्दी को देखते हुए अवकाश घोषित किया गया**

छात्र-छात्राओं का 7 जनवरी से 8 जनवरी तक का अवकाश घोषित किया गया है।

उन्होंने बताया कि अवकाश केवल छात्र-छात्राओं के लिए लागू रहेगा तथा समस्त स्टाफ के शिक्षक एवं कर्मचारी विद्यालय में उपस्थिति देना सुनिश्चित करेंगें। आदेशों की अवहेलना होने की स्थिति में संबंधित संस्था प्रधान अथवा कार्मिकों के विरूद्ध अनुशासनात्मक कार्यवाही अमल लाई जाएगी।

चित्रलेखा के मंचन के साथ 7वें राजरंगम् का समापन

जयपुर। संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार और एक्टर्स थिएटर एट राजस्थान के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित 7वां राजरंगम् रंगमंच के रंगों से सराबोर करने के बाद सोमवार को विदा हुआ। अंतिम दिन चित्रलेखा नाटक का मंचन किया गया जिसका निर्देशन व नाट्यय रूपांतरण वरिष्ठ नाट्यय निर्देशक धीरज भटनागर ने किया। पद्म भूषण अलंकृत साहित्यकार भगवती चरण वर्मा की कृति चित्रलेखा पर आधारित नाट्यय प्रस्तुति में अभिनय, संगीत और नृत्य का समागम देखने को मिला जिसे दर्शकों की खूब सराहना मिली।

सभागार में प्रवेश करते ही दर्शक मंच पर मध्यकालीन भारत की छवि देखते हैं। महल और योगी की कुटिया को दर्शाने के लिए लकड़ी से सेट तैयार किया गया जिस पर बने चित्र दर्शकों का ध्यान अपनी ओर खींचते हैं। मंच पर अभिनेता आशुतोष राणा की आवाज में गूंजते शिव तांडव पर नृत्य के साथ नाटक की शुरुआत होती है जिसका भावानुवाद आलोक श्रीवास्तव ने किया है। आचार्य रत्नांबर के दो शिष्य श्वेतांक और विशालदेव अपने गुरु से पाप और पुण्य में अंतर पूछते हैं, इस पर आचार्य उन्हें संसार से ही ज्ञानार्जन की शिक्षा देते हैं। दोनों अपने-अपने रास्ते पर निकलते हैं, श्वेतांक पाटलिपुत्र के सामंत बीजगुप्त और विशालदेव योगी कुमारगिरि के पास पहुंच जाता है। यहीं से दोनों की शिक्षा शुरू होती है। चित्रलेखा जो अपने नृत्य कौशल और सुंदरता के लिए पूरे

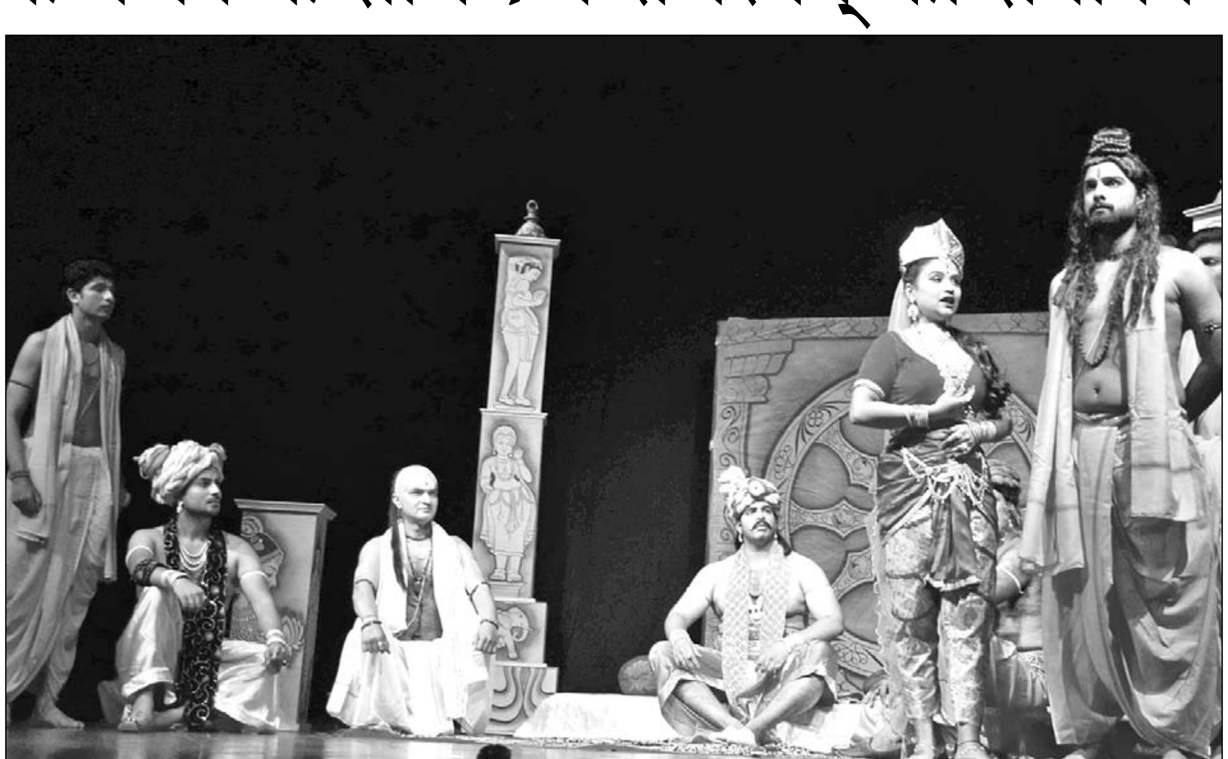

राजरंगम् के अंतिम दिन चित्रलेखा नाटक का मंचन किया गया।

पाटलिपुत्र में प्रसिद्ध है वह बीजगुप्त की प्रेयसी भी है।

चित्रलेखा ही इस नाटक का केन्द्र भी है। कुमारगिरि वैराग्य को श्रेष्ठ मानते हैं तो बीज गुप्त और चित्रलेखा के लिए भोग विलास ही सब कुछ है। अनायास कुमारगिरि और चित्रलेखा की मुलाकात होती है। चित्रलेखा के ज्ञान से कुमारगिरि प्रभावित होते हैं। चित्रलेखा कुमारगिरि से दीक्षा लेने वन में जाती है लेकिन परिस्थितिजन्य कारणों से दोनों फिर मुख्यधारा के जीवन में लौट आते हैं। इधर बीजगुप्त सन्यास धारण कर लेते हैं। अंततः चित्रलेखा और कुमारगिरि को आत्मज्ञान होता है और दोनों फिर विरक्त की ओर अग्रसर होते हैं। श्वेतांक और विशालदेव दोनों को ज्ञात होता है कि ज्ञान तर्क की नहीं अनुभव की वस्तु है और पाप दृष्टिकोण की विषमता है जिसकी परिभाषा संभव नहीं है।

'साहित्य समाज को संवेदनशील बनाता है'

जयपुर। वरिष्ठ साहित्यकार फारूक आफरीदी ने कहा है कि साहित्य समाज को संवेदनशील और सहिष्णु बनाता है एवं सामाजिक बुराइयों के प्रतिकार के लिए प्रेरित करता है। वे "शब्द संसार" के तत्वावधान में प्राकृतिक योग आश्रम में वरिष्ठ लेखिका डॉ. सुषमा शर्मा की साहित्य समीक्षा की पुस्तक "कुछ कही, कुछ अनकही, अनसुनी" के लोकार्पण अवसर पर अध्यक्ष के रूप में बोल रहे थे। बहुभाषाविद डॉ, नरेन्द्र शर्मा कुसुम मुख्य अतिथि थे।

आफरीदी ने कहाकि साहित्य में आलोचना का विशेष महत्व है। इससे रचनाकार की कृति का सही मूल्यांकन होता पाठकों में अभिरुचि जगाता है। आलोचक की सही और निष्पक्ष समीक्षा लेखक के सृजन को मान्यता देती है। आज के लेखकों की प्रायोजित समीक्षाएं पाठकों का भरोसा तोड़ती हैं और यह साहित्य के साथ छल है।

सार-समाचार

जरूरतमंदों को गरम वस्त्र बांटे

जयपुर। सर्दियों की ठिठुरन भरी रातों में जरूरतमंदों और असहायों को ठंडी से बचाने हेतु शहर में विभिन्न सामाजिक संस्थाएं अपने अपने प्रयास से शहर भर में गरम वस्त्र व कंबल वितरण किए जा रहे हैं। इसी श्रृंखला में अध्यात्मिक प्रवक्ता खगुल कृष्ण भारद्वाज ने अपने सद्प्रयासों से 1100 का लक्ष्य लेकर संकल्पबद्ध होकर शहर भर के वृद्धाश्रमों, कुष्ठ आश्रमों में जरूरतमंदों और मंदिर देवालयों के समीप बैठे रहने वाले विकलांगों, भिक्षुओं को स्वयं जाकर अपने हाथों से कंबल वितरण कर सामाजिक समरसता और मानवता की सच्ची पहल कर रहे हैं। खगुल कृष्ण अध्यात्म परिकर के पदाधिकारी ने बताया दिसंबर और जनवरी माह में प्रतिदिन अध्यात्मिक प्रवक्ता खगुल कृष्ण भारद्वाज स्वयं सड़कों पर जाकर उन जरूरतमंदों को कंबल वितरण अभियान के अंतर्गत सर्द भरी रात में फुटपाथों पर बसेरा करने वालों को कंबल प्रदान कर रहे हैं। उन्होंने बताया कि यह अभियान जनवरी माह तक चलेगा।

10 प्रतिभाओं को सम्मानित किया

जयपुर। आगरा रोड स्थित तरफ सीताराम-सरस्वती एनक्लेव सोसाइटी में रविवार को नववर्ष स्नेह मिलन एवं प्रतिभा सम्मान समारोह का आयोजन किया गया। सोसायटी अध्यक्ष रामावतार खंडेलवाल एवं सचिव गौरीशंकर जंगम ने बताया कि प्रति वर्ष होने वाले समारोह में 10वीं व 12वीं कक्षा में 75 प्रतिशत से अधिक अंक लाने वाले 10 छात्र-छात्राओं को प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया गया। उन्होंने बताया कि समारोह का उद्देश्य कॉलोनीवासियों से मेल मिलाप और आत्मीयता बढ़ाना है। समारोह में प्रसादी का भी आयोजन किया गया जिसमें कॉलोनी के 500 से अधिक बाशिंदों ने लजीज भोजन का लुत्फ उठाते हुए आपस में नववर्ष की शुभकामनाएं दी। इस दौरान पूर्व अध्यक्ष केके शर्मा, सुरेश गुप्ता, अंकित शर्मा, राजेश शर्मा सहित सैकड़ों लोग उपस्थित रहे।

अरमान अग्रवाल ने जीता रजत पदक

जयपुर। जयपुर के स्कूली छात्र, अरमान अग्रवाल ने चाइना के शेनझेन में आयोजित वर्ल्ड इंटरनेशनल मैथेमेटिकल ओलंपियाड में रजत पदक जीतकर न केवल अपने शहर का बल्कि पूरे देश का नाम रोशन किया है। अरमान इस प्रतिष्ठित प्रतियोगिता में हिस्सा लेने वाले भारत से एकमात्र छात्र थे। वे जयपुर के जयश्री पेड़ीवाल इंटरनेशनल स्कूल (जेपीआईएस) के छात्र हैं। अरमान की सफलता पर स्कूल प्रिंसिपल, शिक्षकों और समस्त स्टॉफ ने बधाई दी और उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की। अरमान ने अपनी इस उपलब्धि का श्रेय अपने माता-पिता और स्कूल के शिक्षकों को दिया। इस अवसर पर स्कूल की जयश्री पेरीवाल ग्रुप ऑफ स्कूल की चेयरपर्सन, डॉ जयश्री पेरीवाल ने प्रसन्नता व्यक्त करते हुए कहा कि अरमान की यह उपलब्धि न केवल उनके परिवार और स्कूल के लिए गर्व की बात है, बल्कि देश के युवाओं के लिए भी एक बड़ी प्रेरणा है।

पीड़ित मानवता की सेवा में फ्लोरेंस नाइटिंगेल का अमिट योगदान : खींवसर

जयपुर। चिकित्सा एवं स्वास्थ्य मंत्री गजेन्द्र सिंह खींवसर ने कहा कि राज्य सरकार प्रदेश में स्वास्थ्य सेवाओं के उन्नयन के लिए प्रतिबद्धता के साथ काम कर रही है।

हमारा प्रयास है कि प्रदेश में नर्सेज एवं पैरामेडिकल स्टाफ के सभी रिक्त पदों पर जल्द से जल्द भर्ती हो और गांव-ढाणी तक बेहतरीन स्वास्थ्य सेवाएं सुलभ हों। उन्होंने कहा कि चिकित्सा एवं स्वास्थ्य विभाग में अल्पकाल में ही 20 हजार से अधिक रिक्त पदों पर भर्ती प्रक्रिया पूर्ण की गई है।

खींवसर सोमवार को राजस्थान नर्सिंग काउंसिल के परिसर में आधुनिक नर्सिंग की जननी फ्लोरेंस नाइटिंगेल की प्रतिमा के अनावरण समारोह को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने काउंसिल परिसर में फ्लोरेंस नाइटिंगेल की प्रतिमा का अनवारण किया एवं पौधारोपण किया।

चिकित्सा मंत्री ने कहा कि फ्लोरेंस नाइटिंगेल पीड़ित मानवता की सेवा की प्रतिमूर्ति थीं। इस क्षेत्र में उनका अमिट योगदान रहा है। उन्होंने न केवल रोगियों की सेवा की, बल्कि अस्पतालों में स्वच्छता और देखभाल के मानकों को भी बेहतर बनाया।

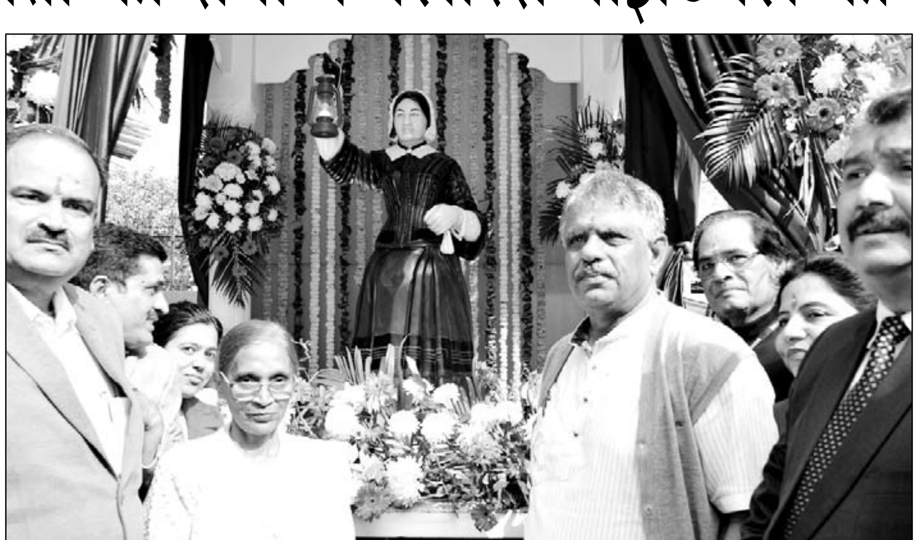

चिकित्सा मंत्री गजेन्द्र सिंह खींवसर ने सोमवार को राजस्थान नर्सिंग काउंसिल के परिसर में आधुनिक नर्सिंग की जननी फ्लोरेंस नाइटिंगेल की प्रतिमा का अनावरण किया।

क्रीमिया युद्ध के दौरान उन्होंने घायल सैनिकों की सेवा की, जिससे उन्हें 'लेडी विद द लैम्प' के रूप में पहचान मिली। उन्होंने नर्सिंग को एक सम्मानजनक पेशा बनाया और महिलाओं को सशक्त भी किया। उनका समर्पण और सेवा सबके लिए प्रेरणादायी है।

खींवसर ने कहा कि राज्य सरकार नर्सिंग एवं पैरामेडिकल सेवाओं को विशेष महत्व दे रही है। पूर्ववर्ती सरकार के समय भर्तियां नहीं होने से नर्सिंग सेवाएं चरमरा गई थीं। राज्य सरकार ने मिशन मोड में भर्तियां कर नर्सिंग सेवा के रिक्त पदों को काफी हद तक भर दिया है। शेष रिक्त पदों को भी शीघ्र भर दिया जाएगा।

उन्होंने कहा कि रिक्तियों को

■ **राजस्थान नर्सिंग काउंसिल में फ्लोरेंस नाइटिंगेल की प्रतिमा का अनावरण समारोह**

भरने के साथ-साथ पदस्थापन में पूरी पारदर्शिता रखते हुए पोर्टल के माध्यम से नवचयनित कार्मिकों को वरीयता एवं मानवीय मापदण्डों के आधार पर नियुक्तियां दी गई हैं।

चिकित्सा मंत्री ने कहा कि राज्य सरकार ने राज्य हित में स्थानांतरण से प्रतिबंध हटाया है। चिकित्सा एवं स्वास्थ्य विभाग में पूरी पारदर्शिता एवं गाइडलाइन के आधार पर स्थानांतरण किए जाएंगे। उन्होंने कहा कि हमारा प्रयास है कि महिलाओं, दिव्यांगजन, गंभीर बीमारियों आदि से पीड़ित कार्मिकों को स्थानांतरण में प्राथमिकता मिले। भविष्य में यह भी सुनिश्चित किया जाएगा कि कोई भी अधिकारी एवं कार्मिक लंबे समय तक एक स्थान पर पदस्थापित नहीं रहे। सबको स्थानांतरण के माध्यम से राहत मिले। इसके लिए चिकित्सा विभाग स्थानांतरण नीति बना रहा है।

खींवसर ने कहा कि मुख्यमंत्री श्री भजनलाल शर्मा ने चिकित्सा के क्षेत्र को सर्वोच्च प्राथमिकता देते हुए अब तक का सर्वाधिक बजट प्रावधान किया है। राज्य सरकार ने प्रदेशवासियों को सुगमता के साथ उपचार उपलब्ध करवाने के लिए मुख्यमंत्री आयुष्मान योजना लागू की है। इसका दायरा लगातार बढ़ाया जा रहा है। बाहर के नागरिक प्रदेश में आकर एवं यहां के नागरिक बाहर जाकर इस योजना के तहत उपचार प्राप्त कर सकें, इसके लिए जल्द ही पोर्टेबिलिटी की सुविधा भी लागू की जाएगी। उन्होंने कहा कि प्रदेश में स्वास्थ्य सेवाओं को संकल्पबद्धता के साथ नई ऊंचाइयां दी जाएंगी।

राजस्थान नर्सिंग काउंसिल की रजिस्ट्रार भारती सिंह ने स्वागत उद्बोधन दिया एवं नर्सिंग काउंसिल की गतिविधियों से अवगत कराया। इस अवसर पर निदेशक जनस्वास्थ्य डॉ. रवि प्रकाश माथुर, निदेशक अराजपत्रित राकेश शर्मा, इण्डियन नर्सिंग काउंसिल के वाइस प्रेसीडेंट जोगिंदर शर्मा, आरएनसी के परीक्षा नियंत्रक अनिल चौधरी सहित वरिष्ठ अधिकारी एवं नर्सिंग सेवा के अधिकारी एवं कार्मिक उपस्थित थे।

Old Rock Day

Old Rock Day, despite some misconception, is not a day of celebrating classic Rock 'n' Roll tunes of days gone by. Instead, this is the day that geologists and amateur rock enthusiasts take it upon themselves to show their appreciation of all things fossilized and stony. Discover the beauty and history of the earth with these timeless treasures, that offer a glimpse into the past, and a connection to the natural world. One of the best things to do is learn more about the different kinds of old rocks.

#CAREER

Use social media to propel your career forward

A well-curated and strong social media presence is just as crucial for a data scientist as it is for a marketing manager. The key lies in the way you use social media and its functions in your favour.

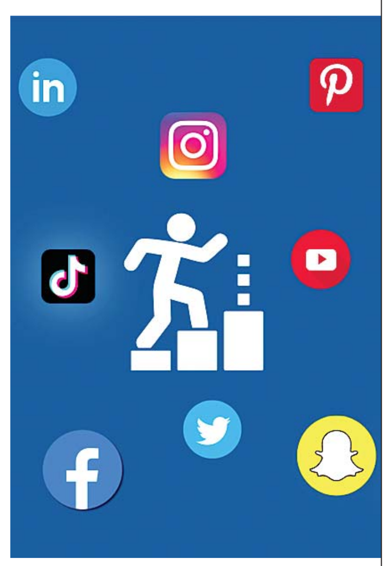

Over the last few years, social media has become an integral part of our everyday lives. Especially in today's digital age, it has become a tool that transcends its basic function of helping people stay connected and socialize. It has transitioned into a go-to method to strengthen professional identities.

A well-curated and strong social media presence is just as crucial for a data scientist as it is for a marketing manager. The key lies in the way you use social media and its functions in your favour.

Here are a few highly effective strategies to use social media to reach greater heights in your career journey.

1. **Build a personal brand:** Nowadays, it takes more than just your resume to convey your potential. The way you market yourself can set you apart from other individuals. Use platforms like LinkedIn, Twitter, and Instagram to showcase your achievements, skills, and expertise. Besides, to let people connect with you and get to know you better, you must regularly share insights, and express your views on the latest trends. For instance, if you are a marketing manager, you can create a post or a thread on innovative AI-driven marketing strategies and in-demand skills. A constant focus on showcasing thought leadership in the right way helps build the personal brand.
2. **Leverage the art of content creation:** People connect with content that is short, crisp, and yet insightful. While you may be busy with your 9 to 5 job, even if just once a week, you can post interesting blogs, short videos, and infographics to boost your visibility on your social media. Remember, the key here is to keep your content concise and easy to comprehend. No one has the time to read a 1000-word long piece delineating your views on a specific topic. Cut it down to a few points or a short clip summarizing it.
3. **Gain quick and direct access to job opportunities:** Gone are the days when job opportunities were accessible only through job portals. While LinkedIn is a one-stop platform for both networking and landing jobs, many companies have their social media pages or accounts even on Instagram where they post about upcoming job opportunities that you can keep track of. Along with this, there are many pages to only posting about vacancies across roles and sectors that you can follow. Also, they often use hashtags like #hiring, #jobsearch, #jobseekers and more to make it easier for you to easily get your hands on multiple such pages.
4. **Network beyond geographical boundaries:** Whether you are just starting out as a fresher or you are a mid-career professional, with extensive experience looking to change careers, you can leverage social media to establish a strong network, which can further assist you in landing many of the unlisted or hidden job opportunities. At the same time, networking will help you get in touch with many of the industry veterans, who can act as your mentors and push you in the right direction.

JAMSETJI TATA.

SWAMIJI, SCIENTISTS AND PERFORMING ARTISTES PART:2

It seems to me that no better use can be made of the ascetic spirit than the establishment of monasteries or residential halls for men dominated by this spirit, where they would live with ordinary decency and devote their lives to the cultivation of sciences, natural and humanistic. I am of the opinion that, if such a crusade in favour of an asceticism of this kind were undertaken by a competent leader, it would greatly help asceticism, science and the good name of our common country, and I know not who would make a more fitting general of such a campaign than Vivekananda. Do you think you would care to apply yourself to the mission of galvanizing into our ancient traditions in this respect? Perhaps, you had better begin with a fiery pamphlet, rousing our people in this matter. I would cheerfully defray all the expenses of publication.

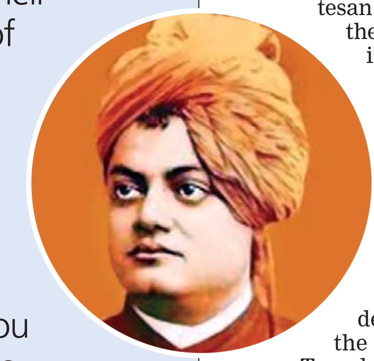

Maj. Chandrakant Singh VrC *(Retd)*
Military Historian

Vivekananda was not only a spiritual master, he was also a man of science and arts. If today, Bangalore is the Silicon Valley of India, and Indians are leading players in information technology, it is thanks to Swami Vivekananda. In September 1893, Jamsetji Tata and Vivekananda met by chance on board a ship travelling from Japan to North America. Raja Ajit Singh of Khetri had arranged for Swamiji to travel first class with a cabin to himself. Vivekananda requested Tata to establish a science research institute in India. The Maharaja of Mysore, Krishna Raja deva Wodeyar, pitched in with a grant of land in Bangalore and a generous financial donation. In 1909, the Tata, now Indian Institute of Science, was established, and it is the leading science institute in India.

Impressed by Swami Vivekananda's views on science and patriotism, Jamsetji sought his advice on the modalities of establishment of a research institute in India. Five years later, in 1998, Jamsetji Tata wrote to Vivekananda, requesting him to write a pamphlet on science education for Indians.

Dear Swami Vivekananda,

I trust that you remember me as a fellow traveller in your voyage from Japan to Chicago. I very much recall at this moment your views on the growth of the ascetic spirit in India, and the duty of not destroying but delivering it into useful channels.

I recall these ideas in connection with my scheme of Research Institute of Science for India, of which you have, doubtless, heard or read. It seems to me that no better use can be made of the ascetic spirit than the establishment of monasteries or residential halls for men dominated by this spirit, where they would live with ordinary decency and devote their lives to the cultivation of sciences, natural and humanistic. I am of the opinion that, if such a crusade in favour of an asceticism of this kind were undertaken by a competent leader, it would greatly help asceticism, science and the good name of our common country, and I know not who would make a more fitting general of such a campaign than Vivekananda. Do you think you would care to apply yourself to the mission of galvanizing into our ancient traditions in this respect? Perhaps, you had better begin with a fiery pamphlet, rousing our people in this matter. I would cheerfully defray all the expenses of publication.

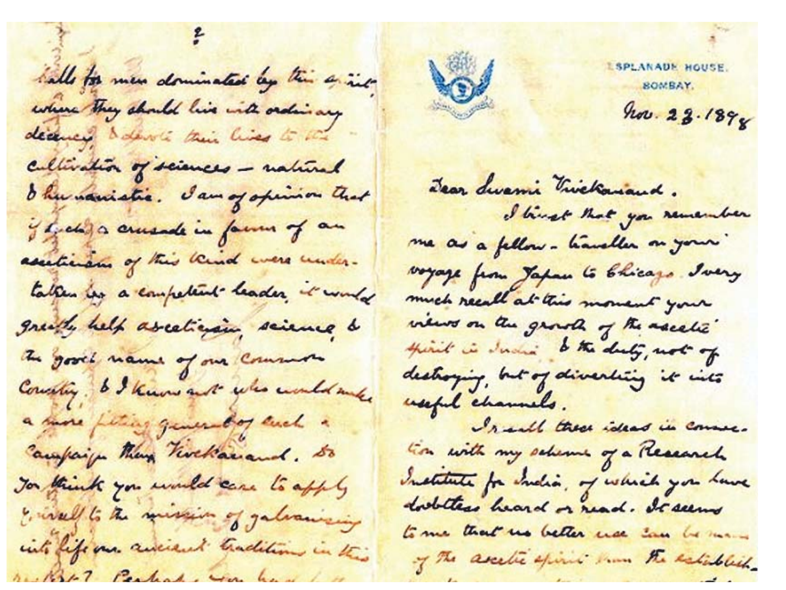
Esplanade House,
Bombay.
Nov. 23.1898

TATA'S LETTER TO SWAMIJI.

#THE SWAMI

Swami and Sir Patrick Geddes

SISTER NIVEDITA.

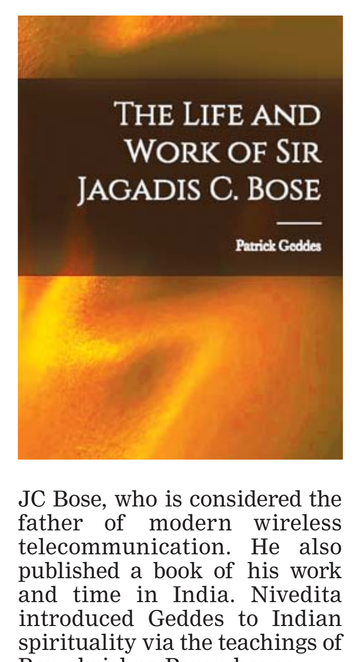

NIKOLA TESLA.

Not being able to spare time, Swami Vivekananda, in turn, asked his follower by Sister Nivedita (born Margaret Elizabeth Noble) to write the pamphlet and prepare the plan. In turn, Sister Nivedita wrote to Sir Patrick Geddes, a Scottish Polymath, whom Vivekananda had first met in 1890 in America, when both were lecturing in that country, and then later in Paris at the World Fair where Geddes had a stall. Geddes was biologist, environmentalist, sociologist, geographer, pioneering town planner and a positivist in his philosophy who believed that all new discoveries in science can be beneficial to human beings. Geddes authored several books, including a biography of the famous Indian scientist JC Bose, who is considered the father of modern wireless telecommunication. He also published a book of his work and time in India. Nivedita introduced Geddes to Indian spirituality via the teachings of Ramakrishna Paramhansa.

Nivedita asked Geddes to prepare a plan for the new science institute. Geddes responded with a panoramic survey of medieval and modern universities of America and Europe and how nature has conditioned occupation and institutions and how ideals have reconditioned spiritual and temporal life which have determined education and expressed themselves in literature, arts and science. However, when the institute was started in 1909, it had no department of geography or what Geddes termed nature study. It was only in 1980 that a department of Ecological Studies was opened. Sister Nivedita died in 1911. Three years later, Geddes, inspired by her memory, came to India and involved himself in town planning. During the course of his visit to India, Geddes came to Jaipur to study the traditional system of town planning in India and how it incorporated the needs of the court, commerce, common people, merchants and artisans.

IZIEYL

Here, it would not be out of place to describe the last scene of 'Izieyl,' who is a courtesan madly in love with the Buddha, who, having taken the vow of celibacy, has so far spurned her. She is also despised by his followers for her persistent attempts at distracting the Buddha during his meditation and they condemn her to death. The setting of the scene is a Kali Temple. The New York Herald of 19 January1896 summed up the scene. The fourth and last scene of the drama shows the place of execution. Izieyl has been submitted to all forms of torture, and is dying of hunger and pain. By her side stands Prince Siddharth, whom she cannot see, as her eyes have been gorged out. Then, the Prince feels that he is still a man. "I love thee," he cries. "O faith that I have blasphemed. O. faith that I betrayed! O faith let me be but a man like other men! Let me be meek and suffer like them! Let the world look elsewhere if it needs an apostle! I am but clay. Die not Izieyl be reborn in thy carnal and despised beauty! Thy voice restores me to myself to the immortal duties I have for a moment deserted."

"Oh! Master," she sighs. "Press me in thy arms. Lay thy hand on my heart. Give thy lips, there is time. I die" and Izieyl then feeling that finally she is 'his beloved' falls dead. I am reminded by this scene of an incident from the New Testament of The Bible where Jesus rescues the Samaritan woman from the mob. Certain similarities between Buddhist stories and those of the New Testament of the Bible should not be a surprise as many scholars now believe that early Christianity was influenced by Buddhisim for just a century before Palestine was a part of the Greek Seleucid Empire whose official religion was Buddhism. Buddhist artifacts are still being uncovered in the Middle East, the most recent being a statue of the Buddha at Berenike.

Buddha from Berenike.

Swami and Tesla

Were it not for the fact that Elon Musk, the maverick and the world's richest man not named his car Tesla after Nikola Tesla, Tesla would have been forgotten, which would have been sad because it was Tesla who laid the foundation stone for Einstein's Theory of Relativity and Max Planck's Quantum Theory. Tesla deserves more recognition than both Einstein and Max Planck because not only did he make new discoveries but also put them to practical use. He is maker of the electric AC Motor, which moves nearly all industrial machinery and much of road, rail, sea transport and some aircraft too, including the weaponised drones. The meeting in 1896 in Paris between Vivekananda and Tesla was at a party given by Sarah Bernhardt, who is considered the greatest actress, not only of her time but of all time. Some days earlier, Bernhardt had been playing the leading part in the play 'Izieyl,' a dramatized and fictional play based on an incident in the life of The Buddha. Bernhardt had spotted Swami Vivekananda in the audience, not a difficult thing to do, as he easily stood out in the crowd of spectators with his saffron turban. Tesla had also been invited to the party, and so impressed was he by Swamiji and his explanation of *Advaita* Philosophy that he became his follower, and thereafter started using the language, explanation and metaphor of Advaita Philosophy and the Upanishads, to explain his own scientific theories as the normal spoken languages of Europe were inadequate for this purpose.

VIVEKANANDA WITH TESLA.

Sarah Bernhardt.

Writing about Tesla, Swami Vivekananda wrote, "I know one of them personally (Tesla), who scarcely has time to eat his meals, but would stand by the hour to attend my lectures on Vedanta, for, as he expresses it, they are so scientific, they so exactly harmonise with the aspirations of the age and the conclusions to which modern science is coming, at the present time."

SUGGESTED FURTHER READING

Basing himself on as diverse sources as the stones of Ashoka in the East and Philo in the west, the author contends that the origin of Christianity is to be sought in the higher Judaism in Alexandria and Palestine. This Judaism was purely Buddhist, and the two remarkable works of higher Judaism, the Solar of the Kabbalah and the Codex Nazaraeus reproduce the theogony of Buddhism. The author shows that the New Testament, Christian Rites and teachings bear minute a resemblance to the Buddhist scriptures.

Prof. Lille, in the preface to his book, first published in 1887, says, "Thus, it has been shown by the Orientalist Prof. Wilson that the three *Avesthaka* (states of consciousness) of the Trinity have come from India. Colebrooke has pointed out that the hymns of the *Rig Veda*, though avowedly addressed to many deities, are according to the most ancient annotations of Indian scriptures, resolvable into a triad, and ultimately one God. It seems to result from the meaning of this triad, may be more profitably sought in ancient Indian texts than as vaticinations of the blunt and literal monks that composed the Council of Nicaea." These thoughts have been also expressed by Dr. Radhakrishna, our former philosopher president, in his seminal work, 'Eastern Sources of Western Thought.'

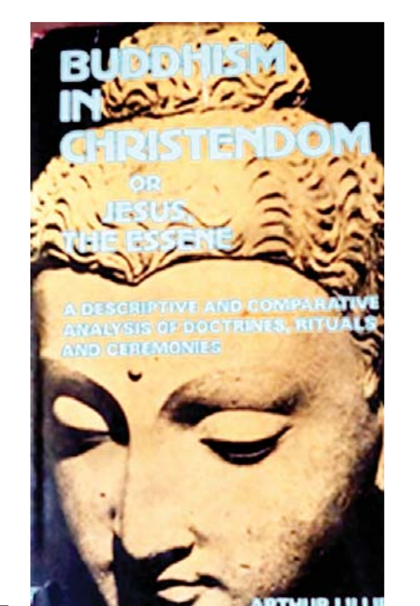

rajeshsharma1049@gmail.com

#SCIENCE

Do black holes really evaporate?

In 1974, Stephen Hawking proposed that black holes could evaporate. But do we understand how this might happen?

In 1974, Stephen Hawking put forward an intriguing idea. Using the principles of quantum physics, he predicted that even though nothing is supposed to escape a black hole's event horizon, these cosmic beasts can actually emit particles. And by ejecting these particles, black holes will shrink over a very long time, eventually evaporate and possibly explode.

Hawking sparked a debate that has continued for more than 50 years. The idea that black holes evaporate puts two fundamental tenets of physics, general relativity and quantum mechanics, into conflict. But, assuming that Hawking and others are correct, how would a black hole evaporate, leaving nothing behind? Before we explore this mind-bending idea, it's important to know that theoretical physicists are still debating how it's possible. But in the past few decades, a number of potential explanations have emerged for how black holes seem to defy the rules of our universe by disappearing.

"We spent the last 50 years fighting about it," says Daniel Harlow, a physicist at MIT. "I would say now we understand it a lot better than Hawking did." Albert Einstein predicted the existence of black holes in 1915 with his theory of general relativity, which explains how gravity is a property of space-time's curvature. Based on this theory, black holes are objects with a lot of mass compressed into a singular area, where gravity is so strong that even light can't escape its pull. "According to general relativity, everything can only go inside (a black hole) and nothing can ever come out," said Heino Falcke, an Astrophysicist at Radboud University in the Netherlands, who was involved in capturing the first image of a black hole in 2019. "Everything thrown in is completely crushed into a point." But around 60 years later, Hawking's calculations showed that perhaps not everything is crushed by black holes. In quantum mechanics, pairs of particles, particles and antiparticles, blink in and out of existence. These particles usually cancel each other out.

But Hawking argued that fluctuations of fields at the event horizon, a black hole's 'point of no return,' beyond which nothing can escape, means that these particles don't always cancel out. One of those particles can get sucked into the black hole, while the other gets ejected into space, leaving behind a cloud called Hawking radiation. As more and more particles are ejected, black holes begin to lose energy and mass, and eventually disappear, according to this theory. This process would be very slow. A black hole with a mass of the sun could take 10^67 years to fully evaporate, longer than the current age of the universe. And scientists are yet to find evidence for this. Black holes do not seem to release thermal radiation, meaning that Hawking radiation may not be detectable. Some scientists are trying to get a peek at this elusive radiation in labs and on tiny black holes, which are posited to evaporate more quickly than the ones in our galaxy would.

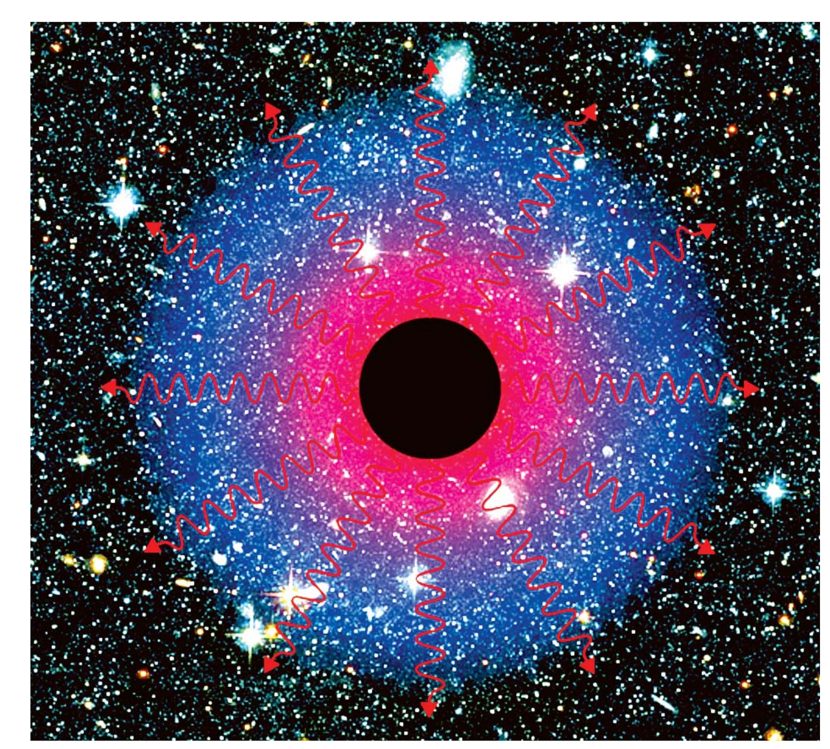

Black Hole Paradox

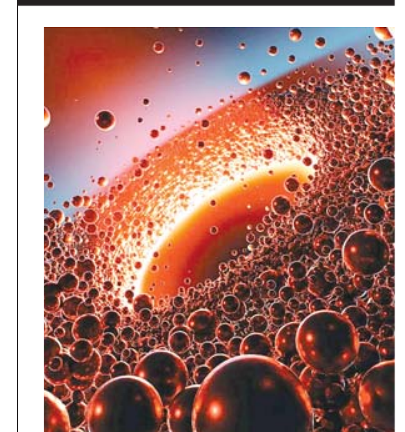

However, Hawking's idea has a few caveats that lead to confounding questions. Evaporation introduces a conundrum called the *black hole information paradox*. If a black hole evaporates and disappears, the particles it leaves behind are missing information on the matter's original state. This violates a core concept in physics, that a system in one point in time should determine, or reflect, its state in another, also known as predictability.

Scientists are still debating how to resolve this paradox. "The amazing thing about Hawking's paradox is that any resolution of it requires you to give up some sacred principle of physics," Harlow said. Hawking's solution was to give up predictability, as he lamented in a 1976 paper. Some physicists are examining the laws around thermodynamics to solve this discrepancy, and how entropy affects quantum information. Another group of physicists is examining locality, the principle that objects are directly influenced only by their immediate surroundings. They believe the information paradox can be resolved through something called quantum nonlocality, the idea that particles inside a black hole share their quantum state with correlated particles outside it. Despite the progress in understanding black hole evaporation, mysteries continue to pile up. In a 2023 study in the journal *Physical Review Letters*, Falcke and colleagues argued that the information paradox may not be limited to black holes. By rederiving Hawking's calculations, the team proposed that all objects may have the same problem. All things may be evaporating, thus deepening the puzzle. "There's something in the world we cannot explain," Falcke said. "But, you know, by creating more mysteries, we may actually be a step closer to a solution eventually."

THE WALL

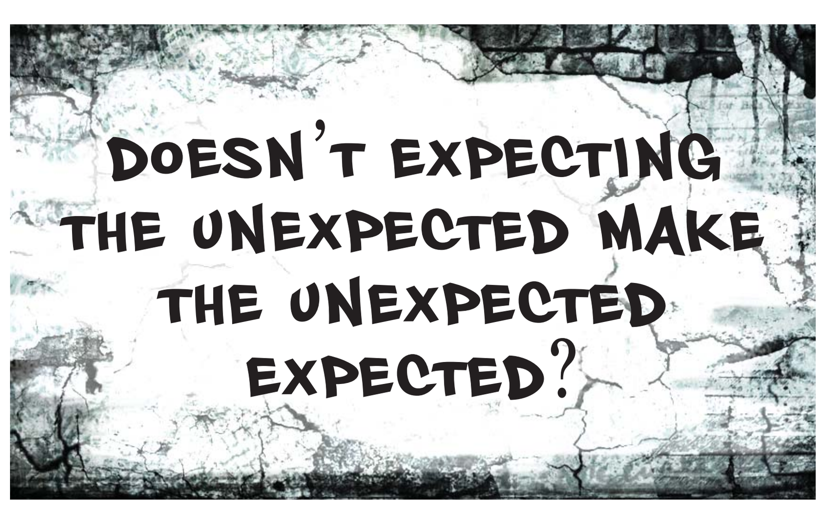

BABY BLUES

By Rick Kirkman & Jerry Scott

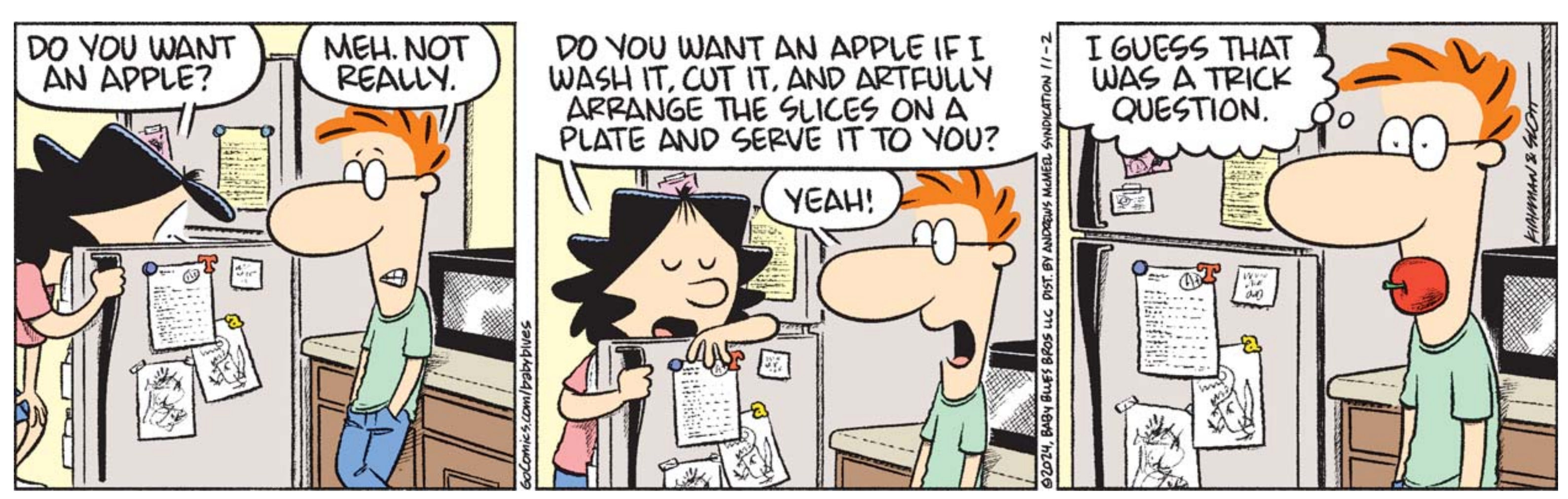

ZITS

By Jerry Scott & Jim Borgman

मांगों को लेकर आक्रोशित परिजन व समाजबंधु थाने के बाहर धरने पर बैठे

बजरी भरे डंपर की टक्कर से बाइक सवार पति-पत्नी व दो बच्चों की मौत का मामला

मांगों को लेकर परिजनों व समाज के लोगों ने थाने के बाहर धरना दिया।

- मांगों पर सहमति नही बनने पर चारों मृतकों का पोस्टमार्टम करवाने तथा शव उठाने से मना किया

सायला, (निसं)। सायला पुलिस थाना क्षेत्र के उन्नडी-पोषाणा के बीच मामाजी के मंदिर के पास भीनमाल-जीवाणा स्टेट हाइवे पर अवैध बजरी से भरे डंपर की टक्कर से बाइक सवार पति-पत्नी व दो बच्चों की मौत के बाद दूसरे दिन सोमवार को आक्रोशित परिजन व समाजबंधु सायला पुलिस थाने के बाहर धरने पर बैठ गए।

समाजबंधुओं ने मृतक उत्तमपुरी के परिवार को 2.50 करोड़ मुआवजा दिलाने, मृतक के 10 वर्षीय जीवित पुत्र राहुलपुरी की उम्र 18 वर्ष होने के बाद संविदा अथवा सरकारी नौकरी दिलाने, मृतक के बुजुर्ग माता-पिता के जीवन-यापन के लिए सरकार द्वारा उचित व्यवस्था करवाने, डम्पर चालक व मालिक को कठोर सजा दिलाने, अवैध बजरी परिवहन पर नकेल कसने की मांग की। वही मांगों पर सहमति नही बनने पर चारों मृतकों का पोस्टमार्टम करवाने तथा शव उठाने से मना कर दिया। जिस पर जालोर वृताधिकारी गौतम जैन, तहसीलदार लक्ष्मी चौधरी व सीआई महेन्द्रसिंह ने मौके पर पहुंचकर समझाइश का प्रयास किया। लेकिन परिजन व समाजबंधु लिखित आश्वासन नहीं मिलने तक अपनी मांगों पर अड़े रहे। इसके बाद शाम को जिला कलेक्टर प्रदीप के. गवांडे, जिला पुलिस अधीक्षक ज्ञानचन्द यादव व सायला उपखण्ड अधिकारी सूरजभान बिश्नोई भी पुलिस थाना सायला पहुंचे तथा समाज के मौजिज लोगों से वार्ता की। साथ ही नियमानुसार मांगों को पूरा करने का आश्वासन दिया, जिससे परिजन व समाजबंधु संतुष्ट नजर आए। इसके बाद परिजनों एवं समाज बंधुओं द्वारा जिला कलेक्टर व एसपी को ज्ञापन भी दिया गया। वहीं देर शाम तक मृतकों के शव का पोस्टमार्टम नहीं हो पाया था।

जानकारी के अनुसार बावतरा गांव निवासी उत्तमपुरी पुत्र मांगपुरी, उसकी पत्नी डिम्पल देवी, बेटी चिंटू और बेटे राजपुरी के साथ बाइक पर भीनमाल के कोरा गांव जाने के लिए निकला था। परिवार शोक सभा में शामिल होने जा रहा था। इस दौरान पोषाणा के पास सामने से आ रहे अवैध बजरी से भरे डंपर ने बाइक को टक्कर मार दी। ऐसे में चारों की मौके पर ही मौत हो गई। मृतक के भाई रमेशपुरी पुत्र मांगपुरी ने डम्पर चालक के विरूद्ध तेज गति व लापरवाही से डम्पर चलाकर गलत दिशा में आकर बाइक के टक्कर मारने का मामला दर्ज करवाया है। मृतक उत्तमपुरी के तीन संतानें हैं, जिसमें से बड़ा बेटा राहुलपुरी (10 वर्ष) ननिहाल में रहकर पढ़ाई करता है, जबकि एक बेटी चिंटू (8 वर्ष) व बेटा राजपुरी (5 वर्ष) माता-पिता के साथ बावतरा में रहते थे, लेकिन सड़क हादसे में पति-पत्नी समेत दो बच्चों चिंटू व राजपुरी की मौके पर ही मौत हो गई। हादसे में जान गंवाने वाली मृतका डिम्पलदेवी पत्नी उत्तमपुरी 5-6 माह की गर्भवती भी थी। डंपर की टक्कर से बाइक सवार दंपती व दो बच्चों की मौत के बाद पुलिस ने आरोपी डंपर चालक फिरोज खान निवासी तेजा की बेरी व डंपर मालिक मेहबूब खान निवासी कोरी ध्वेचा को गिरफ्तार किया।

जैन तीर्थ स्थल पर प्रतिमा, सिंहासन, छत्र व सामान चोरी

काछोला क्षेत्र स्थित श्री चंवलेश्वर पार्श्वनाथाय दिगम्बर जैन अतिशय तीर्थ क्षेत्र में चोरी की वारदात हुई।

भीलवाड़ा, (निसं)। जिले के काछोला थाना क्षेत्र स्थित श्री चंवलेश्वर पार्श्वनाथाय दिगम्बर जैन अतिशय तीर्थ क्षेत्र में बीती रात चोरों ने चोरी की वारदात को अंजाम दिया, जिसे लेकर समाज में भारी रोष है।

कमेटी के अध्यक्ष प्रकाश कासलीवाल ने तीर्थ स्थल पर हुई चोरी की वारदात को लेकर थाने में रिपोर्ट दी है। जिसमें बताया कि निज मन्दिर की दो मूर्तियां एवं सिंहासन चोरी हुए हैं। बड़ी तादाद में जैन समाज के लोगों ने काछोला थाना प्रभारी श्रद्धा पचौरी को रिपोर्ट देकर चोरों को पकड़ने की मांग की है। वहीं थाना प्रभारी ने विशेष टीम का गठन कर सीसीटीवी फुटेज का खंगाले हैं। श्री चंवलेश्वर पार्श्वनाथ मंदिर में हुई चोरी की वारदात के बाद भीलवाड़ा एफएसएल टीम ने मौके पर पहुंच कर फुटेज लिए हैं। चौकीदार जगदीश गुर्जर सुबह साढ़े पांच बजे निज मंदिर पहुंचा तो देखा कि मंदिर में लगे सीसीटीवी कैमरे रात्रि एक बजकर 55 मीनिट पर बंद हुए।

रात्रि 2 बजे से 2:30 के बीच सभी कैमरे बन्द कर की गई चोरी की वारदात में चोरों ने दो भगवान एक भगवान पार्श्वनाथ और भगवान शांतिनाथ की दो अष्टधातु की प्रतिमा, चांदी के छत्र सहित सिंहासन, गुल्लक से नकदी व अन्य कीमती सामान की चोरी की वारदात को अंजाम दिया। तीर्थ कमेटी के अध्यक्ष प्रकाश चंद्र कासलीवाल, कार्य अध्यक्ष प्रवीण चंद गोधा, प्रकाश गंगवाल, भागचंद बंसल, कैलाश चंद्र सोगानी, रूपचंद गोधा, मुकेश अजमेरा, सुरेशचंद्र कासलीवाल सहित समाजजनों ने वारदात का खुलासा करने की मांग की है। वहीं दिगम्बर जैन समाज में रोष व्याप्त है और थाना प्रभारी के समक्ष शीघ्र चोरी वारदात का खुलासा करने की मांग की है।

नशे के एक हजार कैप्सूल सहित दो गिरफ्तार

हिंदुमलकोट और जवाहर नगर थाना क्षेत्र में कार्रवाई

श्रीगंगानगर, (निसं)। जिले की हिंदुमलकोट और जवाहर नगर थाना पुलिस ने दो अलग-अलग आरोपियों को एक हजार नशे की गोलियों के साथ गिरफ्तार किया है। एक आरोपी से तीन और अन्य से सात सौ गोलियां मिली। पुलिस ने दोनों से नशे की गोलियों के मुख्य सप्लायर के बारे में जानकारी जुटानी शुरू की है।

जवाहर नगर थाना क्षेत्र में पुलिस को संविधान चौक के आसपास के इलाके में नशीली गोलियां बेचने की सूचना मिली थी। इस पर एएसआई राजकुमार के नेतृत्व में टीम भेजी गई। यहां एक युवक की गतिविधियां संदिग्ध नजर आई। यह युवक संविधान चौक से ओवरब्रिज की ओर जाने वाले रास्ते पर नशीली गोलियों की बिक्री कर रहा था। रोककर तलाशी ली तो आरोपी के पास तीस पत्तों में रखी 300 गोलियां मिली।

आरोपी ने बताया कि उसका नाम सुरेंद्र कुमार उर्फ सोनू पुत्र प्रभुदयाल है। उसके पास बिक्री राशि साढ़े चार हजार रुपए भी मिले। इसी तरह हिंदुमलकोट थाना पुलिस को गांव तीन बी की रोही में एक व्यक्ति के पास नशीली गोलियां होने की सूचना मिली। इस पर एएसआई सत्यप्रकाश के नेतृत्व में टीम मौके पर पहुंची। यहां गांव चार बी बड़ी का मंशासिंह उर्फ मंशु उर्फ मच्छर पुत्र दीवानसिंह गोलियां बेचते मिला। उसके पास 700 गोलियां बरामद हुई। पुलिस ने दोनों आरोपियों से नशे के मुख्य सप्लायर के बारे में जानकारी जुटानी शुरू कर दी है।

भाई-बहन का एक ही दिन निधन

जोधपुर, (कासं)। जोधपुर में जीनगर समाज में एक अनुठी घटना सामने आई। यहां 95 वर्ष से अधिक की उम्र के सगे भाई-बहन का एक ही दिन निधन हो गया। जीनगर घाटी पंचायत के पूर्व अध्यक्ष जवरी लाल डाबी सुपुत्र स्व. प्रतापजी डाबी तथा उनकी बड़ी बहन भंवरी देवी चौहान का देहावसान एक ही दिन हो गया। बहन भंवरी देवी का सुबह पांच बजे देहांत हुआ। बहन के देहांत की खबर भाई जवाहरलाल को दी गई तो सुनते ही छोटे भाई जवाहरलाल का भी देहांत हो गया। दोनों 95 वर्ष से अधिक की उम्र के थे। दोनों का अंतिम प्रतापनगर स्थिति जीनगर समाज के शमशान घाट में संस्कार किया गया। दोनों के अंतिम दर्शन को लोगों की भीड़ उमड़ पड़ी। समाज के लोगों ने पहले बड़ी बहन भंवरी देवी का अंतिम संस्कार किया।

अपहरण और गैंगरेप के आरोपियों को आजीवन कारावास की सजा

कोर्ट ने आरोपियों को 71-71 हजार रुपए के अर्थदंड से दंडित किया

भीलवाड़ा, (निसं)। मां के साथ पड़ौसी की रसोई में मंदिर गई नाबालिग का देर रात शौच जाने के दौरान जबरन अपहरण और गैंगरेप करने के मामले में विशिष्ट न्यायाधीश पॉक्सो कोर्ट संख्या एक देवेंद्र सिंह नागर ने आरोपी को आजीवन कारावास और 71-71 हजार रुपए के अर्थदंड की सजा सुनाई है।

विशिष्ट लोक अभियोजक धर्मवीर सिंह कानावत ने बताया कि पीड़िता ने 16 अप्रैल 2023 को थाना शाहपुरा में रिपोर्ट दी, जिसमें उसने बताया कि 15 अप्रैल को वह उसकी मां के साथ पड़ौसी प्रेम भील की रसोई में मंदिर गई थी, जहां रात को नारायण भील के बाड़े में सो गए। रात करीब 12.30 बजे वह और प्रेम भील की पत्नी भवरी बाई दोनों बाड़े से थोड़ी दूर शौच करने गए, जहां भवरी बाई शौच कर रही थी और वह हल्की रोशनी के खड़ी हुई थी, इस दौरान दो लड़के वहां आए और उसे पकड़ लिया, वह चिल्लाई तो भवरी भागकर आई और बचाव का प्रयास किया। इस दौरान दोनों युवकों ने उसे धमकी दी, जिसके कारण वो डर के भाग गई और दोनों युवकों ने उसे पास ही जंगल में ले जाकर साथ दुष्कर्म किया।

बचाव के लिए पीड़िता ने एक युवक को जख्मी कर दिया, जिसके बाद दोनों मौके से भाग छूटे। इसके बाद पीड़िता की मां और अन्य लोग जंगल में पहुंचे, जहां उसने आपबीती सबको बताई, लोगों ने वहां पड़ताल की तो मौके पर एक मोबाइल और एक पर्स पड़ा मिला। घटनास्थल पर मिले सबूतों के आधार पर पुलिस ने अभियुक्त ओमप्रकाश रेबारी व सत्यनारायण नायक को गिरफ्तार कर अनुसंधान के बाद न्यायालय में चार्जशीट पेश की। ट्रायल के दौरान विशिष्ट लोक अभियोजक कानावत ने 43 दस्तावेज और 17 गवाहों के बयान दर्ज करवाकर आरोप सिद्ध किए। इस पर कोर्ट ने दोनों आरोपियों को आजीवन कारावास और 71-71 हजार के जुर्माने से दंडित किया है।

सेना के जवान से 9.10 लाख रु. की ऑनलाइन ठगी

श्रीगंगानगर, (निसं)। सेना के एक जवान से सिम कार्ड की केवाईसी अपडेट करने के नाम पर साइबर ठगी हो गई। पीड़ित से अज्ञात ठग ने 9 लाख 10 हजार रुपए की ऑनलाइन ठगी की है। पीड़ित ने इस संबंध में साइबर हेल्प लाइन टोल फ्री नंबर 1930 पर शिकायत दर्ज करवाई थी। अब साइबर थाने में आकर परिवाद देकर मुकदमा दर्ज करवाया है। मामले की जांच साइबर थाना प्रभारी आरपीएस कुलदीप वालिया कर रहे हैं।

साइबर थाना के एचएम महेंद्र कुमार ने बताया कि सूरतगढ़ सैन्य छावनी में तैनात नायक रैंक के सैनिक ने 4 जनवरी को परिवाद दिया है। इसमें पीड़ित ने बताया कि उसके पास जियो कस्टमर केयर के नाम से फोन आया। कॉलर ने केवाईसी अपडेट करवाने को कहा। पीड़ित ने कॉलर के बताए अनुसार फोन पर माई जियो एप डाउनलोड किया। इसके बाद कॉलर के पास पीड़ित की बैंक संबंधी जानकारी पहुंच गई। उसने तीन बार में 5 लाख, 3 लाख और एक लाख 10 हजार रुपए पीड़ित के बैंक खाते से निकाल लिए। पुलिस ने अज्ञात आरोपी के खिलाफ मुकदमा दर्ज किया है। पीड़ित सैनिक ने परिवाद में बताया कि उसके मोबाइल नंबर पर 26 दिसंबर को कॉल आई। कॉलर ने स्वयं को जियो कस्टमर केयर सेंटर से कर्मचारी बोलना बताया। उसने कहा कि आपकी केवाईसी अपडेट नहीं है। सिम बंद हो जाएगी। पीड़ित ने यह फ्रॉड कॉल बताकर काट दी। उसी नंबर से 27 दिसंबर की सुबह फिर कॉल आई। पीड़ित से कॉलर ने फिर केवाईसी अपडेट करवाने को कहा। पीड़ित ने फ्रॉड कॉल समझकर काट दी और केवाईसी नहीं करवाई। 27 रात को ही सिम बंद हो गई, अगले दिन पीड़ित ने खुद ही चलाकर फोन किया पीड़ित सैनिक ने परिवाद में बताया कि 27 दिसंबर की रात को ही पीडि़त की सिम बंद हो गई। इस पर पीड़ित को लगा कि दो दिन से आ रही कॉल जियो कस्टमर केयर से ही थी। केवाईसी अपडेट नहीं होने से सिम बंद हो गई है।

पीड़ित ने 28 दिसंबर को खुद ही चलाकर उसी नंबर पर कॉल करके सिम बंद होने के बारे में बताया। कॉल अटेंड करने वाले ने केवाईसी अपडेट करवाने को कहा। पीड़ित ने आरोपी के कहने पर फोन में माई जियो एप डाउनलोड किया। जियो एप डाउनलोड होने पर बोले ई-मेल आईडी अपडेट नहीं, अल्टरनेट नंबर देख लिया पीड़ित ने माई जियो एप डाउनलोड किया तो कॉलर ने बताया कि आपका ई-मेल अपडेट नहीं है। पीड़ित ने अपना ई-मेल अपडेट किया तो कॉलर ने इस पर पीड़ित का अल्टरनेट नंबर देख लिया। यह मोबाइल नंबर पीड़ित के बैंक अकाउंट से लिंक था। इसी पर वाट्सएप चलता है। इसके बाद कॉलर ने पीड़ित को बताया कि उनका केवाईसी अपडेट हो गया है। अब सिम कार्ड 10 साल भी बंद नहीं होगा। उसी दिन शाम को करीब 8 बजे पीड़ित के खाते से तीन बार में रुपए कट गए। पीड़ित ने पुलिस परिवाद में बताया कि पीड़ित के बैंक खाते से रुपए कटे तो पीड़ित ने योनो एप खोलकर बैंक खाते की स्टेट्स चेक की। इससे पीड़ित को पता चला कि आरोपियों ने केवाईसी अपडेट करने का बहाना कर पीड़ित के बैंक खाते की एक्सेस अपने हाथ ले ली। पीड़ित के बैंक अकाउंट से 8 लाख रुपए का लोन लेकर रकम पहले खाते में जमा करवाई। फिर उसी खाते से आरोपियों ने 9 लाख 10 हजार रुपए तीन बार में अपने खातों मे ट्रांसफर कर लिए।

पीड़ित ने इसकी साइबर हेल्प लाइन नंबर 1930 पर कॉल कर शिकायत पंजीकृत करवाई। इससे रुपए कटने बंद हो गए लेकिन काटे गए रुपए वापस खाते में ट्रांसफर नहीं हो पाए। इस कारण साइबर थाने में परिवाद देकर मुकदमा दर्ज करवाया गया। साइबर थाना पुलिस द्वारा पीड़ित के पास कॉल करने वाले नंबरों तथा जिन खातों में रुपए ट्रांसफर हुए हैं, उनकी डिटेल जुटाई जा रही है।

गोवंश का सिर मिलने के मामले में दो हिरासत में

जोधपुर, (कासं)। गोवंश का सिर मिलने के मामले में पुलिस ने दो आरोपियों को हिरासत में लिया है। मामले को लेकर मुस्लिम समुदाय ने पुलिस को धन्यवाद देते हुए दोनों आरोपियों और उनके परिवार को समाज से बहिष्कृत कर दिया है।

जानकारी के अनुसार शनिवार को मथानिया सर्कल के पास सुबह आठ बजे धनलक्ष्मी रेस्टोरेंट के पास गोवंश के शरीर के अंश पड़े मिले थे। इसके बाद हिंदू संगठन के पदाधिकारी और सदस्य मौके पर पहुंचे। गोवंश के अंश झाड़ियों में पड़े देख आक्रोशित हो गए थे। इसके बाद बजरंग दल के जिला विशेष संपर्क प्रमुख देवेंद्र गोयल ने मथानिया थाने में इस संबंध में रिपोर्ट दी थी। मथानिया पुलिस ने 24 घंटे में खुलासा करते हुए दो आरोपियों को पकड़ लिया। कौम नागौरी तेलियान पंचान समिति तिंवरी ने एक लेटर जारी कर कहा है कि समाज को दोनों की गिरफ्तारी से कोई आपत्ति नहीं है। वे हिन्दू समाज के साथ कंधे से कंधा मिलाकर खड़े हैं। मामला जोधपुर के तिंवरी के मथानिया थाना इलाके का शनिवार सुबह आठ बजे का था। वहीं पुलिस ने दोनों आरोपियों को 24 घंटे के अंदर ही हिरासत में ले लिया। इसके बाद आज उन्हें कोर्ट में पेश किया जाएगा।

मथानिया थाना राजेंद्र सिंह चारण ने बताया कि मामले को लेकर आरोपी साउद और अकरम को तिंवरी स्थित उनके घर से गिरफ्तार किया गया। साउद मजदूरी करता है और अकरम ड्राइवर है। चारण ने बताया कि पुलिस ने कड़ी से कड़ी जोड़ते हुए दोनों आरोपियों को उनके घर से ही दबोचा। पुलिस ने आसपास के सीसीटीवी फुटेज खंगाले और आरोपियों की पहचान की थी। घटना के बारे में मालूम चलते ही तिंवरी के कौम नागौरी तेलियान पंचान समिति तिंवरी ने लेटर जारी कर आरोपियों को समाज से बेदखल कर दिया। लेटर में लिखा कि इस घटना से मुस्लिम समाज तिवरीं को गहरा दुख है और हिंदू समाज के धर्मिक आस्था को गहरी ठेस पहुंचाने वाले इन आवारा युवकों पर कार्रवाई हो।

ऑनलाइन ठगी के दो आरोपी गिरफ्तार

पुलिस ने ठगी के आरोपियों को गिरफ्तार किया।

गोविंदगढ़/अलवर, (निसं)। गोविंदगढ़ थाना पुलिस ने ऑपरेशन एंटीवायरस अभियान के तहत दो आरोपियों को गिरफ्तार किया है एवं दो मोबाइल जप्त किये है। गोविंदगढ़ थाना पुलिस टीम द्वारा ऑनलाइन ठगी सेक्टर ओएलएक्स आदि फ्रॉड के विरुद्ध चलाए जा रहे अभियान एंटीवायरस के तहत गांव शाकीपुर में दबिश देकर विभिन्न सोशल मीडिया एप्लीकेशन पर चेक टेंशन की वीडियो वायरल करने की धमकी देकर विभिन्न अनजान लोगों से मोबाइल नंबर पर कॉल एवं व्हाट्सएप पर चैट करके फर्जीवाड़ा कर के लोगों से ऑनलाइन ठगी करने में दो अभियुक्त को गिरफ्तार किया गया। जिनमें अफसर उर्फ मूला पुत्र अलीशेर, आदिल खां पुत्र जाहुल खां को गिरफ्तार किया।

निलंबन के मामले में टाक को मिली राहत

मेड़ता सिटी, (निसं)। मेड़ता नगर पालिका में फिर हलचल का दौर चला और निलंबित अध्यक्ष गौतम टाक को जोधपुर हाईकोर्ट ने राहत दी है। गौरतलब है कि स्वायत्त शासन विभाग के आदेश के अनुसार पेट के मामले में गौतम टाक को निलंबित किया गया था, इसके खिलाफ गौतम टाक ने जोधपुर हाईकोर्ट में याचिका लगाई थी जिस पर सोमवार को हाईकोर्ट ने रोक लगाते हुए उसे फैसले पर गौतम टाक को राहत दे दी। इस मौके पर कांग्रेस कार्यकर्ताओं ने नगर पालिका के बाहर जमकर आतिशबाजी की और मिठाई बांटकर खुशी जाहिर की। कांग्रेस नगर अध्यक्ष जाकिर खान सांखला ने बताया कि यह सत्य की जीत हुई है सत्य परेशान हो सकता है लेकिन पराजित नहीं। हमें न्यायालय पर पूरा भरोसा था और हमें न्याय मिला। इस मौके पर ब्लॉक अध्यक्ष नेमाराम बेड़ा कांग्रेस प्रत्याशी शिवरतन वाल्मीकि, कांग्रेस नगर अध्यक्ष जाकिर खान सांखला, युवा कांग्रेस अध्यक्ष सुरेंद्र बापेड़िया, सत्तू सबलानिया, जीशान कुरैशी, नरेश गोलियां, नूर मोहम्मद, सेवादल जिला अध्यक्ष कुमाराम जाजड़ा, कुलदीप राजपुरोहित, एडवोकेट शेर मोहम्मद देशवाली, कलाम, सोनू शकीरा, अनिल सारस्वत, मुश्ताक मंसूरी, मुकुल पवार आशीष वाल्मीकि इत्यादि मौजूद थे।

कमजोरी से कोई अधिकार छीन लेगा तो इतिहास माफ नहीं करेगा : डोटासरा

बांसवाड़ा को संभाग का दर्जा खत्म किये जाने को लेकर धरना प्रदर्शन कार्यक्रम आयोजित हुआ।

- बांसवाड़ा को संभाग का दर्जा खत्म किये जाने को लेकर रैली और धरना प्रदर्शन
- भाजपा सरकार गरीब, मजदूर, किसान व महिलाओं की आवाज और दर्द नहीं समझती : टीकाराम जूली

बांसवाड़ा, (निसं)। हमारी कमजोरी से कोई हमारे अधिकार छीन लेगा तो इतिहास हमें माफ नहीं करेगा, इसलिये अपने अधिकारों के लिये एकजुट होकर हमें संघर्ष करना होगा। उक्त आव्हान कांग्रेस के प्रदेशाध्यक्ष गोविन्द सिंह डोटासरा ने बांसवाड़ा को संभाग का दर्जा खत्म किये जाने को लेकर आयोजित रैली, धरना प्रदर्शन कार्यक्रम में किया। डोटासरा ने कहा कि वागड़ क्षेत्र का इतिहास संघर्ष करने का, पीठ नहीं दिखाने का और समर्पण का रहा है, ऐसे में हमें इस इतिहास को कायम रखना होगा। उन्होंने कहा कि जो आपका साथ दें आप उसका साथ दो। उन्होंने बताया कि चार साल तक संघर्ष करना होगा और अपने अधिकारों के लिये ईंट से ईंट बजानी होगी।

उन्होंने कहा कि आने वाले विधानसभा सत्र में हम लोग सरकार को छठी का दूध याद दिला देंगे। उन्होंने आने वाले पंचायत और नगर पालिका चुनाव के लिये कमर कसने का आव्हान किया और कहा कि राजीव गांधी ने पंचायत चुनाव के लिये हर पांच साल में चुनाव का कानून बना दिया था, लेकिन ये लोग संविधान को नहीं मानते और इसकी खिल्ली उड़ाते हैं। उन्होंने कहा कि सरकार बनाने से पहले पार्टियां वादा करती है उन्हें पूरा करना चाहिए लेकिन इस सरकार ने एक भी वादा पूरा नहीं किया। उन्होंने तंज कसा कि काठ की हांडी बार-बार नहीं चढ़ती। उन्होंने कहा कि इस सरकार ने ऐसे-ऐसे मंत्री बना दिये हैं कि आश्चर्य होता है। शिक्षा मंत्री तो डीएनए जांच की मांग करता है उन्हें शिक्षा की बात आती नहीं, पढ़ने-पढ़ाने और बेटियों को आगे बढ़ाने की बात तो दूर। उन्होंने आव्हान किया कि आज जैसा जोश-जज्बा और जुनून संभाग का दर्जा वापस मिलने तक बरकरार रहना चाहिए।

नेता प्रतिपक्ष टीकाराम जूली ने कहा कि आज प्रकाश पर्व होने से बड़ा दिन भी है। उन्होंने कहा कि यह सरकार गरीब, मजदूर, किसान, महिलाओं की आवाज और दर्द नहीं समझती। उन्होंने कहा कि भाजपा फूट डालो और राज करो की नीति अपना रही है। पूर्व राज्यमंत्री एवं विधायक अर्जुन सिंह बामनिया ने कहा कि हमें अपने बच्चों के भविष्य के लिये लड़ना होगा। हमारे कई महापुरुषों ने देश के लिये बलिदान दिया ऐसे में हमें अधिकारों के लिये हरसंभव संघर्ष करना होगा। उन्होंने कहा कि आज उमड़ी जनमैदिनी ने साबित कर दिया कि जनता कांग्रेस के साथ है। उन्होंने उपस्थित जनता को जिला प्रमुख और प्रधान बनाने की शपथ दिलाई। मुख्यमंत्री पर तंज कसते हुए बामनिया ने कहा कि उन्होंने तो वागड़वासियों का सब कुछ छीनकर उन्हें भजन के लिये मजबूर कर दिया है। इस अवसर पर डूंगरपुर विधायक गणेश घोघरा ने कहा कि भाजपा पूंजीपतियों यानी कि अडाणी, अंबानी की सरकार है। उन्होंने कहा कि आज पढ़-लिखकर वह जिस पद पर पहुंचे हैं वह कांग्रेस की देन है। उन्होंने कहा कि यदि बांसवाड़ा संभाग ही रहता तो इस क्षेत्र की जनता को सैकडो किमी. का सफर नहीं करना पड़ता। घाटोल विधायक नानालाल निनामा ने कहा कि कांग्रेस का मजबूत आधार है। उन्होंने कहा कि संभाग का दर्जा वापस लेने के लिये पंचायत एवं ब्लॉक स्तर पर आंदोलन करने की स्वीकृति दी जाये। कुशलगढ़ विधायक रमीला खड़िया ने कहा कि हमारे अधिकारों पर डाका डाला गया है ऐसे में भाजपाईयों को गांव में घुसने मत दो।

संक्षिप्त

श्री गुरु गोविंद सिंह जी का 368वां प्रकाश पर्व मनाया

श्रीमाधोपुर। श्री गुरुद्वारा सिंह सभा पंजाबी मोहल्ला श्रीमाधोपुर के सरदार अर्जुन सिंह ने बताया कि श्री गुरु गोविंद सिंह जी का 368 वां प्रकाश पर्व समारोह पूर्वक मनाया गया। बताया गया है कि सुबह प्रकाश श्री गुरु ग्रंथ साहिब, पाठ श्री जपजी साहिब , सुखमणि साहिब पाठ, चाय का लंगर , सहज पाठ समाप्ति, आशा दी वार, शब्द कीर्तन एवं प्रवचन, आरती और अरदास तत्पश्चात 3 बजे तक गुरु का अटूट लंगर बरपाया गया, जिसमें हजारों लोगों ने प्रसाद ग्रहण किया। कार्यक्रम में सरदार रतन सिंह, चरण सिंह, रमेश लाल वधवा, अमरजीत सिंह, कुलदीप पंजाबी ,भीमराज पंजाबी, रामदीन चूलेट , विशाल बोहरा, सत्यनारायण सेन , बृजमोहन, नायनकाजोशी, सतीजा दक्ष, कार्तिक सपड़ा, मानस सतीजा, मनजीत सिंह सलूजा, जीत सिंह , सरदार जोगिंदर सिंह, दीनदयाल सतीजा, नरेश खुराना, गोपाल पंजाबी, नरेश पंजाबी एवं काफी तादाद में माता , बहने व बच्चे उपस्थित रहे।

अवैध बजरी से भरी दो ट्रैक्टर ट्रॉली जब्त

बौंली-बामनवास। क्षेत्र की बौंली पुलिस ने माननीय न्यायालय की अनुपालना में एवं जिला पुलिस अधीक्षक ममता गुप्ता के निर्देशन में चलाए जा रहे अवैध बजरी परिवहन के खिलाफ कार्रवाई करते हुए दो ट्रैक्टर ट्राली को जब्त किया है। बौंली पुलिस थाने के हैड कांस्टेबल धर्मेंद्र चौधरी ने बताया कि हैड कांस्टेबल दीपक कुमार व योगेंद्र सिंह के नेतृत्व में गठित टीम में शामिल कांस्टेबल अरुण, धर्मवीर एवं चालक भगवान सिंह ने कार्रवाई करते हुए खटाना रोड बौंली से बिना नंबरों की एवं रवासा रोड से अवैध बनास की बजरी से भरी ट्रैक्टर ट्राली को जब्त किया है। पुलिस टीम को देखकर चालक ट्रैक्टर ट्राली को नाली में फंसा कर मौके से फरार हो गया एवं दूसरी ट्रैक्टर ट्राली को रवासा ग्राम से धारा 38 पुलिस एक्ट के तहत जब्त किया गया है।

विद्यालयों में 7 से अवकाश घोषित

अलवर। जिला कलक्टर एवं जिला आपदा एवं प्रबंधन आपदा प्राधिकरण की अध्यक्ष डॉ. आर्तिका शुक्ला ने मौसम विभाग द्वारा जारी पूर्वानुमान के आधार पर जिले में शीतलहर एवं बढती हुई ठंड के प्रकोप तथा विद्यार्थियों के स्वास्थ्य को दृष्टिगत रखते हुए आपदा प्रबंधन अधिनियम 2005 के अध्याय 4 की धारा 30 में प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए अलवर जिले में संचालित कक्षा 1 से 8 तक के समस्त सरकारी एवं गैर सरकारी विद्यालयों में अध्ययनरत छात्रा-छात्राओं का 7 जनवरी से 11 जनवरी 2025 तक अवकाश घोषित किया है। यह अवकाश केवल छात्रा-छात्राओं हेतु लागू रहेगा। शेष स्टाफ यथावत कार्य करता रहेगा। उन्होंने जिले के समस्त संस्था प्रधानों को निर्देशित किया है कि इन आदेशों की अक्षरशः पालना सुनिश्चित करें। यदि कोई संस्था प्रधान उक्त अवधि के दौरान कक्षा संचालन करता पाया जाता है तो उसके विरूद्ध आपदा प्रबंधन अधिनियम 2005 के तहत कार्रवाई अमल में लाई जावेगी।

प्रभात फेरी का भव्य आयोजन

निवाई। सनातन धर्म रक्षा मंच के तत्वावधान में श्रीराम मंदिर अयोध्या के प्राण प्रतिष्ठा के एक वर्ष पूर्ण होने पर विशाल भव्य प्रभात फेरी एवं नगर भ्रमण का कार्यक्रम आयोजित होगा। राजेश जांगिड़ एवं योगेश जलवानिया ने बताया की 12 जनवरी को प्रभात फेरी मोरिया वाले बालाजी से जमात बडवेश्वर महादेव, शिवाजी कॉलोनी मोड, भगत सिंह कॉलोनी, सेवा बस्ती, झीलाय रोड, अहिंसा सर्किल, बस स्टैंड, मालियों का मोहल्ला, फूटी बावड़ी, नरसिंह भगवान मंदिर, बड़ा बाजार, पुरानी सब्जी मंडी, गणगौरी बाजार होते हुए कंकाली माता मंदिर पहुंचेगी। जहां संतो के सानिध्य में हनुमान चालीसा पाठ का आयोजन किया जाएगा। नगर भ्रमण और प्रभात फेरी के दौरान जगह-जगह विभिन्न संगठनों द्वारा पुष्प वर्षा कर भव्य स्वागत किया जाएगा।

नम्बर मिलाइए
9587884433
सिर्फ एक फोन कॉल पर विज्ञापन घर बैठे बुक करायें।

किशनगढ़बास में भाजपा के पांचों मंडल अध्यक्षों की घोषणा

किशनगढ़ बास। विधानसभा किशनगढ़ बास के पांचों मंडल के अध्यक्ष पद पर भाजपा ने नए चेहरों की घोषणा कर संगठन की जिम्मेदारी सौंपी दी है। इस बार जहां 45 साल की उम्र तक के कार्यकर्ता को पार्टी ने मंडल के अध्यक्ष पद की बागडोर सोपी है। वही इस बार यादव बाहुल्य मानीं जाने वाली किशनगढ़ बास विधानसभा क्षेत्र के पांचों मंडलों में एक भी मंडल पर यादव को अध्यक्ष की जिम्मेदारी नहीं दिए जाने की घोषणा ने सबको हैरानी में ढाल चौंका दिया है।

- नव नियुक्त अध्यक्षों ने पूर्व विधायक रामहेत यादव का लिया आशीर्वाद

किशनगढ़ बास मंडल अध्यक्ष पद पर उमेश कांत वशिष्ठ के स्थान पर मनोज मित्तल (बीच में) को जिम्मेदारी मिली है ।

कोटकासिम मंडल में यादव के स्थान पर सोलू शर्मा को बनाया गया है। मोठूका में बलविंदर सिंह सिख की जगह इस बार राजकुमार औड राजपूत को जिम्मेदारी सौंप गई है। इसी प्रकार किशनगढ़ बास मंडल अध्यक्ष पद पर उमेश कांत वशिष्ठ के स्थान पर मनोज मित्तल को जिम्मेदारी मिली है तो खैरथल में प्रीमिल जसोरिया के स्थान पर मनीष शर्मा को बनाया गया है। इसी प्रकार हरसोली में पूर्ण झाबूला की जगह सुरेंद्र जांगिड़ को जिम्मेदारी मिली है। नवनियुक्त अध्यक्षो ने पूर्व विधायक रामहेत यादव का आशीर्वाद लिया। इस दौरान पूर्व विधायक यादव ने अध्यक्षों का मुंह मीठा करा कर बधाई दी। इस दौरान भाजपा जिला उपाध्यक्ष राजेश बटवाडा विश्वास यादव कोटकासिम पूर्व अध्यक्ष रामनिवास यादव सहित भाजपा नेता मौजूद रहे।

सड़क सुरक्षा के लिए किया जागरूक

पीपलू। उपखंड क्षेत्र के पुलिस चौकी रानोली पर सडक़ सुरक्षा सप्ताह के अंतर्गत बैठक का आयोजन किया गया। बैठक में ग्रामीण, सीएलजी सदस्य, पुलिस मित्रों को झिराना थाना प्रभारी हरीमन मीणा ने सडक़ सुरक्षा के लिए हेलमेट लगाने, कार में सीट बेल्ट लगाने की जानकारी देते हुए कहा कि सीट बेल्ट लगाने से दुर्घटना होने पर एयर बैक समय पर खुल जातें हैं। जिससे जीवन बचाने की सम्भावना अधिक होती है। मोटर साइकिल पर हेलमेट लगाने से आदमी सुरक्षित रहता है। इस लिए नियमों का पालन करने के लिए समझाते हुए कहां की सडक़ सुरक्षा सप्ताह में हेलमेट का चालान 1 हजार रुपए होता है। साथ ही सोशल मीडिया पर होने वाले आपराधिक मामले के लिए समझाते हुए कहा कि वर्तमान समय में किसी भी तरह से ओटीपी ने आधार कार्ड नम्बर लेने के लिए कई साइबर ठग प्रयास करते है। इसलिए ओटीपी किसी को नही बताए। उन्होंने डिजिटल एरेट के बारे में विस्तृत जानकारी दी। सर्दी के मौसम में चोरी की वारदातों से सतर्कता रहने की जानकारी दी। कार्यक्रम के समापन पर हेलमेट लगाने की शपथ दिलाई गई। बैठक में हेड कांस्टेबल कैलाश भंडारी, कांस्टेबल सुखराम, अश्वनी, राजेंद्र व रामेश्वर सहित कई ग्रामीण मोजूद रहे।

डॉ. धर्मराज छिछोलिया को पुरुस्कृत किया

श्रीमाधोपुर। राजस्थान बलाई विकास संस्थान द्वारा आयोजित 21 वां प्रतिभा सम्मान समारोह शाहपुरा साईवाड़ मोड़. छात्रावास में जयपुर ग्रामीण सांसद राव राजेन्द्र सिंह के मुख्य आतिथ्य व भाजपा वरिष्ठ नेता गणपत राम वर्मा की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ।

कल्याणपुरा निवासी प्राचार्य व पंचायत प्रारम्भिक शिक्षा अधिकारी डॉ.धर्मराज छिछोलिया द्वारा " राजस्थान के दलितों का भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में योगदान " विस्तृत शोधकार्य के फलस्वरूप समाज शोध सम्मान से पुरस्कृत किया गया। संस्थान अध्यक्ष डॉ. बी.डी. नैनावत ने नववर्ष स्नेह मिलन की उपादेयता पर प्रकाश डालते हुए विविध क्षेत्रों में 243 प्रतिभाओं को सम्मानित किया। विशिष्ट अतिथि के रूप में विराटनगर विधायक कुलदीप धनकड़, सेवानिवृत्त आईपीएस गुरुचरण राय, कर्मचारी प्रदेशाध्यक्ष अशोक सामरिया, सयुंक्त निदेशक (वित) सुरेश कुमार वर्मा, सेवानिवृत्त शिक्षा अधिकारी रतिराम बुनकर, अम्बेडकर वेलफेयर सोसायटरी के महासचिव जी.एल. वर्मा, डॉ.सुनील गोठवाल ने कार्यक्रम को संबोधित किया। गौरतलब है कि डॉ. धर्मराज छिछोलिया के विविध लेख राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रकाशित हुए व अपने शोधकार्य से उपाधि अर्जित की है। आपने अपने शोधकार्य में बलाई छात्रावास की नींव से वर्तमान स्थिति की विकासशील अवस्था पर प्रकाश डाला है। कार्यक्रम में प्रभुदयाल जेवरिया,डॉ. बी.डी.नैनावत, गणपत लाल नायन , राजकुमार बुनकर, नेमीचन्द पंवार, डॉ. कैलाश मोरदिया, सीताराम बुनकर, बद्रीनारायण परिहार, लल्लूराम बुनकर, गोपीराम चौहान, बंशीधर रांगेरा, साधूराम दानोदिया सहित सैकड़ो लोग उपस्थित रहे।

वन एवं पर्यावरण मंत्री ने जनसुनवाई की

अलवर। वन एवं पर्यावरण राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार) संजय शर्मा ने आज अपने निवास 201 ,रघुमार्ग पर जनसुनवाई कर आमजन की परिवेदनाओं को सुनकर संबंधित अधिकारियों को त्वरित निराकरण करने के निर्देश दिये। जनसुनवाई में पेयजल, नगर निगम, नगर विकास न्यास, विद्युत, पुलिस, स्थानांतरण एवं राजस्व मामलों की परिवेदनाएं प्रमुख रही। मंत्री शर्मा ने संबंधित अधिकारियों को दूरभाष से परिवेदनाओं के त्वरित निस्तारण के निर्देश देते हुए कहा कि प्रत्येक परिवेदना के निस्तारण की सूचना फरियादियों को दी जाए।

खोया-पाया

आवास संख्या 70/14 मानसरोवर जयपुर का आवंटन पत्र व कब्जा पत्र गिर/गुम हो गया मिलने पर सूचित करें। रमेश मो. 7878679022

लोक सूचना सामान्य जनता को सूचित किया जाता है कि मेरे मुवक्किल श्री ओमप्रकाश गुप्ता पुत्र श्री हरिशंकर गुप्ता निवासी चांद नौली, खिरनी, सवाई माधोपुर (राज.) हाल निवासी सेक्टर 261/537 सेक्टर 26 प्रताप नगर, टोंक रोड, जयपुर ने अपने पुत्र श्री दीपक कुमार गुप्ता से उसकी बुरी आदतों के कारण सभी सम्बन्ध समाप्त कर दिए हैं। मेरे उपरोक्त मुवक्किलों ने अपने पुत्र को अपनी सभी चल-अचल सम्पत्तियों से भी विमुक्त और वंचित कर दिया है। जो कोई भी श्री दीपक कुमार गुप्ता के साथ लेन-देन करेगा, वह अपने जोखिम और जिम्मेदारी पर करेगा और मेरे मुवक्किल किसी भी कार्य, कममक या लेन-देन के लिए जिम्मेदार नहीं होंगे। दीपक के किसी भी कार्य व्यवहार, लेनदेन अथवा पुलिस प्रशासन के प्रति मेरे मुवक्किल एवं उसके परिवार के अन्य सदस्यों की किसी प्रकार की कोई जिम्मेदारी नहीं होगी। दिनांक : 06.01.2025
अनिल चौधरी (अधिवक्ता),
लॉ कंसलटेंट एण्ड एडवोकेट्स, मो. : 9413968770

पालिका बोर्ड की बैठक नहीं होने से विकास कार्य ठप

मनोहरपुर। नगर पालिक की बोर्ड की मीटिंग नहीं होने के कारण पार्षदों व आम नागरिकों के आवश्यक कार्य ठप पड़े हुए है।नगर का विकास कराने और समस्याओं का समाधान करने के लिए नगर पालिका बोर्ड की बैठक प्रतिमाह होनी चाहिए। नगर पालिका अधिनियम की धाराओं में इसका प्रावधान है लेकिन मनोहरपुर में अधिनियम का पालन नहीं हो रहा है।एक वर्ष पूर्व यह मीटिंग हुई थी। इसके बाद कोई बैठक नहीं हुई है। जिससे पार्षद व आमजन अपने मुद्दे उठाने के लिए बैठक होने का इंतजार कर रहे हैं।

- करीब एक वर्ष से नहीं हुई पालिका की बोर्ड की बैठक

बैठक न होने से अहम मामलों में समय पर निर्णय नहीं हो पा रहा है। ओर विकास कार्यों में भी देरी हो रही है। मनोहरपुर सीटी में सफाई व्यवस्था,कई जगहों पर खराब पड़ी रोड लाइटे,पेयजल आपूर्ति के लिए पाइप लाइन की मरम्मत का मुद्दा हो या फिर नई नालियों व सड़कों के निर्माण का काम।इस दौरान पार्षद विमला बेनीवाल ने अपने वार्ड में पड़ी खाली जमीन पर पार्क बनवाने की भी मांग की है। एसे में वार्डो की गंभीर स्थिति देखने को मिल रही हैं।इन मुद्दों पर चर्चा नहीं हो सकी।वही कुत्तों के हमले की घटनाएं बढ़ रही हैं पर कुत्ते पकड़ने पर पालिका कोई काम नहीं कर सकी क्योंकि बोर्ड की बैठक में अभी तक इसकी कोई चर्चा नहीं हुई। इन मुद्दों पर पालिका बोर्ड की बैठक होना जरूरी है। लेकिन प्रति महीने बोर्ड की बैठकें नहीं हो रही हैं। एक्ट का खुला उल्लंघन किया जा रहा है।

इस मामले में पार्षद पूजा प्रजापत का कहना है कि कई बार लिखित में अवगत कराकर कोरम की बैठक बुलाने की मांग की गई है किंतु इस और कोई ध्यान नहीं दिया जा रहा। इस दौरान नीलम नायक ने बताया कि उनके वार्ड में सड़के अधूरी पड़ी हैं।नालिया क्षितग्रस्त है,सफाई के लिए बार बार कोल करना पड़ता है।

पार्षद गायत्री का कहना है कि पट्टे की फाइल जमा है रसीद मिल चुकी हैं मगर पट्टे नहीं दिए जा रहे हैं।

आमजन की परिवेदनाओं का निस्तारण शीघ्र करें : मंत्री शर्मा

अलवर। वन एवं पर्यावरण राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार) संजय शर्मा ने सोमवार को अलवर अपने निवास पर लोगों की जनसुनवाई कर परिवेदनाओं पर संबंधित अधिकारियों को त्वरित निराकरण करने के निर्देश दिये है।

- अलवर निवास पर लोगों की सुनी समस्याएं फोन पर अधिकारियों को दिए निर्देश
- समस्याओं के साथ साथ स्थानांतरण को लेकर भी मिले लोग।

जनसुनवाई में पेयजल, नगर निगम, नगर विकास न्यास, विद्युत, पुलिस, स्थानांतरण एवं राजस्व मामलों की परिवेदनाएं प्रमुख रही। मंत्री शर्मा ने संबंधित विभागों के अधिकारियों को दूरभाष पर परिवेदनाओं के त्वरित निस्तारण के निर्देश देते हुए कहा कि प्रत्येक परिवेदना के निस्तारण की सूचना फरियादियों को देकर अवगत कराए ।

यदि परिवेदना का निराकरण उनके स्तर पर संभव नहीं है तो उसकी पूरी जानकारी फरियादी को दी जाए। परिवेदनाओं के निस्तारण में किसी भी प्रकार की लापरवाही बरते जाने पर सख्त कार्रवाई अमल में लाई जावेगी। जनसुनवाई में स्थानांतरण से संबंधित अधिकांश परिवेदनाएं आमजन द्वारा प्रस्तुत की गई।

कांग्रेस कमेटी का विरोध प्रदर्शन : जिला कांग्रेस कमेटी अलवर ने दिल्ली के कालकाजी सीट से भाजपा उम्मीदवार रमेश विधूड़ी द्वारा एआईसीसी महासचिव एवं सांसद प्रियंका गांधी पर अभद्र टिप्पणी के विरोध में कांग्रेस जिलाध्यक्ष योगेश मिश्रा के नेतृत्व में विरोध प्रदर्शन किया गया। प्रवक्ता रिपुदमन गुप्ता ने बताया कि अशोक सर्किल पर कांग्रेसजनों ने रमेश विधूड़ी के खिलाफ नारेबाजी की और पुतला जलाया। कांग्रेस जिलाध्यक्ष ने कहा कि इस तरह की बयानबाजी से बीजेपी का चाल, चरित्र और चेहरा बेनकाब हो गया है। विधूड़ी का बयान बेहद दुर्भाग्यपूर्ण है। शीर्ष पदों पर बैठे भाजपा के नेता महिलाओं के प्रति घोर असंवेदनशील हैं। जबकि शास्त्रों में लिखा है यत्र नार्यस्तु पूज्यंते, रमंते तत्र देवता। सोचंती ज़ामयो यत्र, विन्यस तासु तत्कुलम ।। अतः मातृ शक्ति के खिलाफ ऐसी अभद्र टिप्पणी करने वाली पार्टी का विनाश तय है। इस दौरान कांग्रेस जिलाध्यक्ष योगेश मिश्रा, विधायक मांगेलाल मीणा, अजीत यादव, ग़फ़ूर खान, हीरेन्द्र शर्मा, चन्द्रभान गुर्जर, कमलेश सैनी, जीत कौर,लीली यादव, सुनीता शर्मा, रिपु दमन गुप्ता, शहर अध्यक्ष जे डी आर्यन, अनवर साजिद, पुष्पेन्द्र धाबाई, प्रकाश गंगावत, इम्तियाज खान, सतीश पटेल, जमशेद खान, शिव सहाय मीणा, प्रशान्त राजा, प्रमेन्द्र शर्मा, राम प्रकाश शर्मा, राजेश कृष्ण सिद्ध, चेतराम बड़सीवाल, शीशराम कन्नौजिया, रहमत खान आदि उपस्थित रहे।

राजस्थान आवासन मण्डल, वृत्त प्रथम, प्रताप नगर, जयपुर
क्रमाक-5948 दिनांक-02.01.2025
जाहिर आम सूचना
राजस्थान आवासन मण्डल की प्रताप नगर, सांगानेर योजना में व्यावसायिक भूखण्ड संख्या 103/CS-1/6 (एरिया 4.000 वर्गमीटर) प्रताप नगर सांगानेर का आवंटन श्री गुलशन भुटानी पुत्र स्व. श्री बृजलाल भुटानी को किया जाकर आवंटन पत्र क्रमांक 1456 दिनांक 24.05.2011 को जारी किया गया। श्री गुलशन भुटानी की मृत्यु दिनांक 31.01.2023 को हो जाने के कारण इनकी पत्नी श्रीमती कामना भुटानी पत्नी स्व. श्री गुलशन भुटानी द्वारा उक्त व्यावसायिक भूखण्ड को अपने नाम हस्तान्तरण करने हेतु आवेदन किया गया है। अत उक्त व्यावसायिक भूखण्ड के हस्तान्तरण बाबत किसी व्यक्ति/पक्षकार को कोई आपत्ति हो तो अधोहस्ताक्षर कर्ता के कार्यालय में 7 दिवस में अपनी आपत्ति प्रस्तुत करें अन्यथा यह मानते हुए की मण्डल रिकार्ड में नाम दर्ज करने में किसी को कोई आपत्ति नहीं है श्रीमती कामना भुटानी पत्नी स्व. श्री गुलशन भुटानी का नाम मण्डल रिकार्ड में दर्ज कर दिया जावेगा।
सम्पदा प्रबन्धक, वृत्त प्रथम, राज.आवा. मण्डल जयपुर

कार्यालय ग्राम पंचायत महापुरा पंचायत समिति सांगानेर जयपुर
क्रमांक/ग्रा.प.म./2025/1 दिनांक-01.01.2025
ई-निविदा सूचना 10/2024-25
ग्राम पंचायत महापुरा में निर्माण कार्यों के लिए राजस्थान पंचायतीराज नियम 181 के तहत सक्षम श्रेणी में पंजीकृत संवेदकों से निधारित प्रपत्र में ई-प्रोक्योमेंट प्रक्रिया से वेबसाइट https://eproc.rajasthan.gov.in पर ऑनलाइन निविदाएं आमंत्रित की जाती है विस्तृत विवरण https://sppp.rajasthan.gov.in व https://eproc.rajasthan.gov.in पर देखी व डाउनलोड/अपलोड की जा सकती है।
NIB PEZ2425A0109, UBN NO. PEZ2425WSOB00177 TO 178
ग्राम विकास अधिकार सरपंच
ग्राम पंचायत महापुरा ग्राम पंचायत महापुरा

नाम परिवर्तन

I Kamni margaret D/o John Thomas Massey Address-Jyoti Nagar, Jaipur, Rajasthan Has changed my name from Kamni Margaret to Kamni Noel for all futher purposes.

I have changed my name from Digvijay Singh to Digvijay Singh Rathore S/o Prabhu Singh for all purpose, Resi. 20 Narain Niwas, Near Narain Singh Circle, Jaipur.

I JC 340420F Sub Maj Vijaya Pal Singh Punia resident of Village-Keharpura Khurd, PO-Mohanpura, Tehsil-Chirawa, District-Jhunjhunu, State-Rajasthan has changed my son name from Divesh Punia (Old Name) to Devesh Punia (New Name) as per Affidavit Dated 03.01.2025 before Advocate Notary Kuber Singh Rathore, Jaipur

I JC 340420F Sub Maj Vijaya Pal Singh Punia resident of Village-Keharpura Khurd, PO- Mohanpura, Tehsil-Chirawa, District-Jhunjhunu, State-Rajasthan has changed my Daughter name from Pihu (Old Name) to Pihu Punia (New Name) as per Affidavit Dated 03.01.2025 before Advocate Notary Kuber Singh Rathore, Jaipur

I Suman Devi wife of JC 340420F Sub Maj Vijaya Pal Singh Punia resident of Village-Keharpura Khurd, PO-Mohanpura, Tehsil-Chirawa, District-Jhunjhunu, State-Rajasthan has changed my name from Smt. Suman Devi (Old Name) to Suman Kumari (New Name) as per Affidavit Dated 03.01.2025 before Advocate Notary Kuber Singh Rathore, Jaipur

मैं महादेव प्रसाद पुत्र हीरालाल वर्मा निवासी काबरों का बास तह. कि. रेनवाल, मैं सह शपथ बयान करता हूँ कि मेरे पुत्र बंटी वर्मा की जन्म प्रमाण पत्र एवं आधार कार्ड में जन्म तिथि 01.01.2014 दर्ज है। जो कि सही है। उसकी अंक तालिका में भुलवश जन्मतिथि 01.01.2013 अंकित हो गई। जो कि गलत है। अतः भविष्य में उसकी जन्मतिथि 01.01.2014 को सही व सत्य माना जावें।

कार्यालय तहसीलदार (भू.अ.) कोटपूतली जिला कोटपूतली बहरोड
क्रमांक-भू.अ./24/5549 दिनांक-30.12.2024
विज्ञप्ति
सर्व साधारण को सूचित किया जाता है कि इस न्यायालय में माननीय न्यायालय अति. जिला कलेक्टर महोदय कोटपूतली द्वारा अपील विरूद्ध नामान्तरकरण संख्या 540 ग्राम नौरंगपुरा तहसील कोटपूतली द्वारा तहसीलदार महोदय कोटपूतली द्वारा दिनांक 30.03.2012 को किया गया था। जिसके बाबत प्रकरण तहसीलदार कोटपूतली में विचाराधीन है। उक्त प्रकरण में किसी को कोई आपत्ति हो तो अधोहस्ताक्षरकर्ता के समक्ष उज्र प्रस्तुत कर सकता है।
तहसीलदार (भू.अ.)
तहसील कोटपूतली (कोटपूतली-बहरोड)

सम्मन बनाम मुदायलाह बिनावर कायमी तनकीहात
(ऑर्डर रुल 1 व 5 दीवानी)
अज अदालत सहायक कलेक्टर, सायला बमुकाम सायला ब-इजलास श्रीमान सुरजभान विश्नोई (RAS)
मुदई - पकाराम मुदायलाह - उजी वगैरा
दावा बाबत विभाजन, डिविजन ऑफ होल्डिंग एवं स्थाई निषेधाज्ञा
मुकदमा नम्बर - 85/ सन् 2024
मुसम्मी - 1. उजी पत्नि बगाराम 2.उतमाराम पुत्र मसराराम 3. कशनाराम पुत्र मसराराम 4. दाडमाराम पुत्र मसराराम 5. पंकुदेवी पुत्री मसराराम 6. प्यारीदेवी पुत्र मसराराम 7. पारसाराम पुत्र मसराराम 8. फुलाराम पुत्र मसराराम 9. मोवनदेवी पुत्री मसराराम 10. लीलाराम पुत्र मसराराम 11. बगताराम पुत्र बगाराम 12. सांवलाराम पुत्र बगाराम 13. हंजाराम दत्तक पुत्र रामला जातियान मेघवाल निवासीगण चोराउ तहसील सायला जिला जालोर राज. । 32. राजस्थान सरकार भूमिधारी जरिये तहसीलदार सायला तहसील सायला जिला जालोर राज. हरगाह कि वादीगण ने आपके खिलाफ एक दावा बाबत् विभाजन, डिविजन ऑफ होल्डिंग एव अस्थाई निषेधाज्ञा का किया है , लिहाजा आपको ब-जरिये इस तहरीर के दावे की जवाबदेही के लिए तारीख 10 माह 01 सन 2025 को दिन 11.00 बजे अदालत हाजा में असालतन मार्फत ऐसे वकील के जो हालत मुकदमा से वाकिफ किया गया हो व कुल अमर अहम मुताबिक जवाब दे सके या जिसके साथ कोई ऐसा शख्स हो जो सवाल का जवाब दे सके, हाजिर होने के लिए तलब किया जाता है और आपको हिदायत दी जाती है कि जुमले दस्तावेज जिन पर आप जवाबदेही का ताईन में इस्तेमाल करना चाहता हो, उस दिन पेश करो । आगाह रहो कि अगर वकील मजकूर आप हाजिर न हुए तो दावा आपकी गैर हजारी में सुना व फैसला किया जायेग । बसिब्त मेरे दस्तखत व मुहर अदालत के आज तारीख 24 माह 12 सन 2024 को जारी किया गया ।
रीडर
मोहर सहायक कलेक्टर
(एस.डी. ओ.) सायला

'सोशल मीडिया के दुष्प्रभावों से अपने बच्चों को बचाएं'

भानपुर कलां । ग्राम पंचायत बिलोद स्थित बाणगंगा नदी क्रिकेट मैदान पर चल रही मनोज व मुकेश स्मृति क्रिकेट प्रतियोगिता सोमवार को समाजसेवी डॉ. विकास जैफ के मुख्य आतिथ्यमें सम्पन्न हुई। इस प्रतियोगिता में नटाटा टीम ने एमएमसी बिलोद को हराकर चैम्पियन बनने का गौरव प्राप्त किया।

समापन कार्यक्रम में समाजसेवी डॉ. विकास जैफ ने कहा कि जीवन में सफलता प्राप्त करने के लिए निरंतर प्रयास और मेहनत सबसे महत्वपूर्ण हैं। उन्होंने खिलाड़ियों को प्रेरित करते हुए यह संदेश दिया कि खेल से शारीरिक और मानसिक विकास होता है, साथ ही आपसी भाईचारे और सहयोग की भावना भी बढ़ती है।

बिलोद में मनोज व मुकेश स्मृति क्रिकेट प्रतियोगिता का आयोजन हुआ।

डॉ. जैफ ने बच्चों को सोशल मीडिया के नकारात्मक प्रभावों से बचने की सलाह दी और बताया कि बच्चे अगर सोशल मीडिया की बजाय खेलों में रुचि लें तो उनका समग्र विकास हो सकता है। उन्होंने विशेष रूप से ग्रामीण इलाकों में छिपी हुई खेल प्रतिभाओं का उल्लेख करते हुए कहा कि अक्सर गांवों में खेल प्रतिभाओं को उचित अवसर नहीं मिलते, लेकिन ऐसे अवसरों से इन बच्चों का भविष्य संवर सकता है। समारोह में आयोजकों ने अतिथियों का माल्यार्पण कर स्वागत किया और उनके योगदान को सराहा।

मुख्य अतिथि डॉ जैफ द्वारा प्रतियोगिता में विजेता रही नटाटा टीम को 31,000 रुपये नकद और ट्रॉफी प्रदान की गई, जबकि उपविजेता रही एमएमसी बिलोद टीम को 15,000 रुपये नकद और ट्रॉफी प्रदान कर शुभकामनाएं दी।

समारोह में फूलचंद टीबाला, जयराम मीणा, पूर्व सरपंच प्रतिनिधि बनवारी कसौटियां, हरिनारायण, गुल्ला राम, कैप्टन वीएस राघव, जनसंपर्क अधिकारी बीएल कांकरेलिया, अनूप यादव, छीतर गुरुजी, प्रभुदयाल मीना, बद्री मिट्टया, अशोक, चिमनलाल गुर्जर आदि ग्रामीण और खिलाड़ी मौजूद थे।

खुले नाले दे रहे हादसे को न्योता, पिकअप गिरी

पावटा। पावटा प्रागपुरा नगरपालिका क्षेत्र के पावटा कस्बे के वार्ड न.7 मस्जिद के पास खुले नाले में रविवार की सुबह पानी सप्लाई करने वाली एक पिकअप गाड़ी गिर गई। वार्ड पार्षद शहनाज़ बानो सहित लोगों का आरोप है कि आए दिन इस तरह की घटनाएं हो रही हैं। कस्बे के वार्डो और मुख्य सड़क पर खुले नालों में मवेशी, लोग और गाड़ियां गिर जाती हैं।

पावटा प्रागपुरा नगरपालिका ईओ फतेह सिंह मीणा सहित जनप्रतिनिधियों से इस बारे में 6 महिने में कम से कम दस बार शिकायत की जा चुकी है, लेकिन कोई सुनवाई नहीं हुई। अधिकारियों की लापरवाही का खामियाजा आम लोगों को भुगतना पड़ रहा है। पावटा कस्बे के वार्ड न.7 मस्जिद के पास मुख्य रास्ता अब जानलेवा बन चुका है। मुख्य मार्ग के बीच बने नाले के गंदे पानी की निकासी पर जाल गायब हैं। इसके अलावा इसे ढकने के लिए भी कोई व्यवस्था नहीं की गई है। नाला खुला होने के कारण किसी भी दिन कोई बड़ा हादसा हो सकता है। यहां से रात में गुजरने वाले वाहन के लिए भी बड़ा खतरा है, क्योंकि जरा सी चूक होने पर वाहन नाले में गिर सकता है और बड़ा हादसा हो सकता है। मौहल्ले वासी वैध बनवारी लाल निरंकारी, हीरालाल इन्दोरिया, हंसराज सैन, चिराग खान, मुराद अली, मुखराम, साहिल खान सहित गांव के लोगों ने इस नाले को ढंकवाने की मांग की है। यह नाला पिछले कई माह से बिना जाल के ही पड़ा हुआ है। इससे हादसा होने की आशंका तो है ही, साथ ही नाले से निकलने वाली बदबू से भी स्थानीय व यहां से आने-जाने वाले लोगों के लिए आफत बनी हुई है। इसके अलावा कई मोटरसाइकिल सवार भी इसमें गिरकर चोटिल हो चुके हैं, लेकिन पालिका प्रशासन ने इस ओर रुख नहीं किया है। लोगों की मांग है कि जल्द से जल्द नाले पर जाल लगवाए जाएं ताकि लोगों को इस परेशानी से निजात मिल सके। इस बारे में पावटा प्रागपुरा नगरपालिका ईओ फतेह सिंह मीणा से जानकारी लेनी चाहिए तो उन्होंने फोन उठाने तक की जहमत नहीं उठाई।

मानपुरा माचेड़ी : नेपाल के पोखरा में गत 2 और 3 जनवरी को आयोजित हुई इंडो नेपाल इंटरनेशनल यूथ युवा सीरीज 2024-25 में आमेर के रुण्डल निवासी सुरेश सैनी भारतीय टीम के फिजियोथेरेपिस्ट रहे। सुरेश लगातार भारतीय टीम का हिस्सा रहे हैं।

अधिक ठंठ से बढ़े सर्दी, जुकाम और बुखार के मरीज

पावटा। पिछले एक सप्ताह से सर्दी के तेवर अधिक होने से खांसी, जुकाम व बुखार के मरीजों की संख्या में बढ़ोत्तरी हो गई है। स्थिति यह है कि उपजिला अस्पताल पावटा की ओपीडी में हर रोज एक हजार से अधिक मरीज पहुंच रहे हैं।

अधिक ठंड के चलते सर्वाधिक बुरा असर छोटे बच्चों और बुजुर्गों पर पड़ रहा है। बता दें कि अलसुबह और रात के समय लोगों को सर्दी का अहसास हो रहा है। जबकि दिन के समय धूप खिलने की वजह से लोगों को हल्की गर्मी महसूस हो रही है। रात का पारा कम और दिन का पारा चढ़ने की वजह से लोगों के स्वास्थ्य पर विपरीत प्रभाव पड़ रहा है। जो लोग इसमें लापरवाही बरत रहे हैं, बीमारी की चपेट में आ रहे है। उपजिला अस्पताल की ओपीडी में हर रोज आने वाले मरीजों भीड़ देखी जा सकती है, इनमें छोटे बच्चों की संख्या अधिक देखने को मिल रही है। गांवों व शहर दोनों जगह मरीज बढ़ रहे है। वजह बढ़ती सर्दी के साथ सर्दी, जुकाम, खांसी, गले में दर्द, सिरदर्द, शरीर में दर्द, तेज बुखार हो रहा है। शहर के अलावा ग्रामीण क्षेत्रों से उल्टी-दस्त और बुखार के मरीज भी बड़ी संख्या में अस्पताल में आ रहे है। खानपान और रहन-सहन पर ध्यान दिया जाए तो बीमारियों के प्रकोप से बचा जा सकता है। बुखार से बचने के लिए मच्छरों से बचे और घर और आसपास सफाई रखें, जिससे मच्छर न पनप सकें। शिशु रोग विशेषज्ञ डॉ खुशबू अग्रवाल, डॉ . रवि बंसल, डॉ. अशोक जाट, डॉ. रवि अंजली गुप्ता ने बताया कि अधिक ठंड के चलते मरीज बढ़ने लगे हैं। बुखार, सर्दी, जुकाम-खांसी के साथ कोल्ड डायरिया के मरीज भारी संख्या में पहुंच रहे हैं। खानपान और रहन-सहन पर ध्यान दिया जाए तो बीमारियों के प्रकोप से बचा जा सकता है। बुखार से बचने के लिए मच्छरों से बचे और घर और आसपास सफाई रखें, जिससे मच्छर न पनपें। पिछले 7 दिनों में उप जिला अस्पताल में ओपीडी 30 दिसंबर 2024 सोमवार को 777, 31 दिसंबर 2024 मंगलवार को 546, 01 जनवरी 2025 बुधवार को 451, 02 जनवरी 2025 गुरुवार को 485, 03 जनवरी 2025 शुक्रवार को 430, 04 जनवरी 2025 शनिवार को 643, 05-जनवरी 2025 रविवार को 135, 06 जनवरी 2025 सोमवार को 220 रही। आंकड़ों से स्पष्ट है कि सर्दी बढ़ने की वजह से ओपीडी में मरीज बढ़ रहे हैं। डॉ खुशबू अग्रवाल, डॉ. रवि अंजली गुप्ता ने कहा कि छोटे बच्चों व नवजात का विशेष ध्यान रखें। ठंडी चीजों से परहेज रखें। बच्चों को सुबह होते ही बेड से उठकर सीधे बाहर न जाने दें। फर्श पर नंगे पैर चलने से बचें। इसके अलावा सर्दी के मौसम में पानी कम मात्रा में लोग पीते हैं जो स्वास्थ्य के लिए हानिकारक है। शरीर में पानी की कमी से डिहाइड्रेशन हो सकता है। कोल्ड डायरिया के भी शिकार हो सकते हैं।

- ओपीडी भी एक हजार के पार
- अधिक ठंड के चलते सर्वाधिक बुरा असर छोटे बच्चों और बुजुर्गों पर पड़ रहा है

माध्यमिक शिक्षा बोर्ड, राजस्थान, अजमेर
प्रायोगिक परीक्षा 2025 बाबत् परीक्षार्थियों, विद्यालयों एवं परीक्षकों को आवश्यक निर्देश

1. उच्च माध्यमिक परीक्षा 2025 के नियमित परीक्षार्थियों की प्रायोगिक परीक्षाऐं 09 जनवरी 2025 से 08 फरवरी, 2025 तक तथा **स्वयंपाठी परीक्षार्थियों** की प्रायोगिक **परीक्षाऐं 01 फरवरी से 08 फरवरी, 2025 के मध्य** सम्पादित होगी।
2. प्रायोगिक परीक्षा से संबंधित विद्यालयों की सामग्री यथा उत्तर-पुस्तिकाएँ, ग्राफ पेपर, ड्रॉईग शीट्स आदि बोर्ड द्वारा बनाये वितरण केन्द्रों पर भिजवाई जा रही है। शाला प्रधान इन केन्द्रों से प्रायोगिक परीक्षा सामग्री प्राप्त करावें।
3. विद्यालयों में विषयवार नियुक्त बाह्य परीक्षकों की सूची, नामावली (रोल नं.) तथा प्रायोगिक परीक्षा के अनुदेश आदि बोर्ड वेबसाईट पर अपलोड किये जायेंगे, जिसे शाला प्रधान अपनी ID पासवर्ड से प्रिन्ट कर ले। इसके अतिरिक्त परीक्षा सम्बन्धित आवश्यक सूचनायें भी समय-समय पर बोर्ड वेबसाईट https:rajeduboard.rajasthan.gov.in पर अपलोड की जायेगी। अतः सभी शाला प्रधान विशेष कर परीक्षा अवधि के दौरान नियमित रूप से बोर्ड वेबसाईट का अवलोकन करावें।
4. बोर्ड द्वारा नियुक्त बाह्य परीक्षकों को नियुक्ति की सूचना उनके पंजीकृत मोबाइल पर SMS से भिजवाई जायेगी। परीक्षकों को लॉगिन करने पर उन्हें आवंटित विद्यालयों की सूची व नियुक्ति पत्र की सूची प्राप्त होगी।
5. **समस्त बाह्य परीक्षकों को प्रतिदिन संबंधित विद्यालय में ली जा रही प्रायोगिक परीक्षा की फोटोग्राफ लेकर बोर्ड की ई-मेल आईडी bserpracticalgpsimages@gmail.com पर अनिवार्यतः प्रेषित करनी होगी।**
6. प्रायोगिक परीक्षा के दौरान विद्यालय में नियत तिथि को अनुपस्थित रहने वाले परीक्षार्थी की परीक्षा उसी परीक्षक द्वारा उसी विद्यालय में लिए जा रहे अन्य बैच में शाला प्रधान की विशेष अनुमति से कराई जा सकेगी। **किसी भी स्थिति में अन्य परीक्षक अथवा अन्य विद्यालय में परीक्षा की अनुमति नहीं दी जाएगी, तथा परीक्षार्थी को अनुपस्थित मानकर परिणाम जारी कर दिया जाएगा। जिसके लिये शाला प्रधान एवं परीक्षार्थी स्वयं जिम्मेदार रहेगें।**
7. **स्वंपाठी परीक्षार्थियों** की प्रायोगिक परीक्षाओं की सूचना एवं प्रवेश पत्र बोर्ड की वेबसाईट पर प्रायोगिक परीक्षा के एक सप्ताह पूर्व अपलोड किये जायेंगे। **स्वंयपाठी परीक्षार्थी** अपना प्रवेश-पत्र डाउनलोड कर परीक्षा में प्रविष्ठ होवें।
8. प्रायोगिक परीक्षा हेतु परीक्षा प्रारम्भ से परीक्षा सामाप्ति तक बोर्ड की गोपनीय शाखा में स्थापित नियंत्रण कक्ष दूरभाष सं. 0145-2620739, 2623776, व तकनीकी समस्या (आई.टी. संबंधित) के समाधान हेतु 0145-2632865, 2627454 ई-मेल bserconf2018@gmail.com पर सम्पर्क किया जा सकता है। जिला शिक्षा अधिकारी माध्यमिक (मुख्यालय) पर भी नियंत्रण कक्ष उक्त अवधि में कार्यरत रहेगा।
9. शाला प्रधान एवं नियुक्त बाह्य परीक्षकों हेतु प्रायोगिक परीक्षा से संबंधित विस्तृत जानकारी/दिशा निर्देश बोर्ड की वेबसाईट https:rajeduboard.rajasthan.gov.in पर उपलब्ध करायें जा रहे है।

सचिव

संक्षिप्त

उर्मिला प्रदेश महिला अध्यक्ष बनी

मनोहरपुर । जयपुर की वरिष्ठ समाजसेविका उर्मिला देवी धर्मपत्नी राजेंद्र सोनी को, प्रदेश प्रभारी राजस्थान ओम प्रकाश मौसूण व राष्ट्रीय अध्यक्ष जितेंद्र स्वर्णकार ने राष्ट्रीय स्वर्णकार राजनीतिक भागीदारी मंच में राजस्थान प्रदेश महिला अध्यक्षा पद पर मनोनयन किया है, इस महत्वपूर्ण जिम्मेदारी दिए जाने पर स्वर्णकार समाज में हर्षोल्लास की लहर है और नवीनतम जिम्मेदारी को लेकर उर्मिला देवी जी ने कहा कि समाज की अपेक्षाओं पर खरा उतरने की भरपूर कोशिश रहेगी, समाज के अनेक गणमान्य लोगों ने इस उपलब्धि पर उर्मिला देवी जी को मंगलकामनाएं प्रेषित की हैं। भामाशाह डी के सोनी, समाज सेविका कांता सोनी ने खुशी जाहिर करते हुए कहा कि उर्मिला देवी कर्तव्यनिष्ठ परिश्रमी ईमानदार और दयालु है ये सदैव सबका भला करती रहती हैं।

स्काउट्स का किया सम्मान

शाहपुरा। प्रजापति जागृति मंच विराटनगर द्वारा आयोजित विराट टैलेंट सर्च एग्जाम और भामाशाह सम्मान समारोह का आयोजन विराटनगर में स्थित प्रजापति छात्रावास स्थल पर किया गया। कार्यक्रम में राजस्थान राज्य भारत स्काउट गाइड स्थानीय संघ विराटनगर के कार्यालय विक्रम कुमार कुंभावत, स्काउट मास्टर विनोद कुमार कुंभावत के सानिध्य में 35 स्काउट्स ने पार्किंग स्थल, जल व्यवस्था, भोजन व्यवस्था और अन्य व्यवस्थाओं में स्काउट्स ने अपनी अहम भूमिका निभाई। कार्यक्रम आयोजक सदस्यों ने सभी स्काउट्स और स्काउट मास्टर का साफा पहनाकर और प्रतीक चिन्ह देकर सम्मान किया। समिति अध्यक्ष हजारी लाल कुम्हार ने स्काउट्स के कार्य की प्रशंसा करते हुए कहा की स्काउट्स हमेशा हर परिस्थिति में सेवा कार्य के लिए तैयार रहता है। और अपनी जिम्मेदारियों पर खरा उतरता है। यह संगठन सेवा का पर्याय है।

स्वैच्छिक रक्तदान शिविर 8 को

फुलेरा । कस्बे के श्रीरामनगर स्थित माली सैनी समाज भवन परिसर में दिवंगत प्रसून पंवार की पुण्यतिथि के उपलक्ष में 8 जनवरी को स्वैच्छिक विशाल रक्तदान शिविर का आयोजन किया जाएगा। उपरोक्त जानकारी देते हुए संस्था के पदाधिकारी एवं समाजसेवी तेजकरण सैनी ने बताया कि प्रसून पंवार की 15 वीं पुण्यतिथि 8 जनवरी को प्रसून सेवा संस्थान और मां शाकम्भरी ग्रुप के संयुक्त तत्वाधान में सर्व समाज द्वारा यह शिविर आयोजित किया जा रहा है। इसके चलते संस्था के राजेन्द्र गढ़वाल ने अधिक से अधिक संख्या में लोगों को उक्त रक्तदान शिविर में पधारने का आग्रह किया है।

कुट वाले बालाजी के हुआ पौष बड़ा

पीपलू । कस्बे के श्री कुट वाले बालाजी मंदिर में शनिवार को पौषबड़ा महोत्सव मनाया गया। बालाजी मण्डल द्वारा संगीतमय सुंदरकांड पाठ कर बालाजी की आरती के बाद प्रसादी वितरण की गई। इस अवसर पर गोपाल गर्ग, नोरतमल, पवन, जितु, मुकेश, हनुमान, विनोद, चंद्रप्रकाश, जितेंद्र, कन्हैयालाल, नानगराम, कृष्णकुमार जांगिड़ सहित कई श्रद्धालु मौजूद रहे।

आर्यन ने जीता गोल्ड मेडल

टोंक। मालपुरा उपखण्ड के गांव आंटोली निवासी छात्र आर्यन सैन ने राज्य स्तर पर आयोजित रग्बी खेल प्रतियोगिता में गोल्ड मेडल जीता। प्राप्त जानकारी के अनुसार आंटोली गांव निवासी आयुन पुत्र घासीलाल सैन ने राज्य स्तर पर आयोजित अंडर-16 रग्बी खेल प्रतियोगिता में उत्कृष्ट प्रदर्शन करते हुए गोल्ड मेडल एवं ट्राफी जीतकर टोंक जिले का नाम रोशन किया है। आर्यन की इस उपलब्धि पर ग्रामवासियों व परिजनों में हर्ष का माहौल बना हुआ है।

यूको बैंक का स्थापना दिवस मनाया

कोटपूतली। स्थानीय यूको बैंक की शाखा में सोमवार को ब्रांच मैनेजर विजय कुमार यादव की अध्यक्षता में 83 वाँ स्थापना दिवस मनाया गया। उप शाखा प्रबंधक राहुल अग्रवाल ने ग्रामीणों का आभार व्यक्त करते हुये डिजिटल बैंकिंग योजना से अवगत करवाया। इस दौरान रमेश सिंह चौहान, राहुल अग्रवाल, राजपाल सिंह, उदयवीर सिंह, हंसराज गुप्ता, राकेश शर्मा, भवानी, प्रीतम मेहरा, नरेश चौधरी, रविदत्त, सुशील, अंकित सिंह समेत बैंक कार्मिक व ग्रामीण मौजूद रहे।

'75 हजार साल बाद भी अम्बेडकर निर्मित संविधान को कोई खत्म नहीं कर सकता'

मनोहरपुर। राजस्थान बलाई विकास संस्थान के तत्वावधान में निकटवर्ती त्रिवेणी धाम साईवाड मोड़ स्थित बलाई छात्रावास परिसर में आयोजित 21वें नववर्ष स्नेह मिलन व प्रतिभा सम्मान समारोह में मुख्य अतिथि के रुप में बोलते हुए सांसद जयपुर ग्रामीण राव राजेंद्र सिंह ने कहा कि 75 वर्ष नहीं 75 हजार साल बाद भी डॉ. अम्बेडकर निर्मित संविधान को कोई खत्म नहीं कर सकता।

संविधान ही जन्म के बाद जीवन मूल्यों का आधार है । आज का यह स्नेह मिलन अखंड भारत की सुन्दर तस्वीर है, बलाई समाज चादर बुनने का काम करता था, दरी बुनकर सब समाजों को एक जगह बैठाता है फिर यह समाज कमजोर कैसे हो सकता है। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए गणपत वर्मा ने राव राजेंद्र सिंह का छात्रावास से विशेष लगाव रखने पर आभार व्यक्त किया व अति विशिष्ट अतिथि विधायक विराटनगर कुलदीप

त्रिवेणी धाम साईवाड मोड़ स्थित बलाई छात्रावास परिसर में स्नेह मिलन समारोह सांसद राव राजेंद्र सिंह मुख्य आतिथ्य में हुआ।

धनकड़ से छात्रावास में विधायक कोष से दस लाख रूपये देने के लिए माँग पत्र सौंपा, वर्मा ने कहा कि विधार्थियों को अनर्गल कामों से हटकर उनका उद्देश्य मात्र शिक्षा होनी चहिय। जिसे विधायक ने एक लाख रूपये अपनी और से छात्र हित को ध्यान में रखते हुए ग्यारह लाख रूपये देने की घोषणा की। जिसका उपस्थिति समाज बन्धुओं ने करतल ध्वनि से स्वागत किया। अति विशिष्ट अतिथि सोन चन्द लाडना ने कहा कि पहले परिवार का संगठन, फिर समाज का उसके बाद राष्ट्र का संगठन मजबूत होगा। उन्होंने समाज के बुद्धिजीवी वर्ग से आ ान किया की यह अवसर आपको मिला है इसमें जीतना लोगों का भला कर सकते हो करो, बाद

■ बलाई समाज 21वां स्नेह मिलन समारोह

में हम उस फ्यूज बल्ब की तरह हो जायेंगे जो किसी काम का नहीं रहेगा, अतः अवसर को पहचानो, जागो। संस्थान के अध्यक्ष डॉ. बी. डी. नैनावत महामंत्री राजकुमार इन्द्रेश, वरिष्ठ उपाध्यक्ष सीताराम बुनकर, उपाध्यक्ष जगदीश नीझर, ब्लभ्रम लखेर जगदीश कांट ने सभी अतिथियों का स्वागत किया।

समाज रत्न जी. सी. राय को, समाज गौरव अशोक सामरिया को समाज श्री सुरेश कुमार बुनकर सयुंक्त शासन सचिव वित्त, डॉ. सुनील गोठवाल, रतिराम वर्मा , जी. एल वर्मा महासचिव अम्बेडकर वेल्फेएयर सोसायटी वरिष्ठ नागरिक सम्मान में राधेश्याम राय, बंशीधर राँगेरा, गोपीराम चौहान, गणपत लाल वर्मा, लक्ष्मी नारायण वर्मा, ओमकार बुनकर, भौरी लाल भदालिया,सेढू राम बुनकर रामधन वर्मा,बनवारी लाल, प्रभुदयाल मुंशी, सुखदेव बुनकर, साधूराम दानोदिया, हरीशचंद्र बुनकर, भागीरथ प्रसाद बुनकर, रामकुमार वर्मा, रामचंद्र वर्मा, बंशीधर बुनकर। राजस्थान न्यायिक सेवा में चयनित हर्षल वर्मा, राजस्थान प्रशासनिक सेवा में चयनित स्वाति नैनावत नीट में चयनित शिवांग राज, गर्वित नैनावत, देवराज, लालाराम बुनकर, मेहूल चौहान, आशीष खटावलिया, देवांशु, पीयूष वर्मा, नवनीता, निशा, आर्यन चुनवाल, विशाल, महेश वर्मा, आर्यन वर्मा, मोहित गोठवाल के साथ डॉ. धर्मराज वर्मा, डॉ. कृष्ण गोपाल, डॉ. रेनी वर्मा को पीएचडी उपाधि मिलने पर सम्मानित किया गया। इसके अलावा, एक जनवरी 23 के बाद राजकीय सेवा में लगे 40, छात्रावास में अध्ययन कर सरकारी सेवा में लगे 45, व सेवानिवृत अधिकारी कर्मचारी 60 लोगों को व 20 प्रतिभावन विधार्थियों का भी सम्मानित किया गया।

जिला समन्वयक ने किया औचक निरीक्षण

निवाई। राजकीय महाविद्यालय के एनएसएस इकाई द्वारा गोद ली गई ढ़ाणी जुगलपुरा में 7 दिवसीय शिविर में पांचवे दिन जागरुकता सर्वे व बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ रैली का आयोजन किया गया। शिविर में शिव शिक्षा समिति रानोली व यूनिसेफ ने युवा पहल परियोजना के तहत सक्रिय भागीदारी निभाई। शिविर के दौरान स्वयंसेवकों ने बस्ती में लोगों से संवाद किया कर उनकी समस्याओं को समझते हुए सामाजिक सुरक्षा योजनाओं, शिक्षा, महिला स्वास्थ्य, रोजगार और टीकाकरण जैसे महत्वपूर्ण विषयों पर जागरूक किया। जिला समन्वयक ने स्वयंसेवकों को श्रम व सेवा के महत्व को बताते हुए कहा कि राष्ट्रीय सेवा योजना स्वयंसेवकों को श्रम व सेवा के संस्कार सीखाती है। युवा पहल परियोजना की राज्य समन्वयक प्रियंका सिंह व ब्लॉक समन्वयक दिनेशकुमार बैरवा ने भागीदारी निभाई।

विधायक कुलदीप धनकड़ ने की जनसुनवाई

पावटा। विराटनगर विधानसभा क्षेत्रीय विधायक कुलदीप धनकड ने शनिवार को अपने ग्राम भांकरी निज आवास पर जनसुनवाई कर आमजन की समस्याएं सुनीं और इनका तत्काल प्रभाव से यथोचित निस्तारण करने के लिए अधिकारियों को आवश्यक दिशा-निर्देश दिए।

विराटनगर विधानसभा क्षेत्र से आए लोगों से आत्मीयता के साथ मिले और उनकी समस्याएं सुनीं। उन्होंने मौके पर ही अधिकारियों को समस्याओं के निस्तारण के संबंध आवश्यक कार्यवाही हेतु निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि मुख्यमंत्री श्री भजनलाल शर्मा के नेतृत्व में राज्य सरकार जनकल्याणकारी सोच के साथ एक से बढ़कर एक निर्णय ले रही है। राज्य सरकार का प्रयास है कि आमजन का जीवन स्तर बेहतर हो और उनकी समस्याओं का जल्द से जल्द निस्तारण

विधायक कुलदीप धनकड (दायें से दूसरे) ने आमजन की समस्याओं के त्वरित निराकरण के निर्देश दिए।

कर राहत पहुंचाई जाए। आमजन से परिवेदनाओं को सुनते हुए विधायक कुलदीप धनकड कहा कि राज्य सरकार प्रत्येक व्यक्ति के साथ खड़ी है। इस अवसर पर आमजन ने विधायक धनकड का अभिनन्दन किया।

कैंडल मार्च निकाल कर चेतना को दी श्रद्धांजलि

कोटपूतली। विगत 23 दिसम्बर 2024 को निकटवर्ती ग्राम किरतपुरा की ढ़ाणी बड़ीयाली निवासी 03 वर्षिय मासूम बालिका चेतना पुत्री भूपेन्द्र चौधरी की मृत्यु बोरवेल में गिर कर हो गई थी। दिवंगत बालिका चेतना की आत्मा की शांति के लिये समाजसेवी राधेश्याम शुक्लावास एवं पूर्व पार्षद तारा पूतली के नेतृत्व में कस्बा स्थित नगरपरिषद पार्क से लेकर उपखण्ड कार्यालय तक कैंडल मार्च निकाला गया। जहाँ दो मिनट का मौन रखकर दिवंगत आत्मा की शांति के लिये प्रार्थना की गई। इस दौरान रतनलाल शर्मा, वस्त्र व्यापार संघ के अध्यक्ष होशियार कसाना, उपाध्यक्ष रूपसिंह शेखावत, ख्यालीराम सैनी, रंगलाल आर्य, राजेन्द्र चौधरी, सुरेश चौधरी किरतपुरा, कैलाश यादव, सतपाल यादव, भूपसिंह धानका, बनवारी शास्त्री, रूप कोटपूतली, देशराज आर्य, संजय खेड़ा, विकास वर्मा, भूपसिंह पूतली, विकास खारडिया सहित अन्य मौजूद रहे।

असिस्टेंट प्रोफेसर परीक्षा में सफल प्रतिभागियों ने सिखे साक्षात्कार के गुरु

कोटपूतली। स्थानीय राजकीय एलबीएस पी.जी. महाविद्यालय में राजनीति विज्ञान विषय की आर.पी.एस.सी द्वारा आयोजित असिस्टेंट प्रोफेसर लिखित परीक्षा में सफल हुये प्रतिभागियों के लिये चार दिवसीय साक्षात्कार कार्यशाला एवं मॉक इंटरव्यू कार्यक्रम का समापन हुआ।

कार्यशाला के संयोजक डॉ. पी. सी. जाट ने बताया कि इसमें प्रदेश के 23 अलग-अलग जिलों से 123 प्रतिभागियों ने निःशुल्क रजिस्ट्रेशन करवाते हुये साक्षात्कार तैयारी के संबंध में आवश्यक सुधार, मार्गदर्शन प्राप्त किया। कार्यशाला के आयोजक सचिव घनश्याम कसाना ने उक्त चार दिवसीय कार्यक्रम की गतिविधियों के बारे में बताया कि इस कार्यक्रम के प्रथम दिन साक्षात्कार के संबंध में विशेषज्ञों का व्याख्यान सत्र आयोजित हुआ। दूसरे दिन तीन प्रोफेसर्स के पैनल द्वारा प्रत्येक अभ्यर्थी की व्यक्तिगत काउंसलिंग करते हुये सुधार संबंधी आवश्यक मार्गदर्शन उपलब्ध करवाया गया। तीसरे दिन साक्षात्कार पूर्व अभ्यास के रूप में विषय विशेषज्ञों के चार बोर्ड गठित करते हुये प्रत्येक अभ्यर्थी का मॉक साक्षात्कार लिया गया। कार्यशाला के अंतिम दिन अभ्यर्थियों के साक्षात्कार

असिस्टेंट प्रोफेसर लिखित परीक्षा में सफल हुये 123 प्रतिभागियों ने साक्षात्कार कार्यशाला में हिस्सा लिया।

संबधी फीडबैक सत्र आयोजित किया गया। इस महत्वपूर्ण सत्र में विषय विशेषज्ञ के तौर पर राजस्थान विश्वविद्यालय के राजनीति विज्ञान विभाग के असिस्टेंट प्रोफेसर डॉ. गजेंद्र सिंह फोगाट ने अभ्यर्थियों को साक्षात्कार चरण के मुख्य बिन्दू सहज प्रस्तुतीकरण के संबंध में सुधार के गुर सिखाते हुए विषय की मूल अवधारणाओं की समझ बढ़ाने के संबंध में व्याख्यान प्रस्तुत किया। इस सत्र में सामान्य विशेषज्ञ के तौर पर कोटकासिम उपखंड अधिकारी राकेश रावत ने साक्षात्कार के संबंध में अपने विषय के अलावा राजस्थान सामान्य ज्ञान की बारिकियों पर चर्चा की। विशेषज्ञों के व्याख्यान सत्र के बाद कार्यक्रम के मार्गदर्शक अशोक सिंह, डॉ. हुकम चंद गुर्जर ने विषय विशेषज्ञों के चार बोर्ड गठित करते हुये अभ्यर्थियों का मॉक साक्षात्कार लिया। मॉक साक्षात्कार के उपरांत डॉ. अशोक सिंह ने समापन सत्र के दौरान अभ्यर्थियों के पिछले चार दिन में हुये सुधार प्रदर्शन की प्रशंसा करते हुये बताया कि अभ्यास ही सफलता का मूल मंत्र है ओर विशेषकर साक्षात्कार के संबंध में तो अभ्यास का कोई विकल्प ही नहीं है, क्योंकि इसकी प्रकृति लिखित परीक्षा से अलग होती है। डॉ. विकास यादव ने समापन सत्र की समीक्षा करते हुये अभ्यर्थियों को बताया कि असिस्टेंट प्रोफेसर साक्षात्कार के लिये श्यामपट्ट कार्य अत्यंत महत्वपूर्ण है।

विराटनगर विधानसभा क्षेत्र में विकास कार्यों को मंजूरी

पावटा। विराटनगर विधानसभा क्षेत्र के विधायक कुलदीप धनकड की अनुशंसा एवं प्रदेश सरकार की संवेदनशीलता से विराटनगर विधानसभा क्षेत्र के विकास की रफ्तार और तेज हुई है। एक ओर आधारभूत सुविधाओं में बढ़ोतरी हो रही है तो दूसरी ओर विकास की उम्मीदों को पंख लगे हैं। क्षेत्र की वर्षों पुरानी समस्या अब खत्म होगी।

विकास कार्यों की इसी कड़ी में विराटनगर नगरपालिका मंडल के वार्डो व सार्वजनिक स्थानों पर सीसी सड़क निर्माण, नाली निर्माण, नाली मरम्मत, पार्क, बस स्टैंड पर सुलभ शौचालय, स्नान घर, पेयजल सहित विभिन्न विकास कार्यों के होने से लोगो को सुविधाएं मिल सकेंगी। यह सब विराटनगर विधानसभा क्षेत्र के विधायक कुलदीप धनकड की सक्रियता और विकासपरक सोच के चलते फलीभूत होने जा रही है। विधायक आपके द्वार तीन दिवसीय प्रवास कार्यक्रम के तहत विधायक कुलदीप धनकड द्वारा विराटनगर नगरपालिका वार्डवासियों की मांग पर स्वीकृत किए गए कार्यों को लेकर 30 दिसंबर को आयोजित बजट बैठक की अनुपालना में पालिका क्षेत्र के विभिन्न कार्यों के निर्माण हेतु 8 करोड़ 31 लाख 5 हजार की प्रशासनिक एवं वित्तीय स्वीकृति जारी की गई। गत 26 दिसंबर से 28 दिसंबर

■ भाजपा कार्यकर्ताओं ने खुशी व्यक्त कर विधायक का जताया आभार

2024 विधायक आपके द्वार तीन दिवसीय प्रवास कार्यक्रम के तहत विधायक कुलदीप धनखड़ द्वारा विराटनगर पालिका मंडल पालिका क्षेत्र के सभी वार्डो का दौरा कर वार्ड वासियों की मांग पर विभिन्न कार्य स्वीकृत किए गए थे, उक्त कार्यों की क्रियान्विति हेतु पालिका द्वारा आयोजित बजट बैठक की अनुपालना में विभिन्न कार्यों की प्रशासनिक एवं वित्तीय स्वीकृति जारी हो गई है, जिनका कार्य अगले सप्ताह में प्रारंभ कर दिया जाएगा। इन विकास कार्यों की स्वीकृति मिलने पर विराटनगर क्षेत्र वासियों ने विधायक कुलदीप धनकड का आभार व्यक्त किया व कृतज्ञता प्रकट की । नगर की वर्षों पुरानी समस्याओं से निजात मिलने वाली इन विकास कार्यों की स्वीकृति मिलने पर प्रसन्नता व्यक्त करते हुए कहा कि विराटनगर की गरिमा पूरे विश्वपटल पर विख्यात है और इसकी गरिमा तथा जनभावनाओं के अनुरूप विकास कार्यों को धरातल पर क्रियान्वित करना हमारी प्रथम और परम उत्तरदायित्व है।

जैन नसिंया मंदिर में 7 दिवसीय गणधर वलय अनुष्ठान शुरू

निवाई । सकल दिगम्बर जैन समाज के तत्वावधान मे सन्त निवास नसिंया जैन मंदिर में आर्यिका विशेष मति माताजी, आर्यिका श्रुतमति माताजी व आर्यिका सुबोध मति के सानिध्य में 7 दिवसीय गणधर वलय जाप्य अनुष्ठान का आयोजन किया गया जिसमें सैकड़ों श्रद्धालुओं ने भाग लिया।

जैन धर्म प्रचारक विमल जौंला एवं

■ अनुष्ठान में एक लाख मंत्रो के जाप का रखा लक्ष्य

त्रिलोक रजवास ने बताया कि कार्यक्रम का शुभारंभ राधेश्याम मित्तल, ज्ञानचंद जैन, पदमचंद पीपलू, राजेश सांवलिया, धर्मचंद सेदरिया एवं गिर्राज चंवरिया ने भगवान शांतिनाथ जी के समक्ष दीप प्रज्वलित कर किया। इस दौरान माणकचंद सेदरिया, धनराज चंवरिया, अनिल पराणा, राजेन्द्र बगड़ी, हर्ष सर्राफ, महावीरप्रसाद ठोलिया, राकेश सांवलिया एवं राजेश बनेठा सहित कई

निवाई के नसियां मंदिर में आयोजित गणधर वलय जाप्य अनुष्ठान में पूजा-अर्चना करते हुए श्रद्धालु।

श्रद्धालुओं ने गाजे बाजे के साथ गणधर वलय जाप्य अनुष्ठान में मण्डलजी पर मंगल कलश की स्थापना की। सुनील भाणजा ने बताया कि आर्यिका विशेष मति माताजी एवं सरिता दीदी के मंत्रोच्चार द्वारा इन्द्र इन्द्राणियो ने जाप्य अनुष्ठान के तहत सोमवार को 6 हजार 480 मंत्रो से आहुतियां देकर जाप्य अनुष्ठान किए गए। उन्होंने बताया कि इस जाप्य अनुष्ठान में आर्यिका माताजी द्वारा 12 हजार 960 मंत्रित जाप्य अनुष्ठान एवं श्रद्धालुओं द्वारा 1 लाख गणधर वलय जाप्य अनुष्ठान का लक्ष्य रखकर आयोजन किया जा रहा है। जैन समाज के मंत्री महावीरप्रसाद पराणा एवं शंभु कठमाणा ने बताया कि सोमवार को मीनाक्षी बगड़ी, बबीता जैन, इन्द्रा जैन, वीरमती जैन, उर्मिला जैन, आशा जैन, मंजू सेदरिया, ममता चंवरिया व रानी चंवरिया सहित कई श्रद्धालुओं ने 378 श्रीफल मण्डप पर समर्पित किए। इस अवसर पर आर्यिका विशेष मति माताजी ने धर्म सभा को संबोधित करते हुए कहा कि जो व्यक्ति विशुद्ध भाव एवं मन से शुद्धि पूर्वक गणधर वलय स्त्रोत मंत्र का जाप करता है उसका पुण्य का आश्रय एवं पाप की निर्जरा होती है। अतुल ठोलिया ने बताया कि 7 दिवसीय जाप्य अनुष्ठान गाजे बाजे से गुरुवार तक चलेगा।

सात दिवसीय विशेष शिविर का शुभारंभ

श्रीमाधोपुर। कस्बे के महात्मा गाँधी पी.जी. कॉलेज श्रीमाधोपुर में राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई प्रथम का सात दिवसीय विशेष शिविर का आयोजन गोद लिए गए गाँव अक्रिय आश्रम में उद्घाटन किया गया।

कार्यक्रम संयोजक मांगीलाल कुमावत ने बताया कि सुशीला देवी (प्रभारी राष्ट्रीय सेवा योजना) के सानिध्य में आज 7 दिवसीय विशेष शिविर का उद्घाटन अक्रियधाम आश्रम के महंत श्री श्री 108 स्वामी ब्रह्मा आत्मानंद महाराज व समाजसेवी वीरेंद्र काजला, महाविद्यालय निदेशक मोहर सिंह खर्रा व प्राचार्य डॉ वी.के. सैनी के कर-कमलो द्वारा मां सरस्वती व महाविद्यालय संस्थापक स्व. चौ. प्रताप सिंह खर्रा की प्रतिमा के समक्ष दीप प्रज्वलित कर कार्यक्रम का विधिवत शुभारंभ किया गया। प्रभारी सुशीला देवी ने बताया कि इस शिविर का आयोजन 6 से 12 जनवरी 2025 तक होगा। सर्वप्रथम बालक और बालिका स्वयंसेवकों को विभिन्न दलों में विभाजित किया गया।

सार-समाचार

हेलमेट लगाने की हिदायत

कोटपूतली। कोटपूतली में राष्ट्रीय सडक सुरक्षा माह का शुभारम्भ किया गया। राष्ट्रीय सडक सुरक्षा माह 01 से 31 जनवरी तक मनाया जायेगा। जिसके तहत पुलिस द्वारा वाहन चालकों को यातायात नियमों की जानकारी दी जा रही है। सोमवार को सड़क सुरक्षा जागरूकता के तहत डीएसपी राजेन्द्र सिंह बुरडक द्वारा यातायात नियमों की पालना के लिये वाहन चालकों को गुलाब का फूल देकर समझाईश की गई। अभियान के दौरान बिना हेलमेट वाले वाहन चालकों को डीएसपी ने गुलाब के फूल देते हुये और उनसे समझाईश करते हुये हेलमेट लगाने की हिदायत दी। हेलमेट लगाने वाले व यातायात नियमों की पालना करने वाले वाहन चालकों को भी गुलाब का फूल देकर बधाई दी गई। तीन दिन तक फूल देकर समझाईश करने के बाद पुलिस यहां ट्रैफिक नियमों की सख्ती से पालना करवायेगी। डीएसपी राजेन्द्र सिंह बुरडक ने बताया कि सडक सुरक्षा नियमों का उल्लंघन करने वाले और मोटर व्हीकल एक्ट के तहत नियमों की पालना नहीं करने वाले वाहनों पर सख्त कार्यवाही की जायेगी। साथ ही राजस्थान पुलिस की ओर से विशेष पहल कर सडक सुरक्षा अभियान को जन-जन का अभियान बनाया जायेगा। डीएसपी ने बताया कि सडक सुरक्षा के प्रति लोगों में जागरूकता बढ़ाने के लिये विशेष अभियान चलाया जा रहा है। जिसके अंतर्गत स्कूलों, कॉलेजों व कार्य स्थलों पर जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किये जायेंगे। उन्होंने बताया कि जागरूकता के माध्यम से सडक दुर्घटनाओं को न्यूनतम करने का प्रयास किया जायेगा।

प्रतिभा सम्मान समारोह का आयोजन

शाहपुरा । साईवाड मोड़ त्रिवेणी धाम में स्थित बलाई छात्रावास परिसर में राजस्थान बलाई विकास संस्थान के तत्वावधान में 21वां नववर्ष स्नेह मिलन व प्रतिभा सम्मान समारोह आयोजन किया गया। मुख्य अतिथि राव राजेंद्र सिंह सांसद जयपुर ग्रामीण थे। जगदीश बुनकर अध्यापक ने बताया कि इस अवसर पर समाज प्रतिभा सम्मान पुरस्कार, वरिष्ठ नागरिक सम्मान, सेवानिवृत्त अधिकारी/कर्मचारी सम्मान, आइएएस, आरजेएस व नीट में चयनित प्रतिभा सम्मान, पीएचडी के सम्मान, एक जनवरी 23 के बाद सरकारी सेवा में चयनित, छात्रावास में अध्ययन कर सरकारी सेवा में चयनित व बोर्ड परीक्षाओं में 80 प्रतिशत अंक प्राप्त 20 प्रतिभाओं का सम्मान किया गया। इस कार्यक्रम के अध्यक्षता गणपत वर्मा विशिष्ट अतिथि कुलदीप धनकड़ विधायक, संस्थान अध्यक्ष डॉ बी. डी .नैनावत, स्वाति नैनावत , हर्षल वर्मा , सुरेश वर्मा, रतिराम बुनकर, डॉ.सुनील गौठवाल, जी.सी.राय, अशोक सामरिया,जी.एल.वर्मा, जगदीश अ. नीझर,महामंत्री राजकुमार इंद्रेश, कानाराम प्रधानाचार्य, घनश्याम सौठवाल, शंकर लाल जाटावत, जयराम वर्मा, बाबूलाल बुनकर अ.दिव्यदत्त राय, प्रमोद कुमार, राहुल कुमार बुनकर, राकेश वर्मा, लालचंद बुनकर, सुरेंद्र बलाई सहित उपस्थित थे।

शहीद सुबेसिंह की पुण्य तिथि मनाई

पावटा। उपखंड पावटा के ग्राम चौबाला में शहीद सुबेसिंह संघर्ष समिति के तत्वाधान में शहीद सुबेसिंह की पुण्यतिथि विधायक प्रतिनिधि आशीष धनकड़ के मुख्य आतिथ्य में मनाई गई। विधायक प्रतिनिधि आशीष धनकड ने शहीद सुबेसिंह की मूर्ति पर माल्यार्पण कर नमन करते हुए कहा कि जवान सीमा पर डटकर प्राणों की परवाह किए बिना हमारी रक्षा करते हैं। इसलिए युवाओं को शहीदों के जीवन से प्रेरणा लेनी चाहिए। सैनिक से बड़ा कोई देशभक्त नहीं है। हम सभी को शहीद परिवारों के प्रति कृतज्ञता का भाव रखना चाहिए। वहीं शहीद सुबेसिंह की मां ग्यारसी देवी व वीरांगना सुणी देवी का शाल ओढाकर सम्मान किया गया। शहीद सुबेसिंह संघर्ष समिति के अध्यक्ष अनिल राठी ने कहा कि हमारी समिति जब तक संघर्ष करती रहेगी जब तक शहीद सुबेसिंह को सम्मान नहीं मिल जाता और हमेशा शहीदों के सम्मान में और शहीद परिवार हर विकट परिस्थिति में साथ खड़े रहेंगे। देश की सेवा करते हुए अपना बलिदान करने वाले वीर सपूतों का सम्मान हमेशा करते रहेंगे। इस दौरान भरताराम धनकड़, रामेश्वर धनकड़, राकेश धिनधवाल, सोणाराम पलसानिया, अनिल राठी, शेरसिंह राजपूत, राम करण राठी, शीश राम पलसानिया, जय सिंह धनखड़, रोहिताश पलसानिया, सचिन पलसानिया सहित ग्रामीण मौजूद रहे।

प्राचार्य डॉ.सैनी को अवार्ड मिला

श्रीमाधोपुर । शिक्षा, साहित्य, समाज सेवा और पर्यावरण संरक्षण के क्षेत्र में अपने उत्कृष्ट योगदान के लिए श्री आदर्श महिला बीएड कॉलेज, श्रीमाधोपुर के प्राचार्य डॉ. बी. एल. सैनी को "शेखावाटी गौरव अवार्ड 2025" से सम्मानित किया गया। यह सम्मान शिमला में आयोजित एक भव्य समारोह में प्रदान किया गया।समारोह के मुख्य अतिथि पूर्व ऊर्जा मंत्री डॉ. जितेंद्र सिंह, विशिष्ट अतिथि पर्यावरणविद डॉ. हरिसिंह गोदारा, और अध्यक्षता पूर्व आईएएस डॉ. मनोज कुमार सिंघानिया यूनिवर्सिटी ने की। मोहित सैनी और अंकित सैनी ने कहा कि डॉ. सैनी ने शिक्षा, समाज सेवा, पर्यावरण संरक्षण और साहित्य के क्षेत्र में सराहनीय कार्य किए हैं। उनके योगदान ने न केवल शेखावाटी क्षेत्र का मान बढ़ाया है, बल्कि समाज को नई दिशा दी है। आयोजन समिति ने डॉ. सैनी की उपलब्धियों की सराहना करते हुए कहा कि उनका समर्पण और कार्य समाज के लिए प्रेरणा स्त्रोत हैं। इस सम्मान ने उनके परिवार, कॉलेज स्टाफ और गांव में खुशी का माहौल बना दिया है।डॉ. सैनी का यह सम्मान समाज के सभी वर्गों को नई ऊर्जा और प्रेरणा प्रदान करेगा।

रमेश विधुड़ी का फूंका पुतला

निवाई । भाजपा नेता रमेश विधुड़ी द्वारा कांग्रेस नेता एवं सांसद प्रियंका गांधी के पर की गई अमर्यादित टिप्पणी से कांग्रेस कार्यकर्ताओं मे रोष व्याप्त हो गया। जिसको लेकर पूर्व छात्रसंघ अध्यक्ष बाबूलाल मीणा व छात्र नेता मुकेश मीणा सुनारा के नेतृत्व में कार्यकर्ताओं ने रमेश विधुडी को पुतला जलाकर विरोध प्रकट किया। पूर्व छात्रसंघ अध्यक्ष बाबूलाल मीणा ने कहा कि रमेश विधुड़ी द्वारा सांसद प्रियंका गांधी के पर की गई अमर्यादित टिप्पणी से उनकी कुंठित मानसिकता की परिचायक है। उन्होंने इस स्तरहीन और अपमानजनक बयान की कड़ी निंदा की। विधूडी ने नारी शक्ति के प्रति असभ्य भाषा का प्रयोग करके देश की अस्मिता, संस्कृति व सभ्य समाज के करोड़ों लोगों को ठेस पहुंचाई है। इस अवसर पर एनएसयूआई के प्रदेश संयुक्त सचिव प्रशांत गुर्जर, विक्रमसिंह गुर्जर, पूर्व छात्रसंघ अध्यक्ष अजय मधुकर, बनवारी मीणा बरथल, अशोक चिता, गिर्राज मीणा बहकवा, दीपक परिड़वाल, लखन, लोकेश व रामकेश कई एनएसयूआई के कार्यकर्ता मौजूद थे।

कड़ाके की सर्दी से कंपकपा उठे लोग

निवाई । क्षेत्र में पिछले तीन दिन से लगातार कोहरे का राज छाया हुआ है। सुबह से दोपहर तक घना कोहरा छाया हुआ रहता है जिससे विशेष रूप से वाहन चालकों को भारी परेशानी उठानी पड़ रही है। गहरी धुंध होने से वाहनों की रफ्तार काफी कम हो गई है। सोमवार को 10 बजे तक भी राष्ट्रीय राजमार्ग पर वाहन रेंग-रेंग कर चलते रहे। दो दिन की राहत के बाद पिछले 3 दिन से कड़ाके की सर्दी से लोग कंपकपा उठे। सोमवार को सुबह 1 बजे तक भी शहर का रक्तांचल पर्वत कोहरे में छिपा रहा। दोपहर 1:30 कोहरा छटने लगा और गुनगुनी धूप निकली। धूप से लोगों ने सर्दी से कुछ राहत महसूस की। सर्दी से बचने के लिए राष्ट्रीय राजमार्ग सहित कई स्थानों पर लोग घंटों तक अलाव जलाकर तपते हुए नजर आए। सर्दी से बचाव के लिए लोग कंबल, शॉल, रजाई, मफलर, टोपा व दस्ताने का उपयोग करने सहित दिनभर अलावों पर जमे रहते है तथा खेतों पर भी किसानों को अलाव का सहारा लेना पड़ रहा है।

ई-मित्र संचालक से मारपीट

कोटपूतली। राजमार्ग स्थित जीण माता वाली गली में एक ई-मित्र संचालक से मारपीट व दुकान में तोडफोड़ किये जाने का मामला सामने आया है। इस सम्बंध में पीडित कस्बे के मौहल्ला बड़ाबास निवासी भूपेन्द्र पुत्र देवी सहाय सैनी ने स्थानीय थाने में रिपोर्ट दी है कि सोमवार 06 जनवरी को दोपहर करीब 02.30 बजे गहलोत मार्केट, जीण माता मंदिर की गली स्थित बालाजी कम्प्यूटर एण्ड ई-मित्र सैंटर पर बैठ कर काम कर रहा था। जहाँ दुकान पर ग्राहक भी बैठे थे। इतनी ही देर में परिवादी का भाई खेमचंद सैनी व मोनू निवासी रामसिंहपुरा 08-10 लोगों के साथ दुकान में घुस गये एवं पीडित के साथ मारपीट करते हुये दुकान में कम्प्यूटर, प्रिंटर सहित दुकान का सीसा भी तोड़ गये। साथ ही गले से 03 हजार रूपये की नकदी भी निकाल ले गये। सूचना पर पहुँची पुलिस ने मौका मुआयना किया। वहीं एक मोटरसाईकिल भी बरामद की। फिलहाल पुलिस मामले की जाँच कर रही है।

अधिवक्ताओं ने किया शोक व्यक्त

कोटपूतली। अभिभाषक संघ द्वारा सोमवार को न्यायालय परिसर के बार रूम में मौन रखकर विभिन्न दिवंगत आत्माओं को श्रद्धांजलि दी गई। संघ के अध्यक्ष एड. उदयसिंह तंवर ने बताया कि वरिष्ठ अधिवक्ता हरिशंकर चतुर्वेदी के पिता वैद्य ताराचंद चतुर्वेदी एवं एड. रमेश रावत व एड. शेरसिंह रावत के भाई हरदान रावत का आकस्मिक निधन होने पर दो मिनट का मौन रखकर श्रद्धांजलि दी गई।

अगर आप रन नहीं बना सकते, तो कम से कम इंटेंट और आक्रामकता तो दिखाएं। मैं चाहता था कि वह गेंदबाजों को थका दें और गेंद को पुराना कर दें। अपने साथियों की मदद करें और रन ना बनने पर भी डटे रहे। - **शुभमन गिल**

भारतीय बल्लेबाज, खेल के बारीकियों के बारे में बोलते हुए।

खेल जगत

आज का खिलाड़ी — **राशिद खान**

सात विकेट लेने वाले राशिद खान प्लेयर ऑफ द मैच रहे। वहीं अफगानिस्तान के ही बैटर रहमत शाह प्लेयर ऑफ द सीरीज चुने गए। सीरीज का पहला टेस्ट ड्रॉ रहा था। राशिद खान को 7 विकेट अफगानिस्तान से लेग स्पिनर राशिद खान ने दूसरी पारी में 7 विकेट लिए। लेफ्ट आर्म स्पिनर जिया उर रहमान को 2 विकेट मिले, जबकि एक बैटर रनआउट भी हुआ। राशिद को इस प्रदर्शन के लिए प्लेयर ऑफ द मैच का अवॉर्ड मिला। उन्होंने पहली पारी में 4 विकेट लिए थे, वहीं राशिद ने बैट से दोनों पारियों में 48 रन भी बनाए।

क्या आप जानते हैं ?... भारत टी-20 इतिहास में एक कैलेंडर वर्ष में 200 छक्के लगाने वाली पहली टीम बन गई, ऐसा उसने 2024 में किया।

अफगानिस्तान ने 72 रन से जीता बुलवायो टेस्ट, राशिद को 7 विकेट

बुलवायो, 6 जनवरी। अफगानिस्तान ने जिम्बाब्वे को दूसरा टेस्ट 72 रन से हरा दिया। इसी के साथ टीम ने सीरीज भी 1-0 से अपने नाम कर ली। दूसरी पारी में 7 विकेट लेने वाले राशिद खान प्लेयर ऑफ द मैच रहे। वहीं अफगानिस्तान के ही बैटर रहमत शाह प्लेयर ऑफ द सीरीज चुने गए। सीरीज का पहला टेस्ट ड्रॉ रहा था। राशिद खान को 7 विकेट अफगानिस्तान से लेग स्पिनर राशिद खान ने दूसरी पारी में 7 विकेट लिए। लेफ्ट आर्म स्पिनर जिया उर रहमान को 2 विकेट मिले, जबकि एक बैटर रनआउट भी हुआ। राशिद को इस प्रदर्शन के लिए प्लेयर ऑफ द मैच का अवॉर्ड मिला।

उन्होंने पहली पारी में 4 विकेट लिए थे, वहीं राशिद ने बैट से दोनों पारियों में 48 रन भी बनाए। पहली पारी में 157 रन ही बना सका अफगानिस्तान गुरुवार को जिम्बाब्वे ने टॉस जीतकर बॉलिंग चुनी।

अफगानिस्तान टीम पहली पारी में 157 रन ही बना सकी। राशिद खान ने सबसे ज्यादा 25 रन बनाए। 7 अन्य बैटर्स ने 10 रन का आंकड़ा पार किया, लेकिन कोई भी बड़ी पारी नहीं खेल सका। अफगानिस्तान से जिया-उर-रहमान 8 और अहमदजई 2 ही रन बना सके। इस्मात आलम तो खाता भी नहीं खोल सके। जिम्बाब्वे से पहली पारी में सिकंदर रजा और न्यूमैन न्याम्हुरी ने 3-3 विकेट लिए।

ब्लेसिंग मुजरबानी को 2 और रिचर्ड नगारावा को 1 विकेट मिला। जिम्बाब्वे की खराब शुरुआत पहली पारी में जिम्बाब्वे की शुरुआत बेहद खराब रही। टीम ने 41 रन पर ही 4 विकेट गंवा दिए। जॉयलॉर्ड गुम्बी 8, बेन करन 15 और डायन मायर्स 5 ही रन बना सके। टी कायतानो खाता भी नहीं खोल सके। सिकंदर रजा ने फिर कप्तान क्रैग इरविन के साथ पारी संभाली। दोनों ने फिफ्टी लगाई और स्कोर 100 रन के पार पहुंचा दिया। रजा 61 रन बनाकर आउट हुए।

भारत का अगला टेस्ट कप्तान कौन

नई दिल्ली, 6 जनवरी। बॉर्डर गावस्कर ट्रॉफी में भारत को 10 साल बाद सीरीज हार का सामना करना पड़ा। सिडनी में रविवार को भारत ने 6 विकेट से पांचवां टेस्ट गंवाया और सीरीज 3-1 से मेजबान टीम के नाम हो गई। कप्तान रोहित शर्मा न्यूजीलैंड और ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ पिछली दोनों सीरीज हार चुके हैं।

रोहित ने पांचवें टेस्ट में खुद को रेस्ट भी दिया, टेस्ट में उनके प्रदर्शन को देखते हुए उनकी कप्तानी जाना तय है। जसप्रीत बुमराह उप कप्तान हैं, लेकिन उनका इंजर्ड रहना टीम के लिए परेशानी बन सकता है। विराट कोहली 3 साल पहले कप्तानी छोड़ चुके हैं, लेकिन सिडनी में उन्होंने बुमराह की गैरमौजूदगी में बेहतरीन कप्तानी की थी। रोहित का बाहर होना तय क्यों? रोहित शर्मा की कप्तानी में टीम इंडिया घर में न्यूजीलैंड के खिलाफ 3-0 से टेस्ट सीरीज हार गई। भारत 12 साल बाद घर में कोई टेस्ट सीरीज हारा था। ऑस्ट्रेलिया में उन्होंने 3 बार कप्तानी की और 2 मैचों में टीम को हार मिली। बारिश के कारण तीसरा मैच ड्रॉ रहा। इसी के साथ भारत को में भी 10 साल बाद सीरीज हार का सामना करना पड़ा। रोहित की कप्तानी जारी रखने में सबसे बड़ा रोल उनकी बैटिंग का भी है। जो इस वक्त बहुत खराब चल रही है। ऑस्ट्रेलिया में वह 31 रन ही बना सके। 2024 में तो वह 10 बार सिंगल डिजिट स्कोर पर आउट हुए। जिस कारण उन्हें सिडनी में खुद को ड्रॉप करना पड़ा। बुमराह और कोहली ने उनसे बेहतर कप्तानी की, ऐसे में रोहित का टेस्ट कप्तान बने रहना बहुत मुश्किल है। जसप्रीत बुमराह ने ऑस्ट्रेलिया दौरे पर 2 टेस्ट में कप्तानी की। पर्थ में टीम को जीत मिली, लेकिन सिडनी टेस्ट ऑस्ट्रेलिया ने जीत लिया। मुकाबले की पहली पारी में ही बुमराह इंजर्ड हो गए, उन्हें बैक स्पास्म की शिकायत हुई। जिसके बाद वह मैच में दोबारा बॉलिंग नहीं कर सके, इस कारण भारत दूसरी पारी में दबाव भी नहीं बना सका।

आयरलैंड के खिलाफ भारतीय महिला टीम का ऐलान, मंधाना को कप्तानी

राजकोट, 6 जनवरी। महिला सिलेक्शन कमेटी ने आयरलैंड के खिलाफ भारतीय टीम का ऐलान कर दिया है। सोमवार को जारी टीम में कप्तान हरमनप्रीत कौर और रेणुका सिंह ठाकुर को आराम दिया गया है। कौर की गैरमौजूदगी में स्मृति मंधाना भारतीय महिला टीम की कप्तानी करेंगी। ऑलराउंडर दीप्ती शर्मा को टीम का उपकप्तान बनाया गया है।आयरलैंड के खिलाफ 3 वनडे की सीरीज 10 जनवरी से शुरू होगी।

तीनों वनडे मैच राजकोट के निरंजन शाह स्टेडियम में होंगे।मंधाना ने वेस्टइंडीज के खिलाफ 193 रन बनाए पिछले महीने वेस्टइंडीज के खिलाफ टी-20 और वनडे दोनों में शानदार प्रदर्शन करने के बाद मंधाना अपने शानदार फॉर्म को जारी रखना चाहेंगी। मंधाना कैरबियाई विमेंस के खिलाफ टी-20 में 193 रन बनाकर टॉप स्कोरर रही थी। उन्होंने 64.33 की औसत और 159.50 के स्ट्राइक रेट से रन बनाए थे।वहीं वनडे में वह हरलीन देयोल के बाद दूसरी सबसे ज्यादा रन बनाने वाली खिलाड़ी थीं।

उन्होंने 88.10 की स्ट्राइक रेट और 49.33 की औसत से 148 रन बनाए। लगभग एक साल बाद भारतीय टीम में वापसी करने वाली हरलीन अपनी शानदार फॉर्म जारी रखना चाहेंगी। उन्होंने वेस्टइंडीज के खिलाफ अपना पहला वनडे शतक जमाया। दिसंबर में भारतीय महिला टीम ने वेस्टइंडीज को 3-0 से सीरीज हराया था। आयरलैंड के खिलाफ इंडियन विमेंस टीम 3 मैच 10, 12 और 15 जनवरी को खेलेगी।

आयरलैंड के खिलाफ तीन मैचों के लिए भारतीय टीम : स्मृति मंधाना (कप्तान), दीप्ति शर्मा (उपकप्तान), प्रतिका रावल, हरलीन देयोल, जेमिमा रोड्रिग्स, उमा छेत्री (विकेटकीपर), ऋचा घोष (विकेटकीपर), तेजल हसब्निस, राघवी बिस्ट, मिन्नू मणि, प्रिया मिश्रा, तनुजा कंवेर, तितास साधु, साइमा ठाकोर, सयाली सतघरे।

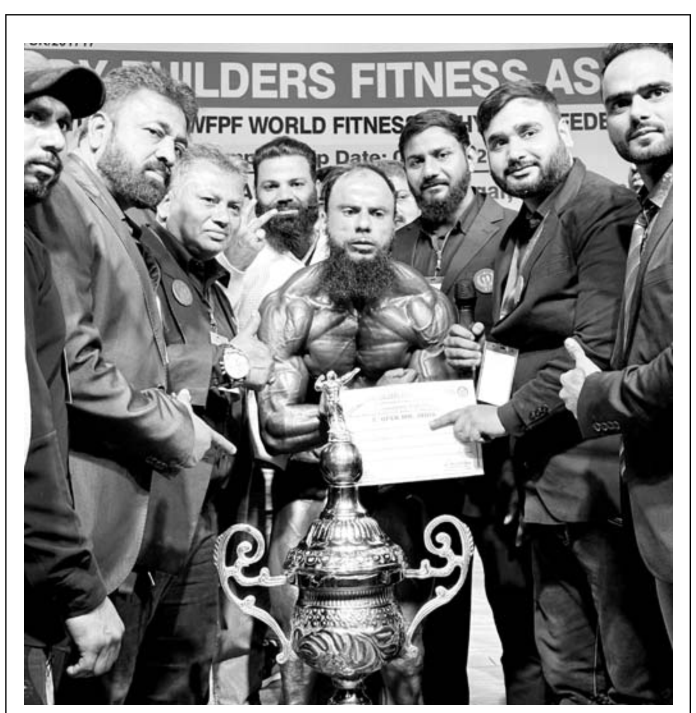

ओपन मिस्टर इंडिया बॉडी बिल्डिंग चैम्पियनशिप का आयोजन

जयपुर, 6 जनवरी। प्रताप नगर स्थित निर्मला ऑडिटोरियम में ओपन मिस्टर इंडिया बॉडी बिल्डिंग चैंपियनशिप का आयोजन किया गया। इस प्रतियोगिता में लगभग 100 से अधिक प्रतिभागियों ने भाग लिया। इस प्रतियोगिता में उदयपुर के साजिद को चैंपियन ऑफ चैंपियन तथा भीलवाड़ा के मध्य प्रदेश के समीर को मोस्ट इंप्रूव का खिताब दिया गया। फेडरेशन के अध्यक्ष मंसूर खान ने बताया कि इस प्रतियोगिता को सफलतापूर्वक आयोजित करने में सभी खिलाड़ियों की अहम भूमिका रही है।

2025 के लिए नए लक्ष्य तय करने शुरू किए : गुकेश

बेंगलुरु, 6 जनवरी। डी गुकेश ने पिछले एक महीने में कई उपलब्धियां हासिल की हैं जिसमें विश्व चैम्पियनशिप में जीत के बाद हाल में मेजर ध्यानचंद खेल रत्न पुरस्कार के लिए चुना जाना शामिल है लेकिन शतरंज का यह प्रतिभाशाली खिलाड़ी अब 2025 में 'चुनौतीपूर्ण' वर्ष का सामना करने के लिए अपना ध्यान और लक्ष्य फिर से निर्धारित करना चाहता है। गुकेश 17 जनवरी से नीदरलैंड के विज्क आन जी में शुरू होने वाले टाटा स्टील टूर्नामेंट में शिरकत करेंगे जिसमें अनीश गिरी, अर्जुन एरिगेसी, फैबियानो कारूआना और आर प्रज्ञानानंद जैसे शीर्ष खिलाड़ी भी होंगे। गुकेश ने रविवार को वेस्टब्रिज कैपिटल द्वारा आयोजित सम्मान समारोह के दौरान मीडिया से कहा, "हां, 2025 काफी चुनौती पेश करेगा। बहुत सारे नए और दिलचस्प टूर्नामेंट होंगे। विश्व चैम्पियनशिप अब बीती बात हो चुकी है। मैं इसे जीतकर और सभी पुरस्कारों से बहुत खुश हूं।" उन्होंने कहा, "लेकिन अब मैंने नये लक्ष्यों, नये टूर्नामेंट और तैयारी के नये तरीकों के बारे में सोचना शुरू कर दिया है। लक्ष्य और दृष्टिकोण वही रहेगा। अपना सर्वश्रेष्ठ देना, खुद को बेहतर बनाते रहना और जितना संभव हो सके उतने टूर्नामेंट जीतना।" गुकेश ने कहा, "इसलिए मैं बहुत कुछ सीखने, बहुत सारे सुधार करने की उम्मीद कर रहा हूं। उम्मीद है कि बहुत सारे अच्छे नतीजों के साथ यह एक मजेदार साल रहेगा।" हालांकि गुकेश पर विश्व चैम्पियन का 'टैग' होगा और साथ ही बहुत सारी उम्मीदें भी होंगी। लेकिन 19 वर्षीय खिलाड़ी इसके लिए तैयार है। उन्होंने कहा, "हां, मैं कुछ समय से सुर्खियों में रहने का आदी हो गया हूं। जाहिर है कि विश्व चैम्पियनशिप के बाद यह और भी बढ़ जाएगा। लेकिन मुझे जो चीजें याद हैं, वे हैं खुद को बेहतर बनाते रहना और असफलताओं को स्वीकार करना।

विजय हजारे ट्रॉफी नॉक आउट दौर के लिए राजस्थान टीम घोषित
महिपाल लोमरोर कप्तान व मानव सुथार उपकप्तान

जयपुर, 6 जनवरी। राजस्थान क्रिकेट संघ ने बीसीसीआई की विजय हजारे ट्रॉफी के नॉक आउट दौर के लिए राजस्थान टीम घोषित की, महिपाल लोमरोर को कप्तानी व मानव सुथार को उपकप्तानी सौंपी गयी। राजस्थान सीनियर टीम :-कार्तिक शर्मा जुबेर अली राजकुमार सैनी दीपक चाहर कमलेश नागरकोठी अनिकेत चौधरी अभिजीत तोमर अमन सिंह शेखावत रजत चौधरी महिपाल लोमरोर (कप्तान) राम मोहन चौहान शुभम गढ़वाल दीपक हुड्डा मानव सुथार (उपकप्तान) अजय कूकना समर्पित जोशी हेमंत कुमार खलील अहमद करण लाम्बा सचिन यादव।

आई-लौग फुटबॉल प्रतियोगिता का 9 से आयोजन

जयपुर, 6 जनवरी। आईपीएल की तर्ज पर पहली बार वीर भूमि राजस्थान में आयोजित होने जा रही आई-लीग फुटबाल प्रतियोगिता का धमाकेदार आगाज राजस्थान यूनाइटेड फुटबॉल क्लब के होम ग्राउंड जयपुर में 9 जनवरी 3 बजे से शुरू होने जा रहा है। क्लब के चेयरमैन केके टाक के विशेष प्रयासों के चलते यह लीग राजस्थान के फुटबॉल प्रेमियों के लिए एक शानदार मौका लेकर हाजिर हो रही है। ऑल इंडिया फुटबॉल फेडरेशन द्वारा आयोजित की जा रही आई लीग में जयपुर के विद्याधर नगर स्टेडियम में जनवरी से लेकर मार्च तक कुल 12 मुकाबले खेले जाएंगे जो कि राजस्थान के फुटबाल प्रेमियों के लिए किसी सौगात से कम नहीं है।

राजस्थान राज्य सब जूनियर एवं जूनियर सॉफ्ट हॉकी प्रतियोगिता

जूनियर बालिका वर्ग में जूनियर एवं जूनियर सॉफ्ट हॉकी प्रतियोगिता

जयपुर, 6 जनवरी। 4 राजस्थान राज्य सब जूनियर एवं जूनियर सॉफ्ट हॉकी प्रतियोगिता 2024 का समापन समारोह नरवा कलां, नागौर में आयोजित किया गया। समापन समारोह के मुख्य अतिथि श्रवण राम सियाग, सरपंच, प्रतिनिधि, नारवा कलां, एवम अध्यक्षता गजेंद्र सिंह राठौड़, पूर्व खेल अधिकारी, राजस्थान राज्य खेल परिषद, जयपुर, रमेश सिंह, एमेच्योर सॉफ्ट हॉकी फेडरेशन ऑफ इंडिया के महासचिव, हर्षित यादव, तकनीकी अधिकारी एमेच्योर सॉफ्ट हॉकी फेडरेशन ऑफ इंडिया, बाबूलाल विश्नोई, तकनीकी अधिकारी एमेच्योर सॉफ्ट हॉकी फेडरेशन ऑफ इंडिया, रामू राम, भारतीय टीम कोच, भगवती विश्नोई थे।

इस प्रतियोगिता में जूनियर बालक वर्ग में जयपुर ने नागोर को सेमीफाइनल में 20 तथा बीकानेर ने भीलवाड़ा को 41 से हराकर फाइनल में प्रवेश किया तथा बीकानेर ने जयपुर को फाइनल में 31 से हराकर विजेता का खिताब हासिल किया। जूनियर बालिका वर्ग में नागौर ने प्रथम स्थान प्राप्त किया। सब जूनियर बालक वर्ग में नागोर ने प्रथम स्थान, द्वितीय स्थान श्रीगंगानगर तथा तृतीय स्थान जयपुर ने प्राप्त किया। इसी प्रकार सब-जूनियर बालिका वर्ग में बालोतरा ने प्रथम स्थान तथा नागोर ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया।

आईसीसी टेस्ट टीमों को दो डिवीजन में बांटने की प्लानिंग
भारत, ऑस्ट्रेलिया, इंग्लैंड जैसी टीमों की ज्यादा सीरीज होगी

सिडनी, 6 जनवरी। आईसीसी टेस्ट टीमों को 2 डिवीजन में बांटने की तैयारी कर रही है। एक डिवीजन में भारत, ऑस्ट्रेलिया, इंग्लैंड जैसी बड़ी टीमें होंगी। आईसीसी का प्लान है कि बड़ी टीमें आपस में ज्यादा सीरीज खेलें। इस स्कीम को मंजूरी मिलती है तो 2027 के बाद इसे लागू किया जाएगा। 2027 तक के शेड्यूल पहले से तय हैं। ऑस्ट्रेलियाई अखबार द सिडनी मॉर्निंग हेराल्ड की रिपोर्ट के अनुसार के चेयरमैन जय शाह तीनों बोर्ड (क्रिकेट ऑस्ट्रेलिया और) के साथ मिलकर चाहते हैं कि ये तीनों बड़े देश ज्यादा से ज्यादा एक दूसरे के साथ टेस्ट क्रिकेट खेलें। इससे इन टीमों के बीच हर तीन साल में 5-5 टेस्ट मैचों की दो सीरीज हो पाएंगी। अभी इनकी आपस में दो सीरीज 4 साल में होती हैं। चेयरमैन जय शाह जनवरी के आखिरी सप्ताह में क्रिकेट ऑस्ट्रेलिया के चेयरमैन माइक बैर्ड और इंग्लैड क्रिकेट बोर्ड के चीफ रिचर्ड थॉम्पसन एक मीटिंग कर सकते हैं।

यूरोपीय टी-20 लीग के मालिक बने अभिषेक बच्चन

मुंबई, 6 जनवरी। बॉलीवुड एक्टर अभिषेक बच्चन ने यूरोपीय टी20 प्रीमियर लीग में पैसा निवेश किया है। वो इस लीग के सह मालिक बनने जा रहे हैं जिसकी आगाज इसी साल होगा। ईटीपीएल ऐसा टूर्नामेंट है, जिसे अंतर्राष्ट्रीय क्रिकेट परिषद ने अप्रूव किया है इसमें आयरलैंड, स्कॉटलैंड, नीदरलैंड्स समेत दुनिया भर के टॉप प्लेयर्स खेलते हुए नजर आएंगे। इकॉनमिक टाइम्स के अनुसार, 15 जुलाई-3 अगस्त तक चलने वाली यूरोपीय टी20 प्रीमियर लीग में कुल 6 टीमें भाग लेंगी। ये टीमें डबलिन, बेलफास्ट, एम्स्टरडैम, रोटरडैम, ग्लासगो और एडिनबर्ग शहरों का प्रतिनिधित्व कर रही होंगी। अभिषेक बच्चन जैसी नामी हस्ती के जुड़ने से इस लीग को दुनियाभर में एक अलग पहचान मिलेगी। बच्चन के आने से संभावनाएं हैं कि ज्यादा निवेशकों और साथ ही भारतीय क्रिकेट फैंस को भी रिझा पाएगा।

इस नई पहल को लेकर अभिषेक बच्चन ने खुशी जताते हुए कहा कि, क्रिकेट केवल एक खेल नहीं है, ये एक ताकत है जो देशों को साथ लाती है। ऐसा बढ़िया प्लेटफॉर्म है, जो क्रिकेट की बढ़ती मांग को बढ़िया तरीके से प्रदर्शित करेगा। क्रिकेट के 2028 ओलंपिक्स में शामिल होने से य लीग इस खेल की लोकप्रियता बढ़ाने में और अधिक योगदान देगी।

हीरानंद कटारिया की कोचिंग में भवानी निकेतन महिला कॉलेज 21 साल तक कबड्डी में चैम्पियन रही, जो कि एक रिकॉर्ड है

एक ही परिवार के चार अंतर्राष्ट्रीय खिलाड़ियों ने देश का नाम रोशन किया

जयपुर, 6 जनवरी। एक ही परिवार में जन्मे चार अंतरराष्ट्रीय खिलाड़ियों ने किया देश का नाम रोशन, सिरसी रोड बिशनावाला हरि नारायण कटारिया के परिवार में जन्मे पुत्र एवं पोत्रौ ने अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अलग अलग खेलो में गांव का ही नहीं बल्कि पूरे देश का नाम रोशन किया है। सबसे पहले कबड्डी के अंतरराष्ट्रीय खिलाड़ी हीरानन्द कटारिया 1995 में साउथ एशियन गेम्स मै स्वर्ण पदक प्राप्त किया। इन्हें राजस्थान का सर्वोच्च खेल सम्मान महाराणा प्रताप अवॉर्ड और गुरु वशिष्ठ अवॉर्ड में सम्मानित किया जा चुका हैं।

वॉलीबॉल के अंतरराष्ट्रीय खिलाड़ी लवमीत कटारिया जिन्होंने एशियन गेम्स 2014 में कोरिया में भाग लिया, 2016 में साउथ एशियन गेम्स में स्वर्ण पदक जीता, भारतीय वॉलीबाल टीम का कई बार प्रतिनिधित्व किया और भारतीय टीम के कप्तान भी रहे। इन्हें भी महाराणा प्रताप अवॉर्ड से सम्मानित किया जा चुका है। अमित कटारिया अन्तर्राष्ट्रीय वूशु खिलाड़ी जिन्होंने जॉर्जिया यूरोप में इंटरनेशनल वूशु टूर्नामेंट में कांस्य पदक जीता।

राहुल कटारिया अन्तर्राष्ट्रीय वॉलीबॉल खिलाड़ी ने श्रीलंका में यूथ एशियन वॉलीबॉल में भारत का प्रतिनिधित्व किया। यूथ नेशनल में रजत पदक विजेता, वेस्ट जोन इंटर यूनिवर्सिटी वालीबॉल चैंपियनशिप में तीन बार गोल्ड मेडल जीता। प्रो वालीबॉल में खेलने वाले राजस्थान के एकमात्र खिलाड़ी रहे, इन्हें भी राइजिंग स्तर अवॉर्ड से पूर्व मुख्यमंत्री वसुन्धरा राजे सिंधिया ने सम्मानित किया है। लवमीत और अमित दोनों हीरानन्द कटारिया के सुपुत्र हैं तथा राहुल इनका भतीजा है। इस तरह एक ही परिवार के कटारिया परिवार में जन्मे चार अंतरराष्ट्रीय खिलाड़ियों ने हिन्दुस्तान में एक अमिट छाप छोड़कर भारत देश का गौरव बढ़ाया है।

हीरानंद कटारिया ने कोच के रूप में कई खिलाड़ियों को राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर पहुंचायां है। कोच हीरानंद कटारिया ने फ्री कोचिंग देकर सुमित्रा शर्मा, शालिनी पाठक, सोनू यादव और जितेंद्र यादव जैसे अनेकों खिलाड़ियों को स्टार बनाया है। कटारिया के कोचिंग की ऐसी कुशल सेवा रही कि भवानी निकेतन महिला महाविद्यालय कॉलेज 21 साल तक कबड्डी में चैंपियन रही, जो कि यह अपने आप में एक कीर्तिमान है।

सर्वप्रथम बात करें उनकी शिष्या सुमित्रा शर्मा की जिसने एशियन गेम्स 2014 में गोल्ड मेडल जीतकर इतिहास रचा। उसके चाद शालिनी पाठक ने 2006 में साउथ एशियन गेम्स में स्वर्ण पदक जीता और फिर सोनू यादव और जितेंद्र यादव ने मलेशिया वर्ल्ड कप में गोल्ड मेडल जीता। ऐसे कई सारे उनके शिष्य रहे जिन्होंने राष्ट्रीय अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अपना दमखम दिखाया।

हीरानंद कटारिया ने फ्री कोचिंग देकर यह कारनामा कर दिखाया खिलाड़ी होने के साथ साथ कबड्डी कोच के रूप में "फ्री" सेवाएं देकर एक देश मैं अनूठी मिसाल कायम की। अभी भी गोविंदपुरा सन ब्राइट अकादमी में ग्रामीण प्रतिभाओं को कबड्डी की फ्री सेवाएं दे रहे है। खिलाड़ियों को ट्रैकसूट, किट, प्रोटीन, घी, गरीब बच्चों के फीस तक भी अदा करते है। यहां तक की नोकरी में भी उनकी मदद करते हैं। डाक विभाग में 7 महिला खिलाड़ियों को जॉब दिलाई। हीरानंद कटारिया तन- मन-धन से खिलाड़ियों के लिए सहायता करने के लिए हमेशा तैयार रहते हैं।

मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा की मौजूदगी में मुख्यमंत्री निवास पर बैंक ऑफ बड़ौदा तथा बैंक ऑफ महाराष्ट्र के साथ एमओयू हुआ। मुख्यमंत्री ने कहा कि राज्य सरकार ने 'विकसित राजस्थान 2047' के तहत पांच वर्षों की कार्य योजना बनाकर 'सर्वजन हिताय' आधारित समावेशी विकास का लक्ष्य रखा है।

बैंक ऑफ बड़ौदा व बैंक ऑफ महाराष्ट्र से राज्य के लिये बड़े ऋण का एम.ओ.यू.

मुख्यमंत्री भजनलाल ने दोनों बैंकों के सहयोग को बुनियादी ढांचे की मजबूती में मील का पत्थर बताया

जयपुर, 6 जनवरी। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने कहा कि राज्य सरकार ने 'विकसित राजस्थान 2047' के तहत पांच वर्षों की कार्य योजना बनाकर 'सर्वजन हिताय' आधारित समावेशी विकास का लक्ष्य रखा है।

उन्होंने कहा कि इस कार्य योजना के तहत भविष्य के लिए दस संकल्प निर्धारित किए गए हैं। इन संकल्पों में बुनियादी ढांचे का विकास करना और प्रदेश की अर्थव्यवस्था को 350 बिलियन डॉलर पर पहुंचाना भी शामिल है।

शर्मा सोमवार को मुख्यमंत्री निवास पर बैंक ऑफ बड़ौदा तथा बैंक ऑफ महाराष्ट्र के साथ राज्य सरकार के दो एमओयू हस्ताक्षरित करने के अवसर पर बोल कर रहे थे। इन एमओयू के अनुसार, बैंक ऑफ बड़ौदा अगले छह वर्षों यानी 31 मार्च 2030 तक, प्रति वर्ष 20 हजार करोड़ रूपये का ऋण प्रदान करेगा। इसके साथ ही,

- **बैंक ऑफ बड़ौदा राज्य की ऊर्जा, सड़क, पेयजल व स्वच्छता आदि की विभिन्न परियोजनाओं के लिये अगले 6 वर्ष 20 हजार करोड़ रूपए प्रति वर्ष के ऋण प्रदान करेगा।**
- **इसी तरह बैंक ऑफ महाराष्ट्र भी अगले 6 वर्ष 10 हजार करोड़ रूपये के ऋण राजस्थान सरकार को उपलब्ध करायेगा।**

बैंक ऑफ महाराष्ट्र भी प्रति वर्ष 10,000 करोड़ रूपये का ऋण उपलब्ध कराएगा। यह धनराशि राजस्थान सरकार की विभिन्न परियोजनाओं, विशेषकर आधारभूत ढांचा क्षेत्र जैसे बिजली एवं नवीकरणीय ऊर्जा, सड़क, पेयजल और स्वच्छता के लिए उपयोग में ली जाएगी।

मुख्यमंत्री ने कहा कि ये हमारे लिए गर्व का विषय है कि बैंक ऑफ बड़ौदा और बैंक ऑफ महाराष्ट्र जैसे देश के प्रतिष्ठित बैंक अब राजस्थान की विकास यात्रा में भागीदार बनने जा रहे हैं। हमारे प्रदेश के आधारभूत ढांचे को सशक्त करने की दिशा में, बैंक ऑफ बड़ौदा और बैंक ऑफ महाराष्ट्र का यह सहयोग एक बड़ा कदम है और आज का यह समझौता प्रदेश के बुनियादी ढांचे की मजबूती में मील का पत्थर साबित होगा।

शर्मा ने कहा कि आज की साझेदारी राज्य के विकास और जनकल्याण की दिशा में नए आयाम स्थापित करेगी तथा विकसित भारत 2047 एवं विकसित राजस्थान 2047 की दिशा में महत्वपूर्ण कदम साबित होगी।

इस अवसर पर, उपमुख्यमंत्री दिया कुमारी ने कहा कि मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा की दूरगामी सोच के अनुरूप, राज्य सरकार प्रदेश के बुनियादी ढांचे में भारी निवेश की परिकल्पना के साथ कार्य कर रही है। दोनों बैंकों के साथ सम्पन्न एमओयू राज्य के बुनियादी ढांचे को सुदृढ़ करने के भागीरथ प्रयास हैं।

इस अवसर पर, मुख्य सचिव सुधांश पंत, अतिरिक्त मुख्य सचिव वित्त अखिल अरोड़ा, अतिरिक्त मुख्य सचिव (मुख्यमंत्री) शिखर अग्रवाल, प्रमुख सचिव (मुख्यमंत्री) आलोक गुप्ता, प्रमुख शासन सचिव वित्त (बजट) देबाशीष पृष्टी, बैंक ऑफ बड़ौदा के एमडी एवं सीईओ देबदत्त चंद, कार्यकारी निदेशक ललित त्यागी, बैंक ऑफ महाराष्ट्र के कार्यकारी निदेशक रोहित ऋषि सहित दोनो बैंकों के वरिष्ठ अधिकारीगण उपस्थित थे।

कैनडा के प्रधानमंत्री ट्रूडो ने इस्तीफा दिया

उनकी पार्टी के सांसदों का कई महीनों से ट्रूडो पर प्रधानमंत्री पद छोड़ने का दबाव था

टोरंटो, 06 जनवरी। कनाडा के प्रधानमंत्री जस्टिन ट्रूडो ने इस्तीफा दे दिया है। ट्रूडो ने सोमवार को देश को संबोधित करके पद छोड़ने का ऐलान किया। ट्रूडो ने कहा, "मैं लिबरल पार्टी के नेता और पीएम पद छोड़ने का ऐलान करता हूं। मुझे लगता है कि मैं 2025 के इलेक्शन के लिए लिबरल पार्टी की तरफ से अच्छा ऑप्शन नहीं हूं।" कनाडाई न्यूज सीबीसी ने सूत्रों के हवाले से बताया है कि ट्रूडो प्रधानमंत्री के पद पर तब तक पद पर बने रहेंगे, जब तक उनका उत्तराधिकारी चुन नहीं लिया जाता। ट्रूडो के इस्तीफे के बाद ऐसा माना जा रहा है कि तय समय से पहले चुनाव की मांग हो सकती है।

ट्रूडो पर उनकी लिबरल पार्टी के सांसदों की तरफ से कई महीनों से पद छोड़ने का दबाव बनाया जा रहा था। बीते दिनों डिप्टी पीएम और वित्त मंत्री

- **प्रधानमंत्री जस्टिन ट्रूडो पर यह आरोप था कि नेशनल मुद्दों पर से जनता का ध्यान हटाने के लिये वे भारत विरोधी एजेण्डा चला रहे थे।**

क्रिस्टिया फ्रीलैंड ने ट्रूडो सरकार पर गंभीर आरोप लगाते हुए पद छोड़ दिया था। इसके बाद ट्रूडो पर दबाव बढ़ गया था। ट्रूडो पर नेशनल मुद्दों से जनता का ध्यान भटकाने के लिए भारत विरोध एजेंडा चलाने का आरोप भी है।

कनाडाई नागरिकों को संबोधित करते हुए जस्टिन ट्रूडो ने कहा, "मेरी तमाम कोशिशों को बाद भी, संसद कई महीनों तक पैरालाइज्ड रही। लेकिन, मैं एक फाइटर हूं। मुझे मेरे देश कनाडा की फिक्र है और रहेगी। मैं अपने देश की बेहतरी के लिए लड़ता रहा हूं। ये लड़ाई आगे भी जारी रहेगी।"

जस्टिन ट्रूडो ने कहा, "लिबरल पार्टी के भीतर आंतरिक लड़ाइयां थीं, जिसके कारण मुझे पार्टी प्रमुख और कनाडाई पीएम के रूप में पद छोड़ने का फैसला लेना पड़ा।" 53 वर्षीय ट्रूडो ने कहा, "मैंने मेरी पूर्व पत्नी और बच्चों के साथ लंबी चर्चा के बाद पीएम पद छोड़ने का फैसला लिया है।"

दरअसल, बीते कुछ सालों में जस्टिन ट्रूडो की लिबरल पार्टी में विद्रोह की आवाज तेज हुई है। सियान कैसी और केन मैक्डोनाल्ड सहित, पार्टी के कई हाई प्रोफाइल सांसद सार्वजनिक तौर पर जस्टिन ट्रूडो के खिलाफ अपनी राय दे चुके हैं। इन सांसदों ने अपने प्रधानमंत्री के बयानों और फैसलों को गलत बताया है, उनकी लीडरशिप पर सवाल उठा चुके हैं। पार्टी की ओर से ट्रूडो पर पीएम पद छोड़ने का दबाव बनाया जा रहा है। कनाडा की सत्ताधारी लिबरल पार्टी के कई नेताओं का आरोप है कि जस्टिन ट्रूडो भारत के खिलाफ आरोप लगाकर सरकार की नाकामी छिपाने की कोशिश कर रहे हैं। कुछ अंतरराष्ट्रीय रिपोर्टों के मुताबिक, लिबरल पार्टी के कम से कम 20 सांसदों ने जस्टिन ट्रूडो के प्रधानमंत्री पद से इस्तीफे को लेकर एक पिटीशन पर साइन किए हैं।

कनाडा के लोगों में ट्रूडो सरकार के खिलाफ नाराजगी बढ़ती जा रही है। इस नाराजगी की सबसे बड़ी वजह आर्थिक अस्थिरता और बढ़ती महंगाई है। यहां खाने-पीने और रहने का खर्चा बढ़ता ही जा रहा है।

इसके साथ ही, पिछले कुछ समय से कनाडा में कट्टरपंथी ताकतें तेज हुई हैं। खालिस्तानी हमलों और गतिविधियों से भी लोग परेशान हैं।

अप्रवासियों की बढ़ती संख्या और कोविड-19 के बाद बने हालातों के चलते, ट्रूडो को राजनीतिक चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है।

रोहिणी (दिल्ली) ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

एक अन्य पोस्ट में कहा गया, "जब टैलिप्रॉम्पटर फेल होता है तो फर्जी वक्ता की बोलती बंद हो जाती है। इस फेंकू की हर बात फेक (फर्जी) है।"

एक और ट्वीट आई, "जितनी चाबी भरी राम ने....... अरे उतना चले खिलौना।"

दूसरे यूज़र ने लिखा, "हमने टैलिप्रॉम्पटर प्रधानमंत्री को चुना है। टैलिप्रॉम्पटर के बिना मोदी वैसी ही हैं, जैसे ई.वी.एम. के बिना भाजपा।"

एक अन्य यूज़र ने कहा, "एक देश, दो टैलिप्रॉम्पटर, दोनों फेल हो गए।"

एक यूज़र बोला, "जैसे दिल्ली में भाजपा फेल हुई, वैसे ही मोदी जी का टैलिप्रॉम्पटर फेल हो गया। लेकिन, कोई चिंता नहीं, पिछले चार सालों में मोदी जी ने अपनी छवि सुधारने के लिए जनता का 4,300 करोड़ रूपया खर्च किया है।"

एक ने कहा, "टैलिप्रॉम्पटर फेल हो गया, पर क्या दिमाग भी फेल हो गया। अरे भाई, आप 8,000 करोड़ रूपए का एयरोप्लेन खरीद सकते हैं, एक अच्छा टैलिप्रॉम्पटर भी खरीद लीजिए।"

एक यूज़र की पोस्ट में नेहरू फिर वापस आ गए। उसने लिखा: "आखिरकार वो नेहरू ही थे जिन्होंने टैलिप्रॉम्पटर का तार काटा, जिसके कारण महान वक्ता मोदी जी भाषण के बीच में ब्लैंक हो गए।"

युवा राजद ने पटना में आक्रोश मार्च निकाला

गया, 06 जनवरी। बिहार लोक सेवा आयोग (बीपीएससी) परीक्षा रद्द कराने की मांग को लेकर युवा राष्ट्रीय जनता दल (राजद) कार्यकर्ताओं ने आक्रोश मार्च निकाला।

युवा राजद के कार्यकर्ताओं ने सोमवार को शहर के गांधी मैदान से आक्रोश मार्च निकाला,जो विभिन्न सड़क मार्ग से होते हुए शहर के टावर चौक पहुंचा। टावर चौक के समीप कार्यकर्ताओं ने मुख्यमंत्री नीतीश कुमार का पुतला फूंका, साथ ही केंद्र एवं राज्य सरकार के खिलाफ जमकर नारेबाजी की।

राजद प्रवक्ता गोपाल कृष्ण उर्फ जुगनू यादव ने कहा कि बीपीएससी जैसी परीक्षा का प्रश्न पत्र लीक हो जाता है, इससे बड़ी हास्यास्पद बात क्या होगी। अब और परीक्षाओं की

- **वे बिहार लोक सेवा आयोग की परीक्षा रद्द करने की मांग कर रहे हैं।**

क्या स्थिति होगी, यह स्वयं समझा जा सकता है।

बीपीएससी परीक्षा रद्द कराने की मांग को लेकर नेता प्रतिपक्ष तेजस्वी यादव के आ ान पर छात्र राजद और युवा राजद के कार्यकर्ताओं ने कुमार का पुतला फूंकने का कार्य किया है। उन्होंने कहा कि बीपीएससी के मामले पर जो लोग आमरण अनशन कर रहे हैं, उन पर भी सरकार दमनकारी अभियान चला रही है। यह कहीं से सही नहीं है। छात्र राजद और युवा राजद इसकी घोर निंदा करती है।

एलन मस्क ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

वे अपने राष्ट्रीय हितों की रक्षा नहीं कर पाए और इस्लामिक आतंकवाद के खिलाफ लड़ाई में भी साथ खड़े नहीं हुए।

मस्क ने एक्स पर ऐसी ऑफिशियल रिपोर्ट्स का हवाला दिया और कहा कि बच्चों की सुरक्षा के लिए उत्तरदायी संस्थाएं पूर्णतया विफल रही हैं।

मस्क की ब्रिटिश प्रधानमंत्री और ब्रिटिश सरकार की संस्थाओं की आलोचना का मूल यह है कि इनकी विफलता के कारण सालों से बच्चों का योन शोषण हो रहा है। रंगभेद का ठप्पा लगने और अपराधियों के मूल का उल्लेख करने के डर के कारण, उन्होंने दशकों तक बच्चों का यौन शोषण होने दिया। इसमें ब्रिटिश सरकार की कुछ रिपोर्ट्स का हवाला दिया, जिनमें पाकिस्तानियों द्वारा बच्चों के यौन शोषण की घटनाएं हैं। रिपोर्ट्स के अनुसार, 2019 से 2022 के बीच 15,000 बच्चों का यौन शोषण हुआ था।

नक्सलियों के विस्फोट में नौ जवान शहीद हुए

छत्तीसगढ़ में नक्सलियों ने आईईडी विस्फोट कर सुरक्षा बलों के एक वाहन को उड़ा दिया

बीजापुर, 06 जनवरी। छत्तीसगढ़ के बीजापुर से दूर कुटरू मार्ग पर नक्सलियों ने आईईडी विस्फोट कर सुरक्षाबलों के एक वाहन को उड़ा दिया जिससे नौ जवान शहीद हो गए तथा कुछ जवान घायल हो गये। इससे पहले मुठभेड़ में महिला माओवादी समेत पांच नक्सलियों को ढेर कर सोमवार अपराह्न लौटते समय नक्सलियों ने शक्तिशाली विस्फोटक उपकरण (आईईडी) का विस्फोट किया। नक्सलियों ने यह हमला बीजापुर जिले के कुटरू-बेद्रे रोड पर उस वक्त किया, जब दंतेवाड़ा, नारायणपुर और बीजापुर की संयुक्त ऑपरेशन पार्टी ऑपरेशन करके वापस लौट रही थी।

विस्फोट इतना भयंकर था कि इसके कारण मौके पर 15 फीट का गड्ढा बन गया। बस्तर रेंज के आईजी

- **विस्फोट इतना भयंकर था कि मौके पर 15 फिट गहरा गड्ढा बन गया। बस्तर के आईजी ने आठ जवान और एक ड्राइवर के शहीद होने की पुष्टि की।**

सुंदरराज पी ने इस हादसे में आठ जवान और एक ड्राइवर के शहीद होने की पुष्टि की है।

उन्होंने बताया कि इस अभियान में नारायणपुर, दंतेवाड़ा, जगदलपुर व कोंडागांव की डीआरजी टीमों के साथ स्पेशल टास्क फोर्स के जवान भी शामिल थे। कुछ जवान गंभीर रूप से घायल हो गए। घायल जवानों को हेलीकॉप्टर से रायपुर ले जाया गया है।

बीजापुर में नक्सलियों के खिलाफ ऑपरेशन चल रहा था। सोमवार को सुबह टीम सर्चिंग के लिए निकली थी। कुछ सूत्रों ने घायल जवानों की संख्या में भी बढ़ोतरी की आशंका जताई है।

केन्द्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने छत्तीसगढ के बीजापुर में नक्सलियों द्वारा किये गये विस्फोट में जिला रिजर्व गार्ड के जवानों की मौत पर दुख व्यक्त किया और सोशल मीडिया प्लेटफार्म एक्स पर एक पोस्ट में कहा, जवानों को खोने की सूचना से अत्यंतु दुखी हूं। वीर जवानों के परिजनों के प्रति गहरी संवेदनाएं व्यक्त करता हूं। हम मार्च 2026 तक भारत की भूमि से नक्सलवाद को समाप्त करके ही रहेंगे।

डूंगरपुर में 2 माह के ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

गया था, लेकिन अब बच्चा पूरी तरह से स्वस्थ है। डॉक्टर ने बताया कि इस बीमारी से घबराने की जरूरत नहीं है।

सीएमएचओ डॉ अलंकार गुप्ता ने बताया कि बच्चा रीछा गांव का रहने वाला हैं। बच्चे के परिजन अहमदाबाद में उसके साथ हैं। गांव में एक मेडिकल टीम को भेजा है, जो घर-घर जाकर सर्वे कर रही है। वहीं, सीएमएचओ डॉ. अलंकार गुप्ता ने बताया कि विभाग को मिली सूचना के अनुसार, रिछा गांव में 2 माह के बच्चे का एचएमपीवी वायरस से संक्रमित होना बताया गया। ऐसे में चिकित्सा विभाग का दल जांच करने पहुँचा। दल ने जांच में पाया कि बच्चे का जन्म 23 अक्टूबर को मोडासा के निजी अस्पताल में हुआ था बच्चे में निमोनिया के लक्षण थे, बच्चे के स्वस्थ होने पर पिता उसे नानी के घर भीलूड़ा लेकर आ गए। 24 दिसम्बर को बच्चे को खांसी, जुखाम, बुखार व सर्दी लगने की समस्या हुई। ऐसे में इलाज के लिए बच्चे के माता-पिता उसे 26 दिसम्बर को अहमदाबाद के निजी अस्पताल लेकर गए, जहां उसका इलाज किया गया और निजी लेब में सैम्पल की जांच की गई। बच्चा एमएसपी वायरस से ग्रसित था। यह एक सामान्य वायरस है। 5 जनवरी को बच्चे को डिस्चार्ज कर दिया गया। बच्चा पूर्ण रूप से स्वस्थ है। चिकित्सा विभाग के दल द्वारा क्षेत्र के आस-पास निगाह रखी जा रही है। चिकित्सा मंत्री गजेन्द्र सिंह खींवसर ने कहा कि यह वायरस साल 2001 से मौजूद है, लेकिन इसका प्रभाव सामान्य रहा है। इस वायरस से मौत का कोई मामला और चिंताजनक स्थिति सामने नहीं आई है।

फिरोजाबाद में बंद पड़े मंदिरों को हिंदूवादी संगठनों ने खुलवाया

जिले के रसूलपुर व रामगढ़ के मुस्लिम इलाकों में ये मंदिर गत 30 साल से बंद थे

फिरोजाबाद, 06 जनवरी। उत्तर प्रदेश में फिरोजाबाद जिले के रसूलपुर और रामगढ़ क्षेत्र के मुस्लिम बाहुल्य इलाकों में अर्से से बंद पड़े हनुमान और शिव मंदिरों को हिंदूवादी संगठनों की पहल पर जिला प्रशासन ने खुलवाया। जिला प्रशासन ने सभी लोगों से शांति व्यवस्था बनाये रखने की अपील की है।

संभल, बदायूं और मुरादाबाद के बाद, फिरोजाबाद में भी करीब 60 वर्ष पुराने मंदिर, जो लगभग 30 सालों से बंद पड़े थे, बजरंग दल के कार्यकर्ताओं की पहल पर जिला प्रशासन द्वारा ताला तोड़कर उन मंदिरों की साफ-सफाई कराई गई।

बजरंग दल के कार्यकर्ताओं

- **नगर मजिस्ट्रेट के अनुसार मंदिर 60 साल पुराना है। मकान बेचने वाला परिवार दूसरी जगह बस गया तब से मंदिर पड़ा था।**

द्वारा थाना रसूलपुर क्षेत्र में पुराना रसूलपुर आबादी के गली नंबर 8 में एक बंद पड़े हुए मंदिर की जानकारी जिला प्रशासन को दी गई। नगर मजिस्ट्रेट राजेन्द्र कुमार एसपी सिटी रवि शंकर प्रसाद ने अपनी मौजूदगी में ताला तुड़वाया।

नगर मजिस्ट्रेट राजेन्द्र कुमार के अनुसार, मंदिर पर एक पत्थर लगा हुआ है, जिस पर विक्रम संवत 2020 मे मंदिर का निर्माण करने वाले रामदयाल लालाराम और पंचम सिंह के नाम अंकित हैं। मंदिर के अंदर हनुमान जी की क्षतिग्रस्त प्रतिमा मिली है। हिंदूवादी संगठनों ने अंदर की साफ-सफाई कर हनुमान चालीसा का पाठ किया।

वहीं, सोमवार को थाना रामगढ़ क्षेत्र में 60 फुटा रोड पर नूरी मस्जिद के पास भी एक बंद पड़े हुए शिव मंदिर की जानकारी मिली। मौके पर पहुंचे बजरंग दल, विश्व हिंदू परिषद आदि संगठनों के नेताओं ने प्रशासनिक अधिकारियों की मौजूदगी में मंदिर की साफ-सफाई कराई।

'कांग्रेस दिल्ली ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

हैं, "गृह ज्योति स्कीम" में 200 यूनिट बिजली निशुल्क दी जा रही है तथा "गृह लक्ष्मी योजना" के अन्तर्गत, प्रत्येक महिला को 2,000 रूपए दिये जा रहे हैं। करीब-करीब सभी महिलायें इस योजना से लाभान्वित हो रही हैं।"

दिल्ली-प्रभारी निज़ामुद्दीन ने कहा कि विधानसभा चुनावों से पहले, "प्यारी दीदी योजना" कांग्रेस की पहली गारंटी है।

उन्होंने कहा, "प्यारी दीदी योजना" चुनावों से पहले कांग्रेस की प्रथम गारंटी है। कांग्रेस समाज के प्रत्येक वर्ग के उत्थान के लिये प्रतिबद्ध है।"

भाजपा पर प्रहार करते हुये उन्होंने कहा, "भाजपा के झूठे वादों से सभी परिचित हैं- चाहे बैंक खातों में 15 लाख रु. डालने का वादा हो, चाहे युवाओं को रोजगार देने का वादा है। लेकिन भाजपा की तरह, झूठ नहीं बोलती है। जहाँ हमारी सरकार है, वहाँ हम जनता के हर वर्ग, खास तौर से महिलाओं की बेहतरी के लिये कार्य कर रहे हैं।"

दिल्ली कांग्रेस अध्यक्ष ने भी दिल्ली की सत्ता में आने के बाद "प्यारी दीदी योजना" लागू किये जाने का वचन दिया। उन्होंने कहा कि हिमाचल प्रदेश और तेलंगाना में भी सत्ता में आने के बाद, कांग्रेस ने अपनी सभी गारन्टियाँ पूरी की हैं।

उच्चाधिकार ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

द्वारा समिति के सदस्यों और किसान नेताओं के बीच बैठक के बारे में सूचित किए जाने के बाद सुनवाई टालते हुए मौखिक रूप से कहा, हमें उम्मीद है कि इससे कुछ सकारात्मक निकलेगा। पीठ के समक्ष सिब्बल ने प्रदर्शनकारी और उच्चाधिकार प्राप्त समिति (शीर्ष अदालत की ओर से गठित) के प्रमुख अवकाश प्राप्त न्यायमूर्ति नवाब सिंह से आज मुलाकात होने संबंधी जानकारी दी। इसके बाद शीर्ष अदालत ने मामले पर 10 जनवरी को विचार करने से पहले समिति और अन्य को परिणाम से अवगत कराने को कहा। डल्लेवाल 26 नवंबर से पंजाब हरियाणा के खनौरी सीमा पर अनिश्चितकालीन अनशन पर बैठे हैं। शीर्ष अदालत ने कृषि उपज का न्यूनतम समर्थन मूल्य की गारंटी देने वाले कानून बनाने समेत किसानों की अन्य मांगों को लेकर चल रहे विवाद को सुलझाने के लिए पंजाब एवं हरियाणा उच्च न्यायालय के अवकाश प्राप्त न्यायाधीश न्यायमूर्ति नवाब सिंह के नेतृत्व में एक समिति गठित की थी। न्यायमूर्ति सिंह की अध्यक्षता में एक उच्चाधिकार प्राप्त इस समिति का गठन दो सितंबर को किया गया था।

चीनी वायरस के अब तक भारत में 5 मामले सामने आये

नई दिल्ली, 06 जनवरी। चीन में ह्यूमन मेटान्यूमो वायरस (एचएमपीवी) बहुत तेजी से फैल रहा है। यह वायरस अब धीरे-धीरे भारत में भी पैर पसारने लगा है। भारत में अब तक इस वायरस के पांच केस सामने आ चुके हैं। बेंगलुरु में दो मामलों के बाद गुजरात के अहमदाबाद में भी 2 महीने के एक बच्चे की रिपोर्ट पॉज़िटिव आई है। तमिलनाडु में भी दो बच्चों में

- **बेंगलुरु के दो, गुजरात के एक तथा तमिलनाडु के दो मामलों में वायरस की पुष्टि हुई।**

एचएमपीवी की पुष्टि हुई है। इसमें से एक चेन्नई का मामला है और दूसरा सलेम जिले का। सरकार ने बताया कि दोनों की स्थिति स्थिर है और दोनों पर निगरानी रखी जा रही है।

तमिलनाडु के एक स्वास्थ्य अधिकारी ने बताया कि चेन्नई में जिल दो बच्चों में ह्यूमन मेटान्यूमो वायरस (एचएमपीवी) की पुष्टि हुई है उनका इलाज किया जा रहा है तथा इससे संबंधित विस्तृत जानकारी की प्रतीक्षा है। अहमदाबाद के बच्चे में सर्दी और बुखार के लक्षण हैं। निजी अस्पताल की एक लैब के अनुसार, बच्चे की एचएमवीपी रिपोर्ट पॉजिटिव आई है। बच्चा मोडासा के नजदीक एक गांव का रहने वाला है।

द्रमुक सरकार को एक के बाद...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

ने सरकार से बार-बार कहा कि राष्ट्र गीत को महत्व दिया जाए, पर सरकार ने एक नहीं सुनी और राष्ट्रगीत के अपमान की वजह से राज्यपाल ने सदन से बहिर्गमन किया।

पोस्ट में लिखा है कि "सदन में जब राज्यपाल आए तो राज्य गीत तमिल थाई वायतू गाया जा रहा था। राज्यपाल ने सदन को संवैधानिक कर्तव्यों की याद दिलाई और मुख्यमंत्री, जो सदन के नेता हैं, तथा स्पीकर से कहा कि राष्ट्र गीत गाया जाए तो उन्होंने इन्कार कर दिया। यह गंभीर चिंता का विषय है।

राज्यपाल संविधान और राष्ट्रगीत के अपमान का हिस्सा नहीं बन सकते थे, इसलिए क्षुब्ध होकर वे सदन से बाहर आ गए।"

मुख्यमंत्री स्टालिन ने इस पर तीखी प्रतिक्रिया दी और कहा राज्यपाल ने, लगता है, सदन को संबोधित करने की संवैधानिक प्रक्रिया का उल्लंघन करने की परम्परा बना ली है। सरकार द्वारा तैयार भाषण पढ़ना राज्यपाल का संवैधानिक दायित्व है।

अब यह स्पष्ट है कि द्रमुक इसे मुद्दा बनाएगी। स्टालिन ने राज्यपाल के व्यवहार पर एक्स पर लिखा कि "राज्यपाल का व्यवहार बेहद बचकाना है, पहले तो वे भाषण में मनमाने तरीके से कटौती कर देते थे और इस बार तो वे बिना भाषण पढ़े ही चले गए। राज्यपाल लगातार तमिलनाडु की जनता का, जनता द्वारा चुनी हुई सरकार का, और 100 साल पुरानी तमिलनाडु विधानसभा का अपमान कर रहे हैं।"

उन्होंने कहा कि ऐसा व्यक्ति पद पर क्यों है, जो अपनी राजनैतिक और कानूनी जिम्मेवारियां निभाना नहीं चाहता है? यह सवाल सभी के दिल में है।"

अब राज्यपाल के एक्शन के बाद सरकार अन्ना युनिवर्सिटी में हुए बलात्कार कांड से जनता का ध्यान हटाने में सफल हो सकती है। सदन में सत्ता पक्ष और विपक्ष में इस मुद्दे पर जमकर नारेबाजी हुई।

सत्ता पक्ष का कहना है कि राज्यपाल सभी विश्वविद्यालयों के कुलाधिपति हैं। जिन कमियों की वजह से अन्ना युनिवर्सिटी में यह घटना हुई, उसके लिए राज्यपाल जिम्मेदार हैं। विपक्ष ने भी सवाल किए "कौन है "सर", जिसके पोस्टर चेन्नई में लगे हैं। विपक्ष ने सरकार से कहा कि बलात्कार कांड के दूसरे आरोपी को पकड़ा जाए।

नारेबाजी के बीच राज्यपाल रवि ने पहले राष्ट्रगीत और फिर राज्य गीत बजाने को कहा, पर पहले राज्य गीत बजाया गया तो उन्होंने राष्ट्रगीत व संविधान का अपमान करने का आरोप लगाते हुए वॉक आउट कर दिया। कांग्रेस ने भी राज्यपाल के इस कृत्य की आलोचना की।

नारेबाजी के दौरान, स्पीकर ने मार्शल बुलवाकर अन्ना द्रमुक सांसदों को बाहर निकाल दिया और राज्यपाल का अभिभाषण पढ़ दिया। स्पीकर ने सरकार का बचाव किया व कहा कि राष्ट्र गीत से पहले राज्य गीत बजता है, यही परम्परा है। गत वर्ष फरवरी में भी राज्यपाल ने अभिभाषण की विषय वस्तु के मुद्दे पर सदन को संबोधित नहीं किया था। बाद में संशोधित अभिभाषण को उन्होंने स्वीकार किया। इससे पहले भी आर.एन. रवि ने सदन से वॉक आउट किया था।

दिल्ली में भाजपा की ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

मीटिंग करेंगे।

आर.एस.एस. के कार्यक्रमों की विस्तृत जानकारी रखने वाले एक व्यक्ति ने कहा, "जैसा महाराष्ट्र और हरियाणा में किया था, आर.एस.एस. अपने विभिन्न संगठनों के माध्यम से पूरे राज्य में सैकड़ों मीटिंग आयोजित करेगी। उदाहरण के लिये, "लघु उद्योग भारती", जो लघु, छोटे एवं मध्यम दर्जे के उद्यमियों का प्रतिनिधित्व करता है, व्यापारियों एवं उद्यमियों के साथ मीटिंग करेगा, "सेविका समिति" की स्वयंसेविकाएं महिला मतदाताओं से सम्पर्क करेंगी, "सेवा भारती" के कार्यकर्ता, जो जे.जे. क्लस्टर्स में काम कर रहे हैं, आर्थिक और सामाजिक रूप से कमजोर वर्गों के साथ संवाद करेंगे।"

आर.एस.एस. और भाजपा के वरिष्ठ नेता पिछले महीने से परस्पर समन्वय कर रहे हैं ताकि पार्टी के प्रचार-अभियान की रूपरेखा बनाई जा सके। जिसमें अवैध अप्रवासन केन्द्रीय बिंदु रहेगा।

उपरोक्त व्यक्ति ने कहा, "आर.एस.एस. के पास अवैध अप्रवासन की जाँच करने एवं रोकने के लिये स्पष्ट एजेंडा है। दिल्ली में, अवैध रूप से आकर बस जाने वालों का मुद्दा दशकों से चला आ रहा है, लेकिन पिछले कुछ दिनों से यह समस्या म्याँमार और बाँग्लादेश से आये उन लोगों के कारण ज्यादा विकट हो गई है, जो वैध स्वीकृति के बिना शहर में न केवल रह रहे हैं, बल्कि कुछ लोगों ने तो पैसे देकर वोटर कार्ड जैसे महत्वपूर्ण दस्तावेजों की व्यवस्था भी कर ली है, जिसके कारण सुरक्षा संबंधी चिंताएं भी पैदा हो गई हैं।"

भारतीय संविधान ...

(प्रथम पृष्ठ का शेष)

विधि विश्वविद्यालय, यानी नालसार यूनिवर्सिटी ऑफ लॉ, हैदराबाद के साथ मिलकर हिंदी भाषा में भारतीय संविधान पर पाठ्यक्रम शुरू किया।

इस ऑनलाइन पाठ्यक्रम में 15 वीडियो में हमारे संविधान के महत्वपूर्ण पहलुओं को शामिल किया जाएगा। यह पाठ्यक्रम लोगों को संविधान के सार, इसकी ऐतिहासिक यात्रा और आधुनिक भारत को आकार देने में इसकी भूमिका की गहरी समझ प्रदान करने के लिए बनाया गया है।

इस पाठ्यक्रम को हिंदी में पेश करने का निर्णय इसे व्यापक रूप से दर्शकों तक पहुंचने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।

यह पहल केवल शिक्षा के बारे में नहीं है बल्कि यह सशक्तिकरण के बारे में है।

यह प्रत्येक व्यक्ति को हमारे लोकतंत्र की नींव के बारे में जानने, अपने अधिकारों और जिम्मेदारियों को समझने तथा मजबूत और अधिक समावेशी भारत के निर्माण में सक्रिय रूप से भाग लेने का अवसर प्रदान करता है।

राष्ट्रदूत (एच.यू.एफ.) के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक सोमेश शर्मा द्वारा वतन प्रेस, सुधर्मा, एम.आई.रोड़, जयपुर एवं सुधर्मा-II, लालकोठी शॉपिंग सेंटर, टोंक रोड़, जयपुर से मुद्रित एवं प्रकाशित। संपादकः- राजेश शर्मा । आर.एन.आई. नं. 3641/57, ई-मेल-rastrdut@gmail.com कोटा कार्यालयः-पलायथा हाउस, छत्रपति शिवाजी मार्ग, कोटा। फोनः2386031, 2386032, फैक्सः0744-2386033 बीकानेर कार्यालयः-कुंभ्भाना हाउस, हनुमान हत्था, बीकानेर। फोनः2200660, फैक्सः 0151-2527371 उदयपुर कार्यालयः-आयड, मेन रोड आयड, उदयपुर। फोनः 2413092, 2418945, फैक्सः 0294-2410146 अजमेर कार्यालयः-घूघरा घाटी, जयपुर रोड,अजमेर। फोनः 2627612, फैक्सः0145-2624665 जालोर कार्यालय :- जी 1/63, इन्डस्ट्रीयल एरिया, फेस प्रथम, जालोर। फोनः 226422, 226423, फैक्सः 02973-226424 हिण्डौनसिटी कार्यालय :- जी -1-201, रीको औद्योगिक क्षेत्र, हिण्डौनसिटी। फोनः 230200, 230400, फैक्सः 07469-230600 चूरू कार्यालयः एच-150, रीको औद्योगिक क्षेत्र, चूरू, फोनः 256906, 256907, फैक्सः01562-256908